



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १ ॥

३३१ (५५)

छाणीमंडण श्रीशांतिनाथस्वामिने नमः

पूज्यपादश्रीमन्महोपाध्याय-श्रीसंकलचन्द्रजीगणिकृत-  
प्रतिष्ठाकल्प-(अञ्जनशलाकाविधि)नो  
गुजराती अनुवाद  
तथा अन्य उपयोगि विधिओ भाग पहलो

—: संयोजक - प्रकाशक :—

क्रियाविधिविधिज्ञः-शा. सोमचंदभाई हरगोविन्ददास-छाणी

द्वितीयावृत्ति प्रत  
वि० सं० २०२७

मूल्य दश रुपिया

प्रथमावृत्ति  
वि० सं० २०१२

—: मुद्रकः :—

\* अलकेश प्रिन्टरी \*

सदमातानी पोळ सामे, सांकडी शेरी,  
अमदावाद.

॥ १ ॥

# ૬ નમ્ર વિશ્વસિ ૬

૧. શુદ્ધિ પત્રક પ્રમાણે સુધારો કરી પછીજ ગ્રંથનો ઉપયોગ કરો.
૨. એકલા પુસ્તકીયા જ્ઞાનથી કોઈ કાર્ય થતું નથી ભણતર સાથે ગણતર જરૂરી છે. પ્રયોગોનું એકલું જ્ઞાન બસ નથી, પ્રયોગોનો અનુભવ પણ જરૂરી છે.

ક્રિયાવિધિનો આ ગ્રંથ છે. એની ગમે તેટલી છપાતી વિસ્તૃત સમજણ, અનુભવ વિના એકલા વગરના મીંડા બરાબર છે. એટલે ક્રિયાવિધિના અનુભવી પાસેથી પારંપારિક અનુભવ લીધા સિવાય કેવળ આ પ્રતિના વાચન માત્રથી ક્રિયાવિધિ કરવા-કરાવવામાં ઘણી જગોએ ભૂતો થઈ જવાની શક્યતા ઘણી છે. કર્મમુક્ત થવા માટે આ વિધિ-વિધાનો છે. એકલા પુસ્તક ઉપર આધાર રાખી આ ક્રિયાઓને કર્મબંધના કારણભૂત હરગીજ ન બનાવો એજ અમારી ખાસ નમ્ર વિશ્વસિ છે.



## સાદર સમર્પણ

ક્રિયાવિધિનો સાત્ત્વિક રસ લગાડનાર અને ત્યાગધર્મની મહત્તા સમજાવનાર  
ક્રિયાવિધિજ્ઞ શ્રી નગીનદાસકાકાને

અને

વ્યવહારિક કામમાંથી ફરેગ રાખી મુક્તિપંથની ક્રિયાઓમાં સહાયક થનાર  
રત્નહી બંધુઓ

શ્રી મંગળભાઈ, હીરાભાઈ તેમજ કાન્તિભાઈને—

આ ગ્રંથનું સમર્પણ કરી કૃતાર્થ થાઉં છું.

લિ. વિનીત સોમશંકર



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ४ ॥

| विषय                              | पृष्ठ |
|-----------------------------------|-------|
| प्रतिष्ठा करनार श्रावकनुं लक्षण   | २     |
| प्रतिष्ठा करावनार आचार्यनुं लक्षण | २     |
| स्नात्रना प्रकार                  | ३     |
| मंडपनुं स्वरूप                    | ३     |
| भूमिशोधन                          | ५     |
| वेदिका                            | ५     |
| दांतण आदिना मन्त्रो               | ६     |
| पहेला दिवसनो विधि                 | ६     |
| जलयात्रानुं विधान                 | ६     |
| कुंभस्थापन विधि                   | १२    |
| बीजा दिवसनो विधि                  | १५    |
| नद्यावर्त पूजन                    | १५    |
| त्रीजा दिवसनो विधि                | २४    |
| क्षेत्रपाल पूजन                   | २४    |
| दिक्पाल पूजन                      | २५    |
| भैरव पूजन                         | ३०    |
| सोळ विद्यादेवी पूजन               | ३०    |
| नवग्रह पूजन                       | ३१    |

| विषय                           | पृष्ठ |
|--------------------------------|-------|
| चोथा दिवसनो विधि               | ३६    |
| सिद्धचक्र पूजन                 | ३९    |
| पांचमो दिवस-वीसस्थानक<br>पूजन  | ४३    |
| छहो दिवस-च्यवनकल्याणक-<br>विधि | ४५    |
| इन्द्र-इन्द्रादि स्थापन        | ४६-४७ |
| गुरुपूजन                       | ४९    |
| च्यवनमन्त्र                    | ५०    |
| प्राणप्रतिष्ठा                 | ५०    |
| सातमा दिवसनो विधि              | ५३    |
| जन्मकल्याणक विधि               | ५३    |
| शुचिकरण                        | ५३    |
| सकलीकरण                        | ५४    |
| दिक्कुमारिका महोत्सव           | ५५-५६ |
| इन्द्र-इन्द्रादि महोत्सव       | ५९    |
| आठमा दिवसनो विधि               | ६३    |
| अठार अभिषेक विधि               | ६३    |

| विषय                       | पृष्ठ |
|----------------------------|-------|
| अठार स्नात्रनी औषधिनी यादी | ७५    |
| नवमा दिवसनो विधि           | ७६    |
| लेखशाला विधि               | ७६    |
| विवाह महोत्सव              | ७८    |
| राज्याभिषेक                | ७८    |
| दिक्षा महोत्सव             | ७९    |
| दशमा दिवसनो विधि           | ८१    |
| केवलज्ञान कल्याणक          | ८१    |
| १०८ अभिषेक अञ्जनविधि       | ८८-८९ |
| निर्वाण कल्याणक            | ८९    |
| विम्ब स्थापना अने दृष्टि   | ९०    |
| सकलीकरण विधि               | ९५    |
| शुचि विद्या                | ९५    |
| गुरुप बलि मंत्रवानो मन्त्र | ९६    |
| संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि   | ९६    |
| विषं परिकर प्रतिष्ठाविधि   | १०६   |
| कलशारोपण विधि              | ११०   |
| ध्वजारोपण विधि             | १११   |

॥ ४ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ५ ॥

★ प्रतिष्ठाकल्प भाग १ लाना प्रकाशनमां मन्त्रेली उदार आर्थिक सहाय ★

- १११) पंजाबी साध्वी विनयश्रीजीना प्रशिष्या पद्मलताश्रीजी म०ना पारणा निमित्ते.  
१०१) श्री चंद्रगुणाश्रीजीना पारणा निमित्ते.  
२०१) श्री प्रभासपाटण जैनसंघ.  
१०१) शाह रायचंद गुलाबचंद अच्छारी  
१०१) श्रीनवापरा जैन श्वे. मू. संघ नवापरा, ता. बोरसद.  
२५१) शा. नेमचन्द जीवणचन्द वाजीपुरा.  
१०१) शा. अमृतलाल डगडुशा शीरपुर.  
१०१) शा. नेमचन्द जीवणचन्द वाजीपुरा.  
१०१) गांधी मोहनचन्द सोमचन्द बोरसद.  
३००) श्री वर्धमानजैनआगममंदिरसंस्था सुरत.  
५००) एक सद्गृहस्थ. पू. आ. श्री. प्रतापसूरीश्वरजी म.ना उपदेशयी.

॥ ५ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।

॥ ૬ ॥

## દ્વિતીયાવૃત્તિ પ્રસંગે

મહામહોપાધ્યાય શ્રી સકલચન્દ્રજી મહારાજ કૃત પ્રતિષ્ઠાકલ્પ ભાગ ૧ લાનું પ્રકાશન વિ. સં. ૨૦૧૨માં કરેલું. ૧૫ વર્ષ બાદ આજે એની દ્વિતીયાવૃત્તિનું પ્રકાશન થઈ રહ્યું છે. સંઘમાં ચોમેરથી એની માગ છે. ઉપરાંત પ્રથમાવૃત્તિમાં રહી ગયેલી અશુદ્ધિઓનું સંમાર્જન તથા કેટલોક સુધારો જરૂરી હતો.

સં. ૨૦૨૬ ની સાલમાં છાળી મુકામે પરમપૂજ્ય સિદ્ધાંતમહોદય કર્મશાસ્ત્રરહસ્યવેદી આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય પ્રેમરીશ્વરજી મહારાજના વિદ્વાન શિષ્યરત્ન વર્ધમાનતપ ૧૦૦ ઓઢીના આરાધક પૂ. પં. શ્રી ભાનુવિજયજી મહારાજના વિદ્વાન શિષ્યરત્ન સમતાસાગર પૂ. પં. શ્રી પદ્મવિજયજી ગણિવરના શિષ્યરત્ન પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી મિત્રાનંદવિજયજી મ. આદિ ઠા. ૪ નું ચોમાસુ થયું. મને પણ સમય મળ્યો. તેઓશ્રીની વિદ્વત્તા અને અનુભવનો લાભ લઈ તેઓશ્રી સાથે વેસી વિધિપ્રપા, કલ્યાણકલિકા, ચિન્મયપ્રવેશવિધિ વગેરેના આધારે સંશોધન સંકલન કર્યું. તેઓશ્રીના સારો રસ ધરાવી અમૂલ્ય સમયનો ભોગ આપ્યો અને અલકેશ પ્રિન્ટરી વાળા સાથે મેઢાપ કરાવી આપ્યો. ગ્રન્થ છાપવાનું નક્કી થયું. પ્રેસના સંચાલક મગનભાઈ, સ્વૂવજ ઉત્સાહથી એક મહાનામાંજ પ્રત છાપી આપી.

પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય પ્રતાપસૂરીશ્વરજી મહારાજના પ્રશિષ્ય પૂ. વિદ્વાન મુનિરાજશ્રી કનકવિજયજી મહારાજે પરિશ્રમપૂર્વક અન્યાન્ય ગ્રન્થોમાં આવતા પાઠાંતરોની નોંધ કરી આપી છે. તે અમોના ફૂટનોટમાં આપી છે.

॥ ૬ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ७ ॥

पू. मुनिवर्य श्री मित्रानन्दविजय महाराजश्रीए शुद्धिपत्रक, विषयदर्शन, प्रूफ संशोधनादि तेमज जरुरी सूचन, मार्गदर्शन आप्युं छे. मोटा भागना प्रूफो पं. श्री बाबुभाइ सवचन्दभाइए तपास्या छे.

आ आवृत्ति प्रसंगे सलाहसूचन आपनार पू. आचार्य भगवंतादि मुनिवरोनो, पू. मुनिराजश्री मित्रानंद वि.म.नो पू. मुनिराजश्री कनक वि.म.नो तथा आ प्रकाशनमां आर्थिक सहाय अपावनार तथा आपनार पूज्योनो तेमज भाग्यशास्त्रीओनो आभार मानी विरमुं छुं.

लि. शा. सोमचन्द हरगोबनदास-छाणी  
सं. २०२७ जेठ वद १०

॥ ७ ॥



शुद्धि पत्रक

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८ ॥

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अशुद्ध      | शुद्ध       | पृष्ठ    | पङ्क्ति | अशुद्ध        | शुद्ध         |
|-------|---------|-------------|-------------|----------|---------|---------------|---------------|
| ९     | १३      | ह्रीं       | ह्रीं       | ७०       | ५       | सन्मत्र       | सन्मन्त्र     |
| १५    | १०      | ज्ञानेभ्यः  | ज्ञानेभ्यः  | ७३-८१-९१ | ११-२-१२ | निधौ          | निधे          |
| १७    | ३       | महामानस्ये  | महामानस्यै  | ७३       | १४      | उवज्जाय       | उवज्जाय       |
| १७    | ३       | वनायी       | वनायी       | ७४       | ११      | रभिनरै        | रभिनवैः       |
| ३२    | ८       | वा          | वा          | ७९       | २       | स्थापयेत्पट्ट | स्थापयेत्पट्ट |
| ३५    | ४       | तिष्ठ       | तिष्ठ       | ८९       | ५       | सिद्ध         | सिद्ध         |
| ३५    | १४      | उडाववा      | उडाडवा      | ९०       | १५      | नमो           | नमो०          |
| ४०    | १४      | अभ्यर्चभ्या | अभ्यर्चया   | ९१       | १       | श्रीनजि०      | श्रीजिन०      |
| ४३    | २       | यदनी        | पदनी        | ९१       | ८       | नमो           | नमो०          |
| ४३    | ६       | अर्धदानैः   | अर्धदानैः   | १००      | ४       | सायुभाय       | सायुभाय०      |
| ५४    | १       | सर्व        | सर्व        | १०३      | १३      | वलक०          | वलक०          |
| ५५    | १५      | सूतिकागृह   | सूतिकागृह   | ११०      | ३       | चैत्यवदनं     | चैत्यवन्दनं   |
| ६०    | ९       | गृहितातपत्र | गृहितातपत्र | १११      | ६       | मङ्गल०        | मङ्गल०        |
| ६९    | २       | कुंकुमादि०  | कुंकुमादि०  | ११३      | ११      | शांति         | शांति         |
| ७०    | १       | चतुर्दश     | चतुर्दश     | ११६      | ६       | वर्धन्त       | वर्धन्त       |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ९ ॥

### कुंभस्थापनना सामाननी यादी

|                          |                       |                       |                     |
|--------------------------|-----------------------|-----------------------|---------------------|
| कुंभ रातो                | श्रीफल नंग २          | वांसना जवार नंग ४     | पंच रत्ननी पोटली ३  |
| मुखड घसेली               | डांगर शेर ३           | तांबानु कोडियुं नंग १ | रोकडा रुपिया १३     |
| केशर घसेलुं              | डांगरना छालां शेर ३   | फानस नंग २. १ मोडुं   | छुटा पैसा ७०        |
| सोपारी नंग ५०            | छाणानो भूको मण ०॥     | १ नानुं               | मीढळ मरंडासींग ५    |
| पान नंग १५               | माटीनो भूको मण ०॥     | वाढी नंग १            | डाभ साथे बांधेला    |
| लीली धरो                 | नाडानो दडो त्रण तारनो | गायनुं घी शेर ५       | तास्तुं लीलुं गज ०॥ |
| फुलनी माळा तथा छुटां फूल | कंकु वाटकी            | वासक्षेप              | खाली वाडकी नंग ५    |
|                          |                       | सरावळा नंग ४          |                     |

### नंदावर्तना सामाननी यादी

|         |          |             |                |        |
|---------|----------|-------------|----------------|--------|
| पट      | पान      | श्रीफल      | रुपिया २१      | कंसार  |
| कळश १०८ | सोपारी   | केसर        | सोपारी         | करंवां |
| नाळचानो | बदाम     | घी          | वे लीला ककडा   | बांट   |
| पतासां  | नैवेद्य  | दूध         | वे पीळा ककडा   | खीर    |
| पैसा ६० | वासक्षेप | घरघडा नंग ४ | चुरमाना लाडु ७ | भात    |
|         |          | चोखा शेर ५१ | पुरी नंग ७     |        |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १० ॥

नवग्रह दश दिक्पाल अष्टमंगलना सामाननी यादी

रतांजली  
सुखड  
केशर  
वरास  
कस्तुरी  
गोरुचंदन  
चुवो  
अगर  
हिंगलोक  
मरचकंकोल  
अंवर  
वासक्षेप  
कंकु  
गायतुं दूध  
सोनाना वरख  
चंपाना फूल

जाखद  
डमरो  
मोगरो मरवो  
जायसेवंती  
राती करण  
पीळी करण  
जुइ गुलाब  
मचकुंद  
वस्त्र पीळा २  
वस्त्र रातां ३  
वस्त्र काळां ३  
वस्त्र लीलां २  
वस्त्र सफेद १४  
पंचपटो  
वस्त्र वादळी ३  
पीळी साडी

सफेद साडी  
धूप शेर ०॥  
हाथ फानस २  
वाकळा शेर ३  
गोळ धाणी लाडु नंग ५  
ममराना लाडु नंग ५  
मगनी दाळना लाडु ५  
चणानी दाळना लाडु ५  
कळीना लाडु ५  
खाजां ३ वेवर ३  
अडदनी दाळना  
लाडु ३  
काळा तळना लाडु ५  
पेंडा ७  
पान ५०  
सोपारीना ककडा

खारेकना ककडा  
कोपराना ककडा  
साकर  
सोपारी ६०  
वदाम ४०  
अखरोट ३५  
आलु ३५  
अंजीर ३५  
कमर काकडी  
केळां १०  
जायफळ ३५  
पतासां ३५  
शेरडीना ककडा  
राती सोपारी १५  
काळी सोपारी ५  
नारंगी ५

सीताफल ५  
वीजोरा ३  
जामफल ५  
श्रीफल ७  
दाडम ५ रु. २७  
कमरक पैसा ६०  
जायंती दोढ  
रुपियाभार  
तज दोढ रुपियाभार  
लविंग १ आनी  
एल्ची १ रुपियाभार  
पीस्तां चारोळी  
चोग्गा शेर ३  
पाटला नंग २०  
रकावी २०  
वाडकी २०

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ११ ॥

### स्नात्रना सामाननी यादी

|                   |               |               |             |              |
|-------------------|---------------|---------------|-------------|--------------|
| दहीं गायनुं शेर   | धूप, लीलां फळ | घंटडी         | चामर, दर्पण | रु. ३ रोकडा  |
| साकरना ककडानंग १० | श्रीफळ नंग २  | लूण माटी      | वरख, अत्तर  | छुटा पैसा ४० |
| चोखा शेर ३        | कपूरनी गोटीओ  | आरती मंगळदीवो | कळश नं. ४   | नाडुं.       |
| केशर वरास         | पेंडा नंग ५   | थाली वेलण.    | पंखा नं. २  | खाली वाडकी   |

### सिद्धचक्रपूजनना सामाननी यादी

|                    |            |             |                      |
|--------------------|------------|-------------|----------------------|
| नाळीएर गोटा नं. १० | छुटां फुल  | चोखा शे. २॥ | सिद्धचक्रजीना मांडला |
| पान नं. १०         | केशर वरास  | वासक्षेप    | माटे चोखा वि० धान्य  |
| फळ नं. १०          | धूप वरख    | रुपिया २५   | तथा रंगो.            |
| नैवेद्य नं. १०     | दूध शेर १। | पैसा ६४     |                      |

### विशस्थानकपूजनना सामाननी यादी

|                      |           |             |                    |
|----------------------|-----------|-------------|--------------------|
| नाळीएरना गोटा नं. २१ | छुटां फुल | वरख         | रुपिया ३५          |
| पान नं. २१           | केशर      | दूध शेर २॥  | पैसा ६४            |
| फळ नं. २१            | वरास      | चोखा शेर २॥ | विशस्थानकना मांडला |
| नैवेद्य नं. २१       | धूप       | वासक्षेप    | माटे चोखा तथा रंगो |

तिष्ठादि  
वेधियो।  
॥ १२ ॥

### च्यवनकल्याणकना सामाननी यादी

पाणी भरवानो नळो नं. १, दूध मण ०॥, वासक्षेप, इन्द्र इन्द्राणी माटे मुंगट तथा आभरण, गुरु पूजा माटे वस्त्र (कामळ), धर्माचार्य माटे पूजननी जोड (रेशमी), चौद स्वप्न.

### जन्मकल्याणकना सामाननी यादी

|          |            |                |               |
|----------|------------|----------------|---------------|
| चामर ८   | कळथी       | फुलना हार १००  | धूप रु. ५१    |
| दर्पण ८  | राई        | वेणी १००       | बरास पैसा १०८ |
| पंखा ८   | जव         | गजरा १००       | सुखडनुं तेल   |
| फळश ८    | सरसव       | केळनां घर ३    | अंगलुछणां     |
| झारी ८   | कांग       | वाजोठ          | रक्षा पोटली   |
| पुंजणी ८ | अडद        | सुखडनां लाकडां | रुपाना चोखा   |
| फानस ८   | वृषभ कळश २ | अरणीनुं लाकडुं | अरीठानी माळा  |
| शण       | दूध मण १   | केशर           | जवनी माळा     |

### लेखशाळाना सामाननी यादी

|           |       |            |                 |
|-----------|-------|------------|-----------------|
| स्लेट पेन | कागळ  | फाउन्टनपेन | पुस्तको विगेरे  |
| खडीया     | हॉलडर | नोटबुक     | गोल धाणा रु. २१ |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १३ ॥

### विवाहना सामाननी यादी

|                        |                   |         |         |                   |
|------------------------|-------------------|---------|---------|-------------------|
| घसेली मुखड मोटो वाडको  | नवग्रहनुं नैवेद्य | पोंखणां | रु. ५१  | वासक्षेप          |
| मरडासींग वांधेलां मीढळ | ,, नां फळ         | वाजोठ   | पैसा ५१ | धूप               |
| मेवो                   | श्रीफल            | केसर    |         | चोखंडो दीवडो      |
| चौरीमंडप               | जवारासहित वरघाडां | वराश    |         | लालकपडुं (कसुंबो) |

### राज्या-भिपेकना सामाननी यादी

|      |       |       |                      |             |
|------|-------|-------|----------------------|-------------|
| छडी, | चामर, | छत्र, | तिलक करनार कुमारिका, | भेट. रु. ५१ |
|------|-------|-------|----------------------|-------------|

### दीक्षाकल्याणकना सामाननी यादी

|               |       |       |           |      |      |
|---------------|-------|-------|-----------|------|------|
| रेशमी वस्त्र, | मुखड, | केशर, | जलनो कलश, | धूप, | फुल. |
|---------------|-------|-------|-----------|------|------|

### केवल तथा मोक्षकल्याणकना सामाननी यादी

|             |          |                    |              |           |                   |
|-------------|----------|--------------------|--------------|-----------|-------------------|
| केसर        | रु. ५१   | दहिनुं पात्र       | सोनानी वाडकी | अन्न माटे | ची                |
| धूप         | सोनामणोर | दूध                | सोनानी सळी   | ,,        | प्रवाल            |
| मुखड        |          | नवांगी सुवर्ण पूजन |              | ,,        | मध                |
| वासक्षेप    |          | वली वाकुला नैवेद्य | गुरमो        | ,,        | (साकरनी चासणी)    |
| फुल         |          | चोखा शे. ११।       | वरास         | ,,        | ३६० करियाणानो पडो |
| घीनुं पात्र |          | (गाथा भणी उळाळ्या) | कस्तूरी      | ,,        | पोंखणां           |
|             |          |                    | मोती         | ,,        |                   |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १४ ॥

नवणयोग्य नाना कलश ८  
पाणी राखवाना घडा ९  
कुंडी २  
नंदावर्तयोग्य वरवडा ४  
पोंखणाने लगता घडा ४  
शरावलां ३२  
सातधान्यना वलययोग्य कुंडां ८  
नंदावर्तयोग्य सेवनना पाटला २  
दशीवालां वस्त्र कोरा अखंड ४  
[नंदावर्तयोग्य २ विंवप्रतिष्ठायोग्य  
३ गुरुर्योग्य ४ नंदावर्त लेखकन]  
कलश सोनानो १  
" रुपाना ८  
थाल सोनानो १

### प्रतिष्ठाने लगता सामाननी यादी

अर्घ्ययोग्य सोनानी रकावी १  
सोनानां कंठण ५  
सोनानी वींटी ५  
रुपानी वाटकी २  
सोनानुं कचोडुं १  
सोनानी सळी १  
राता रंगनो मुरमो, साकर, वरास,  
कस्तूरी, मोती, मुंगीयो, चूनी, सोनुं,  
रुपुं, अन धी मेलवी अन्नन बनावुं.  
प्रियंगु कपूर गोरुचंद-दधेलीमां मूकवां  
पंचरतननी पोटलीओ-विंचनी आंग-  
लीए बांधवा-विम्ब होय तेटली.  
आरीसो १  
माइसाडी-कुमुंभी वस्त्र १

मीठळ  
मरडार्शींग  
जवनी माला  
अरीठानी माला  
धोला सरसव  
लोखंड अछेदित  
रक्षा पोदली  
सरसव  
दहीं  
अक्षत  
वो  
डाभ  
अर्घ्य राखवानुं वासण  
नाडाळडी

जिन-  
देरेक  
वस्तु  
देरेक  
विम्ब  
मांटे  
जुडी  
जेटली  
जिनविम्ब  
जुडी  
जेटली  
वस्तुओ  
लेनी.  
पुंखणां:-चाक  
वोंसरुं  
मुसल  
खैयो  
तीर  
इंडापींडी  
शरावसंपुट

प्रतिष्ठादि  
विधियो।  
॥ १५ ॥

|  |                                  |                              |                        |                 |
|--|----------------------------------|------------------------------|------------------------|-----------------|
| पोंखनार खी तथा मोड   | समुद्रफ़ीण                       | चामर ८                       | घोळो वासक्षेप .        | सुंवाळी         |
| दशांग धूप शेर ०॥   | कुआ नदी सरोवर                    | आरीसा ८                      | पीळो ,,                | लाडू            |
| गंगातुं पाणी, दरेक जातनां फुल  | वाघ वि. १०८                      | वींझणा ८                     | केसर, कपूर, कस्तुरी    | मांडा           |
| समूळ डाभ, अखंड चोखाना थाल २  | जळाशयोनां पाणी                   | कळश ८                        | लगाडेळां चोरीनां       | खीर             |
| गंगानी रेती  | घंट २                            | ३६० करीयाणानो पडो १ दीर्घी ४ | वासण ३२                | लापसो           |
| ,, माटी  | छत्र ३                           | लोटा २                       | वाजिंत्र               | मुखड घसेली जाडी |
| पहेलो वलि—लाडू मगना ५, लाडू तलना ५, लाडू चणाना ५, लाडू थुलीना ५, लाडू गोलधाणीना ५ (एम लाडू २५) |                                  |                              |                        |                 |
| कर, दही, करंयो, पुरी, पुडला, खीर, वडां, लाडवा.   |                                  |                              |                        |                 |
| बीजा वलीदान माटे—झणनां बीज, कलथी, ममूर, जव, कांग, अडद, सरसव.                                   |                                  |                              |                        |                 |
| बीजा वली माटे सातधान—शाली, जव, घउं, मग, वाल, चणा, चोळा.  |                                  |                              |                        |                 |
| बीजा वली थाटे फल—नाळीएर, सोपारी, खारेक, द्राक्ष, बदाम, अखरोट, पिस्तां, साकर,                   |                                  |                              |                        |                 |
| फलोरी, दाडम, जामफल, बीजोरां, केरी, केळां, रायण, नारंगी.  |                                  |                              |                        |                 |
| टोपरां, सर्वजातनी मुखडी  | ए रीते त्रण प्रकारना वली वाकुल   |                              | धूप माटे अगर, अगरवत्ती |                 |
| घीनो वाटक्रो १   | प्रतिष्ठा वखते राखवा             |                              | नानी ध्वजा             | २४              |
| दहीनो ,, १   | अंदर थीफल नाखेलो शेर ५नो लाडू    |                              | मोटा ध्वज              | २               |
| दधनो ,, १  | सोनानां फुल १०८, रूपानां फुल १०८ |                              | पंचवर्णी इन्द्रध्वज    | १               |



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १६ ॥

ग्रहोनी स्थापना :  
भगवानने जमणे पडखे स्थापवा

|                  |                      |                  |
|------------------|----------------------|------------------|
| ॐ नमो बुधाय<br>४ | ॐ नमः शुक्राय<br>६   | ॐ नमः सोमाय<br>२ |
| ॐ नमो गुरवे<br>५ | ॐ नमः सूर्याय<br>१   | ॐ नमो भोमाय<br>३ |
| ॐ नमः केतवे<br>९ | ॐ नमः शनैश्चराय<br>७ | ॐ नमो राहवे<br>८ |

अष्टमंगल स्थापना

|                 |               |            |                  |
|-----------------|---------------|------------|------------------|
| स्वस्तिक<br>१   | श्रीवत्स<br>२ | कुम्भ<br>३ | भद्रासन<br>४     |
| नंदावर्त्त<br>५ | वर्चमान<br>६  | दर्पण<br>७ | मत्स्ययुग्म<br>८ |

भगवाननी सन्मुख आलेखवां.

परिशिष्ट नं. ३

दिक्पालो भगवानने डावे पडखे स्थापवा

|                                 |  |                                   |
|---------------------------------|--|-----------------------------------|
| ॐ ईशानाय नमः<br>८<br>ईशानकूणे   | ॐ इन्द्राय नमः<br>१<br>पूर्वे                        | ॐ आग्नेयाय नमः<br>२<br>अग्निकूणे  |
| ॐ कुबेराय नमः<br>७<br>उत्तरदिशि | ॐ ब्रह्मणे नमः<br>ऊर्ध्वे ९<br>ॐ नागाय नमः<br>अधः १० | ॐ यमाय नमः<br>३<br>दक्षिणदिशि     |
| ॐ वायवेयाय नमः<br>वायुकूणे<br>६ | ॐ वरुणाय नमः<br>५<br>पश्चिमे                         | ॐ नैर्ऋतये नमः<br>४<br>नैर्ऋतकूणे |

॥ १६ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૧૭ ॥

પરિશિષ્ટ નં. ૪  
ગ્રહોની સ્થાપનાનો આકાર તથા ઉપકરણ:—

| નંબર | ગ્રહનામ | આકાર        | આલેખ          | દિશા         | ગોઠવણ         | કાપડ        | લાડુ                       | ફુલ                           |
|------|---------|-------------|---------------|--------------|---------------|-------------|----------------------------|-------------------------------|
| ૧    | સૂર્ય   | મંડલાકાર    | રતાંજલી       | પૂર્વસન્મુખ  | મધ્યમાં       | લાલ         | ઘઉંનાદળનો                  | લાલ કળેર                      |
| ૨    | ચંદ્ર   | ચોરસ        | સુખડ          | પશ્ચિમસન્મુખ | અગ્નિકૂળે     | ઘોઢું       | મમરાનો                     | ચંદ્રવિકાશી<br>કુમુદ વા મોગરો |
| ૩    | મંગલ    | ત્રિકોણ     | રતાંજલી       | ઉત્તરસન્મુખ  | દક્ષિણદિશામાં | લાલ         | ગોઢધાણીનો                  | જાસુદ                         |
| ૪    | બુધ     | ચાળાકાર     | સુખડ, કેસર    | દક્ષિણસન્મુખ | ઈશાનકૂળે      | લીલું       | મગનો                       | જુડ વા ચમેલી                  |
| ૫    | ગુરુ    | પાટીનાઆકારે | ગોરુચંદન      | ઉત્તરસન્મુખ  | ઉત્તરદિશામાં  | પીલું       | ચણાની દાળનો                | ચંપો                          |
| ૬    | શુક્ર   | પંચચુણ      | સુખડ          | પૂર્વસન્મુખ  | પૂર્વદિશામાં  | સફેદ        | પીસેલા ચોખાનો              | સેવંત્રાનાં                   |
| ૭    | શનિ     | ધનુષાકાર    | કસ્તુરી, ચુવો | પશ્ચિમસન્મુખ | પશ્ચિમદિશામાં | ગલીરંગજેવું | અડદ મગનો સાથે              | વાવઢનાં                       |
| ૮    | રાહુ    | સૂર્યાકાર   | કસ્તુરી, ચુવો | દક્ષિણસન્મુખ | નૈઋત્યકૂળે    | કાઢું       | અડદનો                      | મચકુંદ                        |
| ૯    | કેતુ    | ધ્વજાકાર    | યક્ષકર્દમ     | દક્ષિણસન્મુખ | વાયવ્યકૂળે    | છીંટ        | અડદ-મગ-ચણા-<br>મમરાનો સાથે | પંચરંગી                       |

સૂચના :—નવેય ગ્રહો માટે—અથેલાં, સોપારી, અક્ષત, ચંદન, ધૂપ અને દક્ષિણા એ નવ નવ લેવાં.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १८ ॥

— दिक्पालोनां उपकरण —

| नाम    | आलेखन                     | पूजन                   | फुल                 | फल            | वस्त्र | नैवेद्य | द्रव्यादि   |
|--------|---------------------------|------------------------|---------------------|---------------|--------|---------|-------------|
| इन्द्र | गोरुचंदन                  | केसर                   | चंपो                | जामफल         | पीछं   | मोतीचूर | अक्षत, पात  |
| अग्नि  | रतांजली                   | "                      | जासुद               | राती सोपारी   | रातुं  | चूरमानो | सोपारी      |
| यम     | कस्तुरी, चुओ              | कंकु                   | मरवो                | काळी सोपारी   | काळुं  | अडदनो   | तांवा ताणुं |
| नैर्ऋत | कस्तुरी                   | चुओ, सुखड              | मालती               | दाडम          | उदुं   | तलनो    | "           |
| वरुण   | कस्तुरी चुओ               | " "                    | बोलसीरी             |               |        |         |             |
| वायु   | सुखड, केसर }<br>कस्तुरी } | कस्तुरी }<br>वासुचुओ } | बोलसीरी }<br>दमणो } | दाडम          | आसमानी | मगनो    | "           |
| कुबेर  | सुखड, वरास                | सुखड, वरास             | दमणो, चंपक          | नारंगी, केळां | नीळुं  | मगनो    | "           |
| ईशान   | सुखड                      | सुखड                   | जुइ, सेवंत्रा       | बीजेरुं       | श्वेत  | वेवर    | "           |
| ब्रह्म | सुखड, कपूर                | "                      | कुमुद               | सेलडी         | "      | वेसींदळ | "           |
| नाग    | सुखड, दूध                 | "                      | सेवंत्रा            | बीजेरुं       | "      | वेवर    | "           |
|        |                           |                        | मोगरो               | उजळी वदाम     | "      | पेडा    | "           |

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૧૯ ॥

પરિશિષ્ટ નં. ૫

કુંભસ્થાપન ગીત

- ૧ ઇચ્છુ વિધ કીજે રે, ઠવણા પૂરણ કલશની, જિમ કિરિયા સીઝેરે, નિર્વિધે દિન દશની આંકની.
- ૨ નીલોંછન ઘટ રાતે વરણે પાક શુદ્ધ તે લીજે, તેહની પર આઠે મંગલ દ્રવતા ચિત્ર લખીજે ઇણું.
- ૩ તેની કંઠે ડાબ સમૂલો, રિદ્ધિ વૃદ્ધિ સંગાતે, ગેવાસુગે ગુંથી બાંધે, વિધિકારક વિધિ સાથે ઇણું.
- ૪ મંત્ર સહિત સ્વસ્તિક કુંકુમનો, છેતી મધ્યે કીજે, પંચ રતન પૂગી વળી રૂપક, સમયગુરંસ કીજે ઇણું.
- ૫ અષ્ટોત્તરશત કૂપક જલસ્યું, મહોચ્છવતું જલ ભેલો, વર્ધમાનસૂરીશ્વર લાખે, તીરથ જલ બાહુ મેલો ઇણું.
- ૬ તે જલ લઈ સૌભાગ્યવંતી, નવપદ્મ મંત્ર સંભારે, થીર સાસે કુંભક કરી જલને, પૂરે અક્ષય ધારે. ઇણું.
- ૭ ખીતાંબર શુક બહુમૂલ દાંડી, કુલમાળા પહેરાઈ, તેહની ઉપર શ્રીકૃષ્ણ યાપો, મંગલ ગીત ગવાઈ ઇણું.
- ૮ મુંદર શાક્તિનો સાર્થાયો પૂરી, યાપો ઘટ શુભ દિવસે, ચાર શરાવલાં જવારા ફેરાં, કરો સ્વસ્તિક ચઉ વિદિશે. ઇણું.
- ૯ જિનપડિમાને જમણે પાસે, દીપકચુત ઘટ ધરીએ, કુંભચક્ર નક્ષત્ર મેળવીએ. તો સવિ અશુભને હરીયે ઇણું.
- ૧૦ સ્નાત્ર અષ્ટોત્તરી જિંબપ્રવેશે જિંબ પ્રતિષ્ઠા હોવે, એ કરણીમાં મંગલરૂપે, કુંભસ્થાપન ધુરે જોવે ઇણું.
- ૧૧ દીપક અખંડને ધૂપ ત્રિકાલે, સાતે રમરણ ગણીએ, દિંસક જીવને સ્ત્રી રૂપવંતી, તસ દષ્ટિ અવગણીએ. ઇણું.
- ૧૨ મહિલ પીર નેમિસરરાણુલ. તાસ સ્તવન નવિ બણીએ, ઉપસર્ગાદિક ભાવના ટાલી મંગલ ગીતને ગણીએ. ઇણું.
- ૧૩ નરનારીને ઉલ્લસિત ભાવે, તંબોલાદિક દીજે, તે દિનથી માંડીને દસ દિન, લઘુસ્નાત્ર નિન કીજે. ઇણું.
- ૧૪ મુશાલચંદ્ર હરખે કીધી પહેલે, દિન એ કરીએ કરણી, વિધિજોગે કરી કરીને વરીએ, રંગે જિમ શિવ ધરણી. ઇણું.

\* નવકારમંત્ર

॥ ૧૯ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।

॥ ૨૦ ॥

## કુંભસ્થાપન ભાસ

( વાલોજી વાએ છે વાંચલીં એ દેશી )

|   |       |
|---|-------|
| ઢાલ—શ્રુતદેવી ચરણે નગી રે, માયું અવિચલ ઠાણ; ગિંચ પ્રતિષ્ઠા મહોન્નવે રે, મંગલકોડ કલ્યાણ. | ૧     |
| મંગલકલશની થાપનારે...એ આંકની.  |       |
| મંગલ પ્રથમ કરતાં હુએ, મંગલ સંધને સોય; મંગલ જિનવર ગિંચતે રે, મંગલ ચૈત્યને હોય.           | મં. ૨ |
| મંગલ તીર્થ સિદ્ધાયલે રે, મંગલ શ્રીગિરનાર, મંગલ આણુ અષ્ટાપદે રે, સમેતજિનર જ્યાર.         | મં. ૩ |
| દ્રવ્ય મંગલ કુંભસ્થાપનારે, ભાવ મંગલ પરિણામ, કરતાં તે રહેને સંપદા રે, સીંઝે મનવંછિત કામ. | મં. ૪ |
| પંચ કલ્યાણક જિનતણાં રે, કરણી પંચ પ્રકાર, દેવ દેવી આવકતાણી રે, કરો સદૃશ અવતાર.           | મં. ૫ |
| ચાર નિલેપે જિનવર કલા રે, જિનતણાં પંગદયાણ, અવન જન્મ દીક્ષા લાવી રે, કેવલ મુક્તિ નિદાન.   | મં. ૬ |
| ઉત્તમ કલ આવક તણે રે, ઉત્તમ કરણી એલ. લક્ષ્મી લાહો લીજીએ રે, વાંચે જિમ ધર્મ રનેલ.         | મં. ૭ |

ઢાલ ૨ (વાલમ વેલા રે આવળે એં દેશી )

|  |       |
|--|-------|
| મુચિત અંગ પાવન કરી, દરીએ તિલક પ્રભાવ રે, મદા મંગલ શુભ દારણે, મુરત શુભ કરાવ રે—મંગલ કલશની થાપના રે. |       |
| અષ્ટ મંગલ દેવ રચે, તેલના કુંભ કહેવાય રે, સુંદર અંગ મનોદર, એલવો કુંભ કરાય હો.                       | મં. ૨ |
| સોળ શણગાર સજી કરી, ઘરીએ શિયલ શું રંગ રે, પહેરાણુ સમકિત સુંદરી, દરખતણો ઉન્નરંગ રે,                  | મં. ૩ |
| નિર્મલ કુંભ જળે ભરી, ઉપર શ્રીકાળ દોડ રે, ચંદન કુમુદને શાલશું, પ્રગટે મંગલ ચોક રે.                  | મં. ૪ |
| કુમુદ સ્વરિતક ચિહ્નું દિશે, એણીપરે કુંભ બનાવ રે; ગીતગાન વાજિંત શું ચાપો, જિમ મંત્રિગક બાહુ ધાય રે. | મં. ૫ |
| સ્વરિતક શુભ પુરી કરી, જિનવર દાહિણ અંગ રે, ધૂપ દીપ ગાડુંલી કરો, નાણુ રંક શુભ રંગ રે.                | મં. ૬ |

॥ ૨૦ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૨૧ ॥

પ્રથમ પ્રતિષ્ઠા ભરતે કરી, સંધ સાથ પરીવાર રે; શેત્રુંજી ચુરત રતનને, નીરખતાં લહે ભવપાર રે. મં ૭  
સંપ્રતિ બિંબ ભરાવીયાં, સવા કોડ ઉદાર રે; ધવલિ ઉપર સોદામણાં, ધાતુ પંચાણુ હમર રે. મં ૮  
યાપના યાપણુ કારણે, મંગલ કલશ આરાધ રે; દ્રવ્ય મંગલથી સંપન્ને, ભાવ મંગલ પ્રસિદ્ધ રે. મં ૯  
સ્નાન અદ્વાઈ ત્રિકરણે, બિંબ પ્રવેશ મંડાણુ રે; દાસ દુદલભને આપણે, મંગલ કોડ કમ્પાણુ રે. મં ૧૦  
કલશ—સુકૃત કારણુ દુઃખ નિવારણુ મંગલકલશની યાપના, મનમોહન પ્રભુ પાસ એ હુઈ, મૂલ સમક્ષિત વાસના;  
સંવત (૧૮૪૧) અદાર એકતાલે વરસે, ઉત્તમ ગુર નિવાસના; દુદલભ નરભવ સદ્ગત કીધો, મંગલ કલશની યાપના. ૧

### પ્રભુ પોંખણાના ગીતો

( ભરત નૃપ ભાવ શું એ રાગ )

શ્રી જિતરાજને પોંખવા એ, આવે આવે રૌયરનો સાથ, જિણુંદને પોંખવાએ ગાવે ગાવે સોદાગણુ નાર જિણું એ રેક.  
ધ્વજ પૂજન અધિકૃતમાં એ, કરો સામધ્યામાં સાર જિં વલી વરધોડામાં સાર જિં ૧  
ઈડી પિંડી ધૂસરને મૂસલ એ, રવૈયા સંપુટ કરાય જિં મંગલદ્રવ્ય કરે પુંખણોએ. સંધને મંગળ ધાય. જિં ૨  
પૂર્વે ઇન્દ્રાણીએ પોંખવા એ, વિધિ વિનય એક તાર જિં હેતુ ગુર ગમ ધારીએ એ, દાગવા કર્મ સંભાર જિં ૩  
કુંકુમ અક્ષત વધાવીયાએ, મોતીએ તે મોડ ધરાય જિં સુંદરી શિર ધરી ઘાટડીએ, લગી લગી પ્રણમે પાવ. જિં ૪  
કરણી એ ભરણી પુણ્યનીએ, મલી મલી વનિતા જંદ જિં કરશે તરશે અનુક્રમે એ, એમ કહે ખીમચંદ જિં ૫

### ગીત ૨

છરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને રે, છરે શી કરી કરણી તમે એહ; પ્રભુને કેમ પોંખાયા એ.  
છરે અમે તેમાં સમજ્યા નહીં રે, છરે કારણુ દાખવો તેહ; પ્રભુને કેમ પોંખાયા એ. ૧

|                                   |                               |                         |   |
|-----------------------------------|-------------------------------|-------------------------|---|
| જીરે પહેલું તે ધોંસરું આદ્યું રે, | જીરે ધોંસરું ગાડલે હોય;       | પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો. |   |
| જીરે સંસારે ધોંસરું નાખીયું રે,   | જીરે સંસારથી પાર પામે સોય;    | ધોંસરે જોમ પોંખીયા જો   | ૨ |
| જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને રે,  | જીરે મુસલ જાંડણીજો હોય;       | પ્રભુને કેમ પોંખીયા જો. |   |
| જીરે મુસલે તંદુલ કાઢીયે રે,       | જીરે સંસારથી જલ્લું કાઢે જોય; | પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો. | ૩ |
| જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને, રે, | જીરે રવૈયે જોળીજો હોય;        | પ્રભુને કેમ પોંખીયા જો. |   |
| જીરે રવૈયે માંખણ નીપજે રે;        | જીરે સંસાર સાણુરસ હોય;        | પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો. | ૪ |
| જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને, રે; | જીરે યત્રાક તે રંટીજો હોય;    | ત્રાકે કેમ પોંખીયા જો.  |   |
| જીરે ત્રાકે સૂતર નીપજે રે,        | જીરે સંસારથી અર્થ કાઢે ધોય;   | ત્રાકે જોમ પોંખીયા જો   | ૫ |
| જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને રે,  | જીરે પસરીયો કુંડાને હોય;      | સરીયે કેમ પોંખીયા જો.   |   |
| જીરે સરીયાથી વસ્તુ સહુ નીપજે રે,  | જીરે મંગલ ધર્મથી જોમ;         | સરીયે જોમ પોંખીયા જો.   | ૬ |
| જીરે પાંચ મંગળ જોમ પરવડાં રે,     | જીરે આદરે સઘળા લોક;           | પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો. |   |
| જીરે તેહ કારણ ધહાં કરું રે,       | જીરે શું જાણે દેવતા લોક;      | પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો. | ૭ |

### લગ્નનાં ગીત ૧

|                                       |   |                              |
|---------------------------------------|---|------------------------------|
| આંજો આનંદ છે અપાર રે.....સાજનીયા લોકો | વરધોડે શોભા અપરંપાર રે.....સાજનીયા લોકો |                              |
| વરધોડા મારા મહાવીરનો સાં              | નિશલાના હૈયા કેરા હીરનો સાં             | માંડવડે કદલી મંડપ ઘાલીયા સાં |
| માંડવડે સાજનીયાછે મહાલીયા સાં         | ઇન્દ્ર ઇન્દ્રાણી આવ્યા સાથમાં સાં       | વેવાણને પૂછે વાતવાતમાં સાં   |
| જોવી તે કરણી પરભવ શી કરી સાં          | પોંખ્યા તે પ્રભુજી પ્રેમે કરી સાં       | પરભવ સેવ્યાતા સાધુ સંતને સાં |
| પુન્યેથી પોંખું છું ભગવંતને સાં       | પહેલા મંગળે મોતી વેરીયાં સાં            | બીજા મંગળે રત્નો દોળીયાં સાં |

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।  
॥ ૨૩ ॥

ત્રીજે મંગળ ગજ યોડા પાલખી સાં      ત્રીયે મંગળે બેઠા મહારથી સાં      ફૂલડાં ગુથેલી લાવેા માળ રે સાં  
પ્રભુજી સોદાવે છે સંસાર રે સાં      મોતી માણેક ઉપર વારણું સાં      પ્રભુજીનાં પૂજન કરાવશું સાં  
પ્રમુનાં પીનાગર જાગે કોરથી સાં      પદ્મવિજય ગાવે મંગળ જોરથી સાં      વરધોડે શોભા અપરંપાર રે...સાં

૨ (લાવણી)

મારા જનમ જનમના જોગી પ્રભુજી આર્યાવર્ત અવતરીયા, મારા વીર મહાવીર યોગી, પ્રભુજી આર્યાવર્ત અવતરીયા ૧  
પિતૃયજ્ઞ ને અતિવિવેકી, જાગપણું મન દરતું જોયી; મારા નિર્ગુણને નિરજોગી, પ્રભુજી આર્યાવર્ત અવતરીયા ૨  
નિરાકાર સાકાર બન્યા બન્યા, આદિનાથ અનંત બન્યા બન્યા; મારા ભાવતણા સોભાગી, પ્રભુજી આર્યાવર્ત અવતરીયા ૩  
સકળ શાસ્ત્રની વિદ્યા વરીયા, મંગળ ફેરા મહાવીર વરીયા; ત્રીજી શૃદ્ધરાશ્રમના યોગી, પ્રભુજી વિરલપંથ પરવરીયા ૪  
કેવલજ્ઞાન કમ્પાણ્યક યાતાં, ભવનાં બંધન છુટી જતાં; જાગે ધીરવિજય સંયોગી, મુખડાં મહાવીરનાં મળીયાં ૫

૩

|                                |                            |
|--------------------------------|----------------------------|
| વેવાણુ ઉઠ તું પહેલી ઉંધ તથ,    | વર આપ્યો છે તોરણ આજ સથ.    |
| ઢોઇ જાણુ કરો પીજાણુ કરો,       | તમ પગલાં આવીને બહાર ધરો.   |
| વેવાણુ લાવજોરે તુંતો કંક પડો,  | તારે આંગણે ત્રિશલા લાડકડો. |
| વેવાણુ લાવજોરે તુંતો સોપારી,   | તારે આંગણે આપ્યો અવતારી.   |
| વેવાણુ લાવજોરે તુંતો કંકાવડી,  | તારે આંગણે આપ્યો નાણાવડી.  |
| વેવાણુ લેજોરે તુંતો દહાવો ધણો, | તારે બારણે અવસર વિવાહ તણો. |
| અગને ઉર્ધ્વા પછીરે વાર ચર્ધ,   | વેવાણુને ખગર કંડો ઢોઇ જાણ. |

॥ ૨૩ ॥





## પૂર્વ ઇતિહાસ



આજથી ચાર સૈકા પૂર્વેનો એ ઇતિહાસ છે. ત્યારે સંસ્કૃત સાહિત્યનો સુવર્ણયુગ હતો. જૈનધર્મનો ઝળહળતો એ કાળ હતો. અંજનશલાકા, પ્રતિષ્ઠા, શાન્તિરનાત્ર વિગેરે ઘણાં વિધિ-વિધાનો થતાં હતાં. પ્રતિષ્ઠાકર્યો પણ ઘણાના હતા. પૂ. શ્રી હરિભદ્રસંસ્કૃત, હંમચંદ્રસંસ્કૃત; વાદિવેતાલ શ્રી શાન્તિસંસ્કૃત, તિલકાચાર્યકૃત, માનતુંગસંસ્કૃત આદિ અનેક કર્યો હતા. વ્યક્તિ-વિશેષતાએ દરેકમાં થોડો ફેરફાર હતો. ધીમે ધીમે આ મોટા કર્યોનું સ્થાન ઓછું થતું ચાલ્યું અને સુખોદા (ચાન્ડીય) સમાચારીમાં આવતી સંક્ષિપ્ત અંજનશલાકાવિધિનો ઉપયોગ થવા લાગ્યો. આમ સાદુ જુદા જુદા કર્યો પ્રમાણે વિધિ-વિધાનો કરતા હતા. આ યુગનો સમન્વય જરૂરી હતો જ અને તે કામ કર્યું મહોપાધ્યાય શ્રીમત્સકલચંદ્રજી ગણિવરે. પૂર્વાચાર્યોની કૃતિઓનો આધાર લઈ તેઓ-શ્રીએ એક સળંગ પ્રતિષ્ઠાકર્યની બેટ ધરી. આજ નાણુ નાણુ સત્તાષ્ટિ જવા છતાં પણ એ ગ્રંથ હતો પ્રચારમાં છે. અર્ધિં ને કે સંસ્કૃત ભાષાનો નિયમ ચૂકાય છે, પરંતુ ઉર્મિને અને ભાષા નિયમનને યાદુ ઓછું અને છે. એવી કૃતિઓ હોય તોય યાદુ અસ્થ જ છે. તેઓશ્રીનો આ ગ્રંથ ઉર્મિપ્રધાન અને રસપ્રદ છે. આ ગ્રંથ કયા સમયમાં અને સ્થળમાં ગન્યો તેની ચોક્કસ વિગત મળી આવતી નથી. પણ તેઓશ્રીની સત્તરબેદી પૂજા માટે લોક-કહેતી કંઈક એવી છે કે—સત્તરમા શેકનો એ સમય હતો, પૂજ્યશ્રીનું ચાતુર્માસ ત્યારે કપડવંજમાં હતું. ઉપાધ્યયની નજરેક એક કુંભારનું ઘર હતું. તેને ત્યાં ગમેડા હતાં. આ ગમેડાં રાજ નિયમિત ટાઇમે ભૂંકતાં. પૂજ્ય ગુરૂવર્યે ગમેડાને અનુવક્ષીને એક વખત કાલિસંગ કર્યો—“ગમેડા બૂકે ત્યાં સુધી કાલિસંગ” સાડા નાણુ દિવસ આ કાલિસંગ રહ્યો આ ધ્યાનમાં તેઓશ્રીએ રાગ-રાગણીમય પૂજ્યોની રચના કરી જેનો આજે પણ પ્રચાર છે. આ ગ્રંથ પણ આવી જ કોઈ ધ્યાનરથ દશામાં ગન્યો છે એમ કેટલાક પૂજ્ય પુરૂષોનું માનવું છે. આવા ભાવના પ્રધાન ગ્રંથનો ભાષાની દૃષ્ટિએ ફેરફાર ને સુદ્ધિ કરતાં મૂળ ભાવનાજ વિદ્યુત ગતી જવા સંભવ છે; આથી અનેક વિચારો કર્યા યાદ તેમજ અનેકના મંતવ્યો લીધા યાદ તેમની ભાષામાં જ રહેવા દીધો છે.

प्रतिष्ठादि  
विधिभिः ।

॥ १ ॥

नं. १ जिनमुद्रा

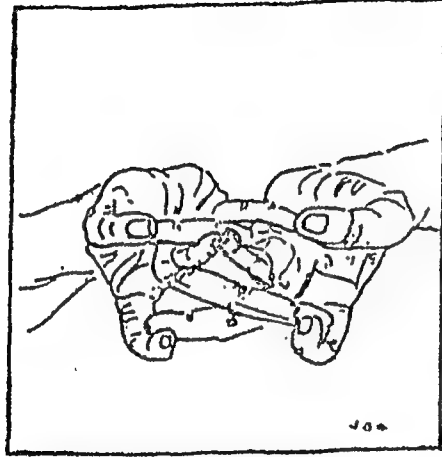


॥ १ ॥

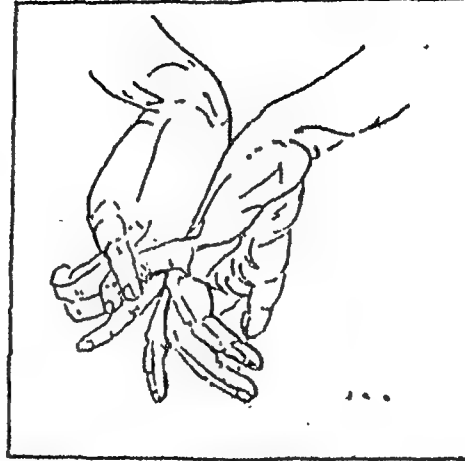
प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ २ ॥

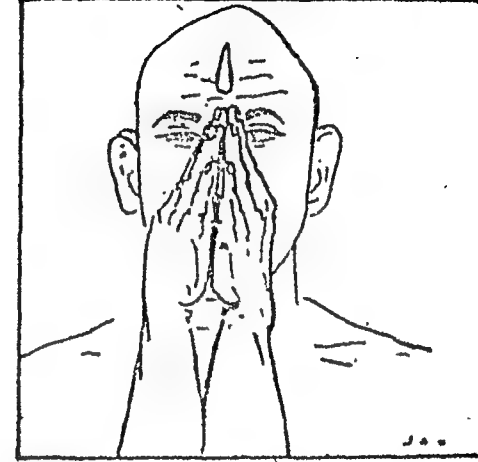
नं. २ परमेष्ठि मुद्रा



नं. ३ गरुड मुद्रा



नं. ४ मुक्ताशुक्ति मुद्रा



- २ उत्तानहस्तद्वयेन वेणीवन्धं विधायाङ्गुष्ठाभ्यां कनिष्ठे, तर्जनीभ्यां मध्यमे संगृह्य अनामिके समीकुर्यादिति परमेष्ठिमुद्रा ॥  
३ आत्मनोऽभिमुख-दक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिकां संगृह्याधःपरावर्त्तितहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ॥  
४ मुक्ताशुक्तिमुद्रा जत्थ समा दोवि गन्धिया हत्था । ते पुण निलाडदेसे, लगा अन्ने अलगति मुक्ताशुक्तिमुद्रा ॥

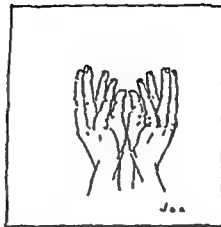
प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ३ ॥

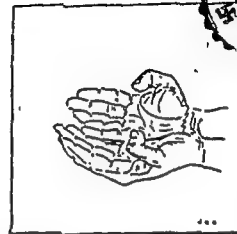
नं. ५ धेनु मुद्रा



नं. ६ पद्म मुद्रा



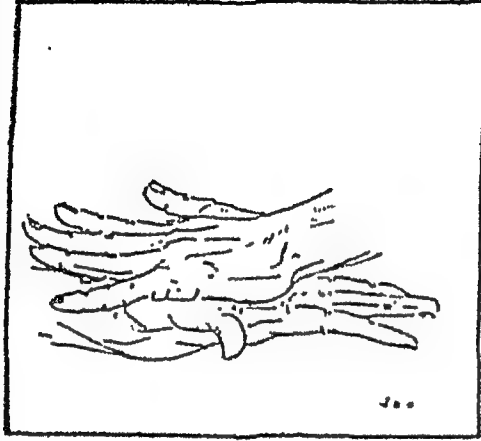
नं. ७ अंजली मुद्रा



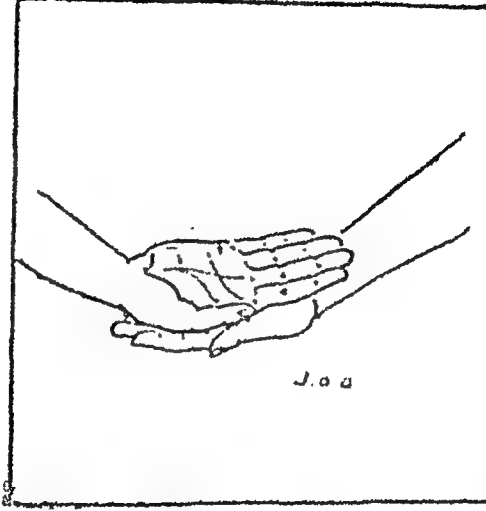
- ५ अन्योऽन्यप्रथिताङ्गुलीषु कनिष्ठानामिकयोः मध्यमातर्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकारो धेनुमुद्रा (मुरगमुद्रा) ॥  
६ पद्माकारो करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुली कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति पद्ममुद्रा ॥  
७ उत्तानौ किञ्चिदन्वितकरशाखौ पाणी विधाय धारयेदिति अंजलिमुद्रा ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिगो।  
॥ ४ ॥

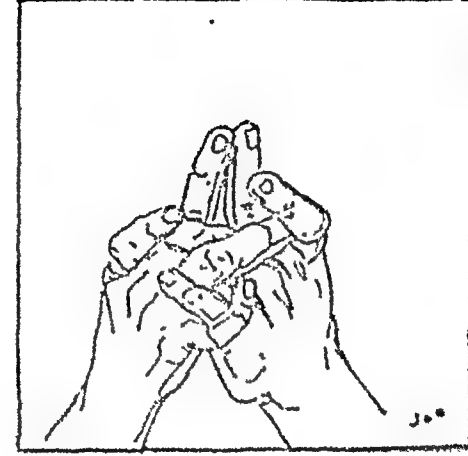
नं. ८ चक्र मुद्रा



नं. ९ आसन मुद्रा



नं. १० सौभाग्य मुद्रा

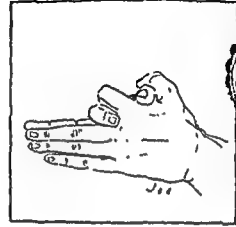
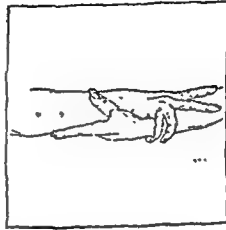
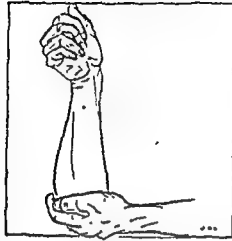


- ८ वामहस्ततले दक्षिणहस्तपूलं निवेद्य करशालां विरलीकृत्य प्रसारयेदिति चक्रमुद्रा ॥  
९ हस्तेलिकोपरि हस्तेलिका कार्या इति आसनमुद्रा ॥  
१० परस्पराभिमुखौ प्रथिताङ्गुलिकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यां अनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्याङ्गुलद्वयं  
निक्षिपेदिति सौभाग्यमुद्रा ॥

नं. ११ मुद्गर मुद्रा

नं. १२ वज्र मुद्रा

नं. १३ प्रवचन मुद्रा



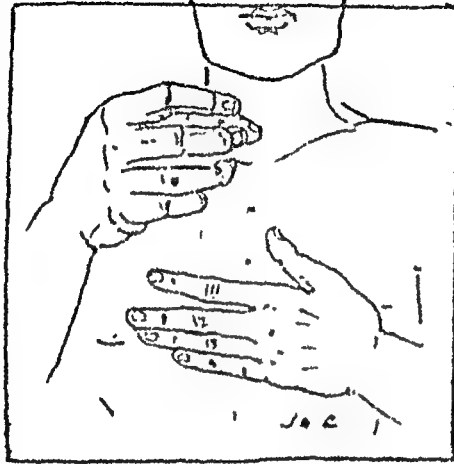
११ तिर्यक्कृतवामहस्तोपरि उर्ध्वाकृतदक्षिणकरः मुद्गरमुद्रा ॥

१२ वामहस्तस्योपरि दक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्यां मणिवन्धं वेष्टयित्वा शेषाङ्गुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा ॥

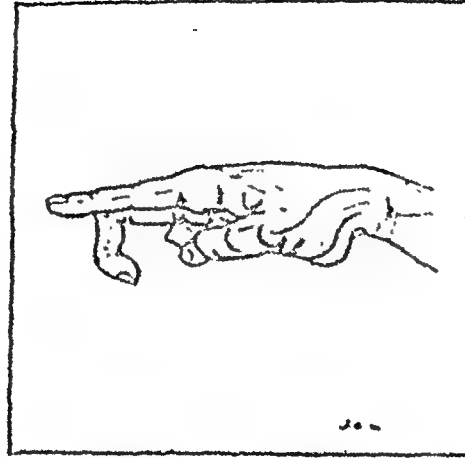
१३ अङ्गुलीत्रिकं सरलीकृत्य तर्जन्यङ्गुष्ठौ मेलयित्वा हृदयाग्रे धारयेदिति प्रवचनमुद्रा ॥

प्रतिष्ठादि  
विधियो ।  
॥ ६ ॥

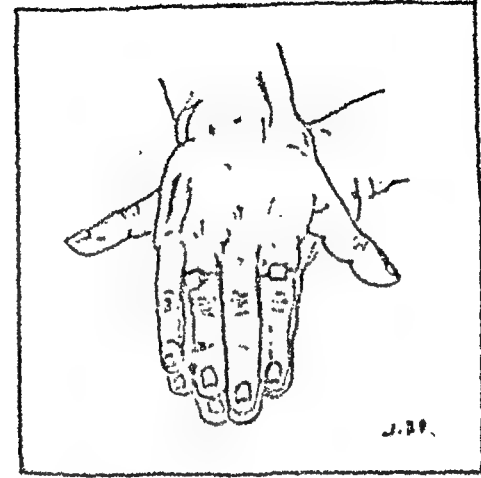
नं. १४ गणधर मुद्रा



नं. १५ अंकुश मुद्रा



नं. १६ मीन मुद्रा



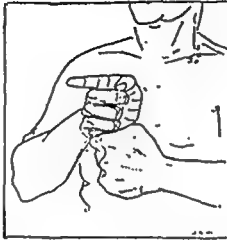
- १४ यत्र दक्षिणहस्तो हृदयसन्निहितो मालान्वितः, वामभुजश्च तिरश्चीनः, सा गणधरमुद्रा ॥  
१५ दक्षिणहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य मध्यमाया इषद्वक्करणे अङ्कुशमुद्रा ॥  
१६ वामहस्तपृष्ठोपरि दक्षिणहस्ततलं निवेश्याङ्गुष्ठद्वयचालनेन मीनमुद्रा ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ७ ॥

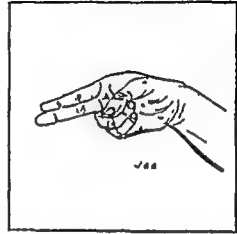
नं. १७ कूर्म मुद्रा



नं. १८ तर्जनी मुद्रा



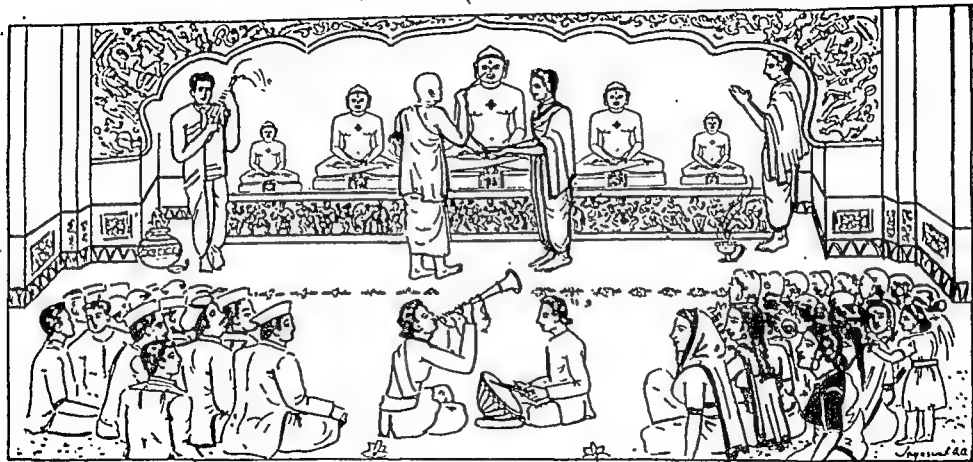
नं. १९ अक्ष मुद्रा



- १७ वामहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुल्युपरि दक्षिणहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुलीस्थापनेन द्वयोर्हस्तयोश्चाङ्गुष्ठकनिष्ठिकाश्चाङ्गुलीया इति कूर्ममुद्रा ।  
१८ वामकरस्संहताङ्गुलिर्हृदयाग्रे निवेश्योपरि दक्षिणकरेण मुष्टिं च्छ्वा तर्जनीमुर्ध्वोक्त्यादिति तर्जनीमुद्रा ॥  
१९ दक्षिणमुष्टिं दक्ष्वा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति अक्षमुद्रा ॥







॥ केवलज्ञानकल्याणक-अंजनक्रिया ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १ ॥

ॐ

॥ नमो जिष्णुं ॥

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमोनमः

॥ अनन्तलब्धिनिधानश्रीगौतमगणधरेभ्यो नमोनमः ॥

पूज्यपादश्रीमन्महोपाध्याय-श्रीसकलचन्द्रजीगणिकृत-  
प्रतिष्ठाकल्प-(अञ्जनशलाकाविधि)नो  
गुजराती अनुवाद  
तथा अन्य उपयोगि विधिओ भाग पहलो

॥ १ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।

॥ ૨ ॥

પ્રણમ્ય શ્રીમહાવીરં, લબ્ધસામગ્રીસંયુતમ્ । જિનવિમ્બસ્ય પ્રતિષ્ઠા-પૂજાં વક્ષ્યે વિધાનતઃ ॥૧॥

અતિશયાદિ સામગ્રીયુક્ત શ્રીમહાવીરપરમાત્માને નમસ્કાર કરીને શ્રીજિનવિંબની પ્રતિષ્ઠા અને પૂજાનું  
વિધાન કહીશ.

પ્રતિષ્ઠા કરનાર શ્રાવકનું લક્ષણ:—

વિનીત, બુદ્ધિમાન, પ્રીતિવાળો, ન્યાયોપાર્જિતધનવાળો, ચારિત્રશીલ, દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાલ-માવનો રહ્યાલ  
રાખનારો, માયા-મમતા વિનાનો, શુદ્ધ મનવાળો, શ્રદ્ધાલુ શ્રાવક ત્રૈલોક્યપૂજ્ય જિનવિમ્બની પ્રતિષ્ઠા કરવાની  
યોગ્યતાવાળો છે. ॥૨॥૩॥

પ્રતિષ્ઠા કરાવનાર આચાર્યનું લક્ષણ:—

દર્શન-જ્ઞાન ચારિત્રયુક્ત, નિષ્પરિગ્રહી, મહાપ્રભાવક આચાર્ય પ્રતિષ્ઠા કરવાની યોગ્યતાવાળા છે. ॥૪॥

જે ચારિત્રશીલ માણસે ન્યાયોપાર્જિત દ્રવ્યથી મોક્ષના ધ્યેય માટે જિનપ્રતિમા કરાવેલ છે; તે માણસ  
દેવ દેવેન્દ્રો અને માનવેન્દ્રોથી પૂજિત તીર્થંકર પદને ભોગવે છે, તેમજ તેણે જિનેશ્વરની આજ્ઞા માનવાપૂર્વક  
પોતાનો જન્મ સાર્થક કરીને પોતાના કુલને ઉજ્જ્વલ કર્યું છે. ॥૫॥

જે માણસ વીતરાગ-જિનની પ્રતિમા કરાવે છે, તે પરલોકમાં સુખકારક ધર્મરત્ન પ્રાપ્ત કરે છે. ॥૬॥૭॥

જે માણસ ઋષભદેવાદિ વર્તમાન ચોવીશીના કોઈપણ તીર્થંકર પરમાત્માની અંગુઠા માત્ર પ્રમાણની પણ  
પ્રતિમા ભરાવે છે, તે દીર્ઘકાલ સુધી ઝંચા પ્રકારનાં સ્વર્ગમુક્ત ભોગવી મોક્ષસુખ મેળવે છે. ॥૮॥

॥ ૨ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.

॥ ૩ ॥

મહિનાથ, નેમિનાથ અને મહાવીરસ્વામી કેવલ વૈરાગ્યપ્રેરક હોવાથી ચૈત્યમાં સ્થાપવા પણ ઘરમાં સ્થાપન કરેલા શુભોત્પાદક નથી. ॥૯॥

સાક્ષીપાઠ—

\*મહિ-નેમિ-વીરા, જિણભવણે સાવણ પૂજાઈ । ઇગ્વીસં તિત્થગરા, સંતિગરા પૂડ્યા વંદે ॥(મેહે) ॥૧॥

ધર્મકર્મના ઝંડાણને સમજનારાઓ મોક્ષસુખમાં કારણભૂત, દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રના નિશ્ચયરૂપ અને શુદ્ધધ્યાનરૂપ અગ્નિથી કર્મકાષ્ઠને ઘાઁલી નાખનાર સર્વ જિનેન્દ્રોનાં પ્રતિષ્ઠાપૂર્વક અભિષેકાદિ તમામ કાર્યો મહોત્સવપૂર્વક કરવાં, તે અભિષેકાદિ કાર્યો કે પ્રકારે છે—૧ નિત્ય અને ૨ નૈમિત્તિક. ॥૧૦॥૧૧॥

૧ જિનેશ્વરોનું નિત્યસ્નાત્ર-લોકોને પરલોકમાં હિતકર છે. ॥૧૨॥

૨ નૈમિત્તિક સ્નાત્ર-સર્વલોકોને આ લોક અને પરલોકમાં સુખ આપનાર છે. ॥૧૩॥

મંડપનું સ્વરૂપ:—

નિર્મલ, વિસ્તીર્ણ અને શ્રેષ્ઠ વેદિકાયુક્ત તોરણવાળો, લટકતી ફૂલની માળાઓવાળો, ચાર દ્વારવાળો, વિધવિધ વાર્જિત્રોના શબ્દોથી ભરપૂર અને મંગલગીતોથી યુક્ત મંડપ કરાવવો ॥૧૪॥૧૫॥

મળપનું માપ નિર્વાણકલિકામાંથી જોઈ લેવું.

\*મહિ-નેમિ-વીરા, જિણભવણે શ્રાવણે પૂજાયે । પદ્મવિશતિસ્તીર્થકરાઃ, શાન્તિકરાઃ પૂજિતા વન્દે (ગૃહે) ॥૧॥

॥ ૩ ॥

ચાર खुणावाळा ऋण हाथना मंडपमां वेदिका करी स्नात्र माटे श्री जिनेश्वरनी प्रतिमानी स्थापना करवी. ॥१६॥

दशे दिशाओमां दिक्पालो तथा आदित्यादि नव ग्रहो कल्पवा. ॥१७॥

खुणाओमां चार वेदिका छत्र सिंहासनयुक्त (कल्पी) करावी, इन्द्र सर्व कार्य करे. ॥१८॥

निर्मल अने शुद्ध प्रतिमा विधिपूर्वक लावीने, महोत्सव पूर्वक इन्द्रपणुं कल्पवुं ॥१९॥

पछी प्रतिमानी उत्तम जातिनां सुगंधी पत्र-पुष्प-जलथी पूजा करवी, ते प्रतिमा सन्मुख विशुद्धिने माटे मूल मन्त्रनो उच्चारण पूर्वक १०८ वार जाप करवो. ॥२०॥२१॥

मन्त्र:-ॐ अर्हं नमो अरिहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयंसंबुद्धाणं, ॐ अर्हं नमो पारगयाणं ॥

पछी तेनी वहार पूर्वादि दिशाओमां अनुक्रमे प्रसिद्ध-१ जया २ अजिता ३ विजया अने ४ अपराजिता नामनी विद्याओ तेमज शासनदेवी, यक्ष, शक्र अने मङ्गलनी स्थापना करवी. ॥२२॥

त्यारवाद कळश स्थापीने 'शान्तिघोषणा' करतां स्वस्तिक आलेखवो पछी साक्षात् मन्त्रोच्चारपूर्वक पुष्पांजली करवी. तथा जिनेश्वर प्रभु तेमज सर्वे देवोने तैयार करवा, पछी १०८ मुद्रानी किंमतना-कंकोल, पुष्प, कपूर, अगर अने चंदनथी श्रीजिनेश्वर प्रभुना विंवने स्नान कराववुं. पछी गीत वार्जित्र करवां. पछी जिनेश्वर परमात्माना अतिशयो याद करवा पूर्वक तीर्थजळथी स्नान करवुं. पछी प्रदक्षिणा-पूजा अने देववंदन करी विंवने वासक्षेप करवो अने शलाका [सळी]थी अंजन करवुं. पछी भक्तिपूर्वक ध्वज, चामर, छत्र विंगेरे

ઘરવાં. પછી સર્વ અંગે સ્પર્શ કરી ઉત્તમ નૈવેદ્ય ઘરવાં. આ રીતે શ્રીઅરિહંત ભગવંતની પૂજા કરી સિદ્ધ મહર્ષિઓ અને શ્રાવકોને શાન્તિ તુષ્ટિ-પુષ્ટિ આશિષ આપવી. ૨૩૧૨૪૧૨૫૧૨૬૧૨૭૧૨૮૧૨૯।

પછી આમન્ત્રેલા સર્વેને વિસર્જન કરી વિવપ્રતિષ્ઠા કરી ગુરુપ શાન્તિપાઠ ચોલવો. તેમાં પહેલાં વૈદ્યત, વ્યતિપાંત વિ. છોડી દેવા પૂર્વક ઉત્તમ મુદ્ધર્ત જોવું. ॥૩૦।૩૧।

ત્યારબાદ ભૂમિશોધન કરવું તે નીચે પ્રમાણે:—

૧૦૮ હાથ પ્રમાણનું “મદ્ગલગૃહ” કરવું. પછી ઘરમાં તેમજ જિનાલયમાં સુવર્ણજલ લાવી નવકાર ગણી શ્રી શાન્તિનાથ અને પાર્શ્વનાથ ભગવાનનું નામ લેવા પૂર્વક “ૐ હ્રીં અર્હં ભૂર્ભુવઃ સ્વધાયૈ(ય) સ્વાહા” એ મન્ત્રાક્ષરે સાત વાર મન્ત્રી છાંટવું. ઘરમાં તો તે પુષ્પ, અક્ષત અને ચંદન સહિત પળ છંટાય છે. પછી ત્યાં સ્વસ્તિકા કરીને દીપક તથા ધૂપ કરવો.

ત્યારબાદ વેદિકા કરવી તે નીચે પ્રમાણે:—

(વિશેષ માપ નિર્વાણકલિકામાંથી જોડ લેવું)

ચાર સુળાવાળી, ત્રણ હાથ લાંબી પહોળી અને દોઢ હાથ ઝંચી કાપ્ડથી જડેલી વેદિકાને વાંસના મંડપ તથા તોરણોથી સુશોભિત કરવી તથા તેમાં પંચરત્નની પોટલી મૂકવી.

૧. પંચરત્ન-સોનું, રૂપું, મોતી પરચાલાં અને તાંબું.



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६ ॥

प्रतिष्ठाना मुहूर्त पहलां दश दिवस सुधी प्रतिष्ठा करनारे एकाशन आदि तप करवो तथा ब्रह्मचर्य पाळवुं.  
दातण करतां बोलातो मन्त्रः—ॐ ह्रीं यक्षाधिपतये नमः ॥

मुख साफ करतां बोलवानो मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाधिपतये ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा ॥

अग्निमन्त्रः—ॐ ह्रीं र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रंरः ज्वालामालिनि अग्निर्गन्धं अग्निः संस्थं कुरु कुरु स्वाहा ॥

जलमन्त्रः—ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥

स्नानमन्त्रः—ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ॥

वस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्रीं आं क्रौं नमः ॥

तिलकमन्त्रः—ॐ आं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥

पहेला दिवसनो मन्त्रविधिः—

जलयात्रानुं विधान करवुं. (जलयात्रानां उपकरणो माटे परिशिष्ट १ लामां जोवुं) प्रथम महोत्सवपूर्वक चतुर्विध संघ सहित पवित्र जलाशये जवुं. त्यां विधिपूर्वक १स्नात्र भणाववुं, शान्तिकलश भणवो. पछी मालो-  
दघाटन करवुं.

पछी गंध, पुष्प, धूप तथा नैवेद्य, २ बलिदान विगेरेथी प्रतिमा, दिक्पाल तथा नवग्रहोनुं पूजन करवुं.

१ भूमिशुद्धिमन्त्र पीठस्थापनमन्त्र जलशुद्धि ॐ आपोऽष्काया एकेन्द्रिया जीवा, नवग्रह वासक्षेममन्त्रः आच-  
मनमस्तु गन्धोस्तु इत्यादि प प्रमाणे दिक्पालमन्त्रदिनकरे ।

२ बलिमन्त्र-गाथा ॐ भवणवद्वाण०

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ७ ॥

त्यारवाद दर्शन-ज्ञान-चारित्र्यं पूजन करी आरति-मङ्गलार्वाचन करवो. त्यारवाद चैत्यवन्दन करवुं ते नीचे प्रमाणे:-  
प्रथम चैत्यवन्दन करी श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सगं वंदणवत्तियाए-अन्नत्थ १ लोगस्सनो  
काउस्सग करी नमो० कही नीचेनी स्तुति वोळवी:-

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, मुशान्तिदाः सन्तु सन्ति जने ॥१॥

पछी श्रीद्वादशाङ्गी आराधनार्थं करेमि काउ० वंदण० अन्नत्थ० कही १ नवकारनो काउस्सग करी पारी  
नमो० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहा-तमोपद्वा द्वादशाङ्गी वः ॥२॥

पछी “श्री शान्तिदेवयाए करेमि काउ०” विगेरे कही:-

श्रीचतुर्विधसङ्घस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥३॥

पछी “शासनदेवयाए करेमि काउ०” विगेरे कही:-

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥४॥

१. चैत्यवन्दन नमुत्थुणं अरिहंतचेइयाणं एक नवकारनो काउ० पारी नमो० कही अर्हं स्तनोतु स श्रेयः इत्यादि  
घण थोय कहेवी. चोथी थोय श्रीशान्तिःथी वोळवुं. इति विम्बप्रवेशविधौ.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८ ॥

पछी “खित्तदेवयाए करेमि काउ० वि. कही:-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥५॥

पछी अच्छुतादेवीए करेमि काउ० वि. कही:-

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या-च्छुप्ता तुरगवाहना ॥६॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणां इत्यादि पाठ कही करेमि काउ० वि. कही :-

संवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिवे सुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिवद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥७॥

पछी जलदेवयाए करेमि काउ० वि. कही :-

मकरासनसमासीनः, कुलिशाङ्कुकशचक्रपाशपाणिशयः ।

आशामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः ॥ ८ ॥ पछी

करोतु शान्तिं जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।

आदास्यतो वा मम वारि तत्कृते, असन्नचित्ता प्रदिशत्वनुज्ञाम् ॥ ९ ॥

आ जलदेवतानी प्रार्थनानो श्लोक बोलवो पछी १ नवकार कही नमुत्थुणं थी जयवीरराय सुधी कहेवुं.  
स्तवन ॐ मिति नमो भगवओ०

॥ ८ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ ९ ॥

पछी कुचाकांठे जइ करवानो विधि:-

मन्त्र युक्त वास कुंकुम अने चंदनना छांटा नाखवा तयारवाद नीचेना मन्त्रथी त्रण वार आचमन करवुं.

ॐ गुरुतत्त्वाय नमः, ॐ [अर्हं] आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा, ह्रां पार्थतत्त्वाय स्वाहा,

ॐ मुक्ति.तत्त्वाय स्वाहा. आ मन्त्रो त्रणवार बोली आचमन करवुं.

तयारवाद अङ्गन्यास करवो ते नीचे प्रमाणे:-

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रीं शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ह्रीं वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा,

ॐ ह्रीं नमो आपरियाणं ह्रूं हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं हूं नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा,

ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं ह्रां पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो ज्ञानदर्शन-चारित्रान् ह्रः सर्वाङ्गं

रक्ष रक्ष स्वाहा ।

तयार वाद करन्यास करवा-

ॐ ह्रीं अर्हं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं सिद्धाः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रीं आचार्या मध्यमाभ्यां  
नमः । ॐ ह्रीं उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं सर्वसाधवः कनिष्ठकाभ्यां नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं  
ह्रौं ह्रः-असिआउसा सम्पज्ञानदर्शनचारित्रान् धर्मं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । पछी-

क्षीरोदधिः स्वयंभूथ, सरे पद्महाद्रहे । शीता शीतोदका कुण्डे, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥१॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥

॥ ९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ १० ॥

ए प्रमाणे श्लोको कही अंकुश मुद्राए जल खेंवुं.

त्यारवाद ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्रुं ब्रुं  
द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ह्रीं जलदेवीदेवा अत्र आगच्छत आगच्छत स्वाहा ।

ए पाठ त्रण वार बोली कूर्ममुद्राए अथवा मत्स्यमुद्राए जल स्थापवुं. पछी 'ॐ ह्रीं क्लीं ब्रुं जल-  
चंदनपुष्पाक्षतफलनैवेद्यदीपधूपं समर्पयामि'

एस बोली वलीदानरूपे पुष्प नालियेर अथवा बीजा फलो वि. पाणीमां पधराववा. ते वखते ॐ आं ह्रीं  
क्रौं जलदेवि ! पूजावलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । ए पाठ बोलवो ।

पछी ४ अथवा ८ कलशो भरवा तथा त्यां लाडु वि. नैवेद्य सूकवां. पछी नीचेनो पाठ बोलवो.

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभसुविधिशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्ति-  
कुंथरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानादितीर्थकराः परमदेवाः तदधिष्ठायकाः देवाः शान्तिं पुष्टिं वृद्धिं  
जयमङ्गलं कुरु कुरु पां पां वां वां नमः स्वाहा ।

ए रीते कलशो भरी चन्दन पुष्पथी सुशोभित करी धवल मङ्गल अने वार्जित्रना नाद पूर्वक कुमारिका  
अथवा सौभाग्यवती स्त्रीओ पासे लेवडावी चैत्य अथवा घरमां प्रदक्षिणा दइने पवित्र स्थाने पधरावी मंगल  
गीत तथा वार्जित्रनो घोष करवो ।

॥ इति जलयात्रा विधि ॥

॥ १० ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ ११ ॥

त्यारवाद १०८ तीर्थजलथी कलश भरी नीचेना पृथ्वी मन्त्रथी स्थापन करवो.

ॐ ह्रीं भूः स्वाहा, ॐ ह्रीं भूमिः स्वाहा, ॐ ह्रूं भुवः स्वाहा, ॐ ह्रीं पृथिवी स्वाहा, ॐ ह्रः वसुमती स्वाहा.

पछी क्षेत्रपाल स्थापना मन्त्र बोलवो.

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा.

पछी क्षेत्रपाल पूजननो मन्त्र बोलवो.

ॐ ह्रीं ह्रां क्षेत्रपालं गन्धाक्षतजलपुष्पतैलसिन्दूरैः दीपधूपौघैः पूजयामि । पछी ॐ ह्रीं दिक्पालाय नमः ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्यो नमः ।

ए मन्त्र बोलने नीचेना श्लोकथी भूतोने दशे दिशामां बलिदान आपवुं.

उपसर्पन्तु ये भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तार-स्ते नश्यन्तु जिनाज्ञया ॥ १ ॥

पछी 'ॐ ह्रीं अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्लु वल्लु निवल्लु निवल्लु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कवल्लि कः क्षः स्वाहा' ए मन्त्रथी मीढळ नाडाछडी आदि मन्त्रीने जमणे हाथे, कलशे, निम्बे देवालये अने घेर मंगल माटे बांधवा.

पछी ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः, ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः ॐ ह्रीं आचार्येभ्यो नमः, ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः, ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनेभ्यो नमः, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः, ॐ ह्रीं सम्यक्-

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १२ ॥

चारित्र्येभ्यो नमः ॐ ह्रीं सम्यक्तपोभ्यो नमः । आ मंगल पाठ बोली + मूलमन्त्र पूर्वक मंगल कलश  
स्थापन करवो.

पछी वांस ८ अने शरावला ८ मां जवारा वाववा ॥

॥ इति प्रथम दिन विधिः ॥

—: कुंभस्थापनना दिवसनो विधि :—

प्रथम नहावाना पाणीनो मन्त्र कही पाणी मन्त्रवुं. पछी शरीरे आमळा, पीठी, कंकोडी चोळी नहावुं.  
पछी वस्त्र पहरेवां. केसर मन्त्री तिलक करवुं. नाडुं अने मीढळ बांधवा पछी भूमि शुद्ध करवी पछी वांसचोखा  
फुल मन्त्रित करवा. पछी कुंभने गेवासूत्र बांधवुं. कुंभ उपर मन्त्र लखवो. “ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवं नाशय नाशय  
स्वाहा.” कुंभमां चंदननो साथियो कराववो रु. १) तथा पंचरत्ननी पोटली नं. १ तथा सोपारी नं. ५  
ब्रह्मचर्यवाळा पुरुषनी पासे मूकाववा. जो ब्रह्मचर्यवाळो पुरुष न मळे तो तेने ब्रह्मचर्यनी बाधा कराववी  
पछी कुवानुं थोडुं पाणी लई तथा बीजुं शुद्ध पाणी लई अखंडधाराथी शुभ मुहूर्ते घडो  
भराववो [निर्विघ्ने] थाली वेलण साथे. पछी घडा उपर पान श्रीफळ, वस्त्र, मीढळ, मरडासींग बांधी,  
फुलनो हार पहरेववो पछी ज्यां स्थापवो होय त्यां चंदरवो प्रथम बांधाववो. पछी घडो भरनार वहेन पासे  
कंकुनो साथियो कराववो तेना उपर डांगरनो साथियो करावी सोपारी मूकाववी पछी त्रण प्रदक्षिणा देवराववी

+ मूलमन्त्र पहेलां आवी गयेलं छे ।

॥ १२ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १३ ॥

ते घडो मन्त्र कहीने स्थापवो, पछी गुरु पासे मन्त्र कही वासक्षेप कराववो. प्रभुनी जमणी वाजु कुम्भ स्थापवो. तांवाना कोडियामां साथीयो करावी रुपियो १ तथा पंचरत्ननी पोटली नंग-१ तथा सोपारी मूकाववी तेमज १०८ तारनी दीवेट पण मूकाववी पछी घीनो मन्त्र कही घीनी वादीधी घी अखंडधाराथी पुरावतुं ने दीपनो मन्त्र कही दीप प्रगटाववो. पछीथी अंदर माटीनुं खामणुं करावी तेना पर दीपने स्थापन करवो उपर फानस ढांकवुं. गुरु पासे वासक्षेप पण कराववो पछी सरावलां नंग ४ जवाराना भराववां दरेक सरावलां पर कंकु सोपारी तथा पैसो चढाववो, कंकुना छांटा नंखाववा. अडायानो भूको, माटी, जार, जव, घडं, सरसव अने डांगर मेळवी जवारा ववडाववा ते घडानी चारे खूणे मूकाववा पछी घेन पासे गहुंली कराववी-[कुंभ पासे पाटलो मूकी कंकुनो साथीयो, चोखा, श्रीफल तथा सोपारी मूकाववी.] पछीथी स्मरण +सात गणाववां त्रण टंक हंमेश गणवां. पछीथी स्नात्र भणावी अष्टप्रकारी पूजा करी आरती मंगल दीवो उतारवो. कुंभस्थापनना मुहूर्तनी जो वार होय तो स्नात्र पहेलुं भणावी शकाय.

अखंडधाराथी घी पुराववानो मन्त्र :-

ॐ धृतमायुर्वेदिकरं, भवतु परं जिन[गु]दृष्टिसंपर्कात् । तत्संयुक्तः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥

दीप प्रगटावतां बोलवानो मन्त्र :-

+सात स्मरण—सवारे तथा वपोरे नवकार, उद्योग, संतिफरं, तिजयपहुत्त, अजितशान्ति, भक्तामर अने वृद्धच्छान्ति । सांजे—उपर प्रमाणेज पण तिजयपहुत्त ने चढले नमिऊण ।

॥ १३ ॥



પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ ।  
॥ ૧૪ ॥

ॐ અર્હં પઠ્ઠચ્ઞાન-જ્યોતિર્મયોઽયં ધ્વાંતઘાતને । દ્યોતનાય પ્રતિમાયા, દીપો ભૂયાત્ સદાર્દતઃ ॥

કુંભ સ્થાપવાનો મન્ત્ર વાર ૭ :- “ૐ હ્રીં ઠઃ ઠઃ ઠઃ સ્વાહા” ॥

પંચરત્નની પોટલી મૂકવાનો મન્ત્ર :-

ૐ હ્રીં શ્રીં નાનારત્નોઘયુતં, સુગંધપુષ્પાધિવાસિતં નીરમ્ ।

પત્તાત્ વિચિત્રવર્ણં, મન્ત્રાઢ્યં સ્થાપનાવિમ્બે સ્વાહા ॥

(૩) સોનાવાળીનો મન્ત્ર વાર ૭ નવકાર સાથે:- “ૐ હ્રીં શ્રીં જીરાવલીપાર્શ્વનાથ ! રક્ષાં કુરુ કુરુ સ્વાહા” ।

—: ૧પ્રતિષ્ઠાને લગતો કાર્યક્રમ :-

સુગંધિ જલથી પ્રતિષ્ઠાની ભૂમિનું સિંચન કરવું, પુષ્પની વૃદ્ધિ કરવી, ધૂપ કરવો, પ્રતિષ્ઠામંડપને યક્ષ-કર્દમથી લિંપવો, વેદિકામાં સ્વસ્તિકાદિક કરવાં. ચિત્રવિચિત્ર વસ્ત્રોના ચંદ્રવા વાંધવા. શુભ મુહૂર્તે પ્રતિષ્ઠાના સ્થાને નવીન વિમ્બોને લાવી સિંહાસન ઉપર પૂર્વ અગર ઉત્તર સન્મુખ સ્થાપવાં તથા ચારે દિશાઓમાં શ્વેત ૧૨ વરઘડાં મૂકવાં, ચાર જવારિયા અને આઠ શરાવલાં ભરવાં. વિમ્બની હથેલીમાં-પ્રિયંગુ, કપૂર અને ગોરોચંદન મૂકવું, પંચરત્નની પોટલી વિમ્બની આંગલીયે વાંધવી.

૧ પ્રતિષ્ઠામાં જોડતા ઉપકરણોની યાદી પરિશિષ્ટ નં. ૨ માંથી જોડ લેવી.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १५ ॥

—: अथ द्वितीयदिनविधिः नन्द्यावर्तपूजन :—

प्रथम नन्द्यावर्तनुं आलेखनः— नन्द्यावर्तनो पट तैयार मळे तो ठीक नहिं तो नीचे प्रमाणे आलेखन करवुं.  
कपूर केसर अने सुखड विगेरे सात लेपनथी लिप्त करेला श्रीपर्ण (सेवन) ना पाटला उपर अगर सुशोभित  
वस्त्रना पट उपर मध्यभागथी सूत्रध्रमण करवा पूर्वक आठ वलय करवां तेमां १पहेला वलयमां:—

अष्टगंधथी नवखुणी प्रदक्षिणाए 'नन्द्यावर्त' आलेखवो. तेना मध्यभागमां जिनप्रतिमाने स्थापवी अथवा  
चिन्तववी अने तेनी जमणी वाजुए 'इन्द्र (शक्र)' अने 'श्रुतदेवता' अने डावी वाजुए ईशानेन्द्र अने शान्ति-  
देवतानुं आलेखन करवुं.

त्रीजा वलयमां :—आठे दिशाओमां अनुक्रमे नीचे प्रमाणे लखवुं :—

२ १ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ३ ॐ नम आचार्येभ्यः ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः  
५ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ६ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः ७ ॐ नमो दर्शनेभ्यः ८ ॐ नमश्चारित्र्येभ्यः ।

त्रीजा वलयमां—चोवीश पत्रो आलेखवां तेमां चोवीश त.र्थं करोनी माताओना- मंत्राक्षरो सहित नामो  
लखवा ते आ प्रमाणे:—

१ आचारदिनकर, प्रपा ने सामाचारीमां शान्तिदेवताने स्थापन करवानुं नथी लखेल ने श्रुतदेवताने इन्द्रनी  
नीचे स्थापवानुं लख्युं छे.

२ सर्वत्र स्वाहा इति पदं विम्वप्रवेशेऽधिकं दिनकरेऽपि ।

श्री गुरुतरगन्धीय  
ज्ञान मन्दिर, जयपुर

॥ १५ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ ।  
॥ १६ ॥

१ ॐ मरुदेवाय नमः २ ॐ विजयाय नमः ३ ॐ सेनाय नमः ४ ॐ सिद्धिदाय नमः  
५ ॐ मंगलाय नमः ६ ॐ सुसीमाय नमः ७ ॐ पुर्वीय नमः ८ ॐ लक्ष्मणाय नमः ९ ॐ  
रामाय नमः १० ॐ नंदाय नमः ११ ॐ विष्णुय नमः १२ ॐ जयाय नमः १३ ॐ सामाय नमः  
१४ ॐ सुजसाय नमः १५ ॐ सुव्याय नमः १६ ॐ अचिराय नमः १७ ॐ सिरीय नमः १८ ॐ देवीय नमः  
१९ ॐ पभावर्षाय नमः २० ॐ पउमावर्षाय नमः २१ ॐ वषाय नमः २२ ॐ सिवाय नमः २३ ॐ वामाय नमः  
२४ ॐ तिसलाय नमः ।

पवी रीतना उच्चारपूर्वक चोवीसे जिनेश्वरनी माताओनी पूजा करवी:—

ચોથા વલયમાં :- આઠે દિશાઓમાં વે વે ગૃહ કરવાં અને તેમાં ૧૬ વિદ્યાદેવીઓના મન્ત્ર લખવા તે આ પ્રમાણે:-

२१ ॐ नमो रोहिण्यै ३ सां त्मां स्वाहा २ ॐ प्रज्ञप्त्यै रां क्षां स्वाहा ३ ॐ वज्रशृङ्गलायै ४ लीं स्वाहा  
४ ॐ वज्राङ्कुशायै ५ ल्मां वां स्वाहा ५ ॐ अप्रतिचक्रायै ६ क्षां स्वाहा ६ ॐ पुरुषदत्तायै ७ ल्मां वां स्वाहा

+ बधे आवतो नमः शब्द पूजाना अर्थमां ले मात्र प्रणामार्थक नथी ।

१ स्वाहा इति पदं सर्वत्र विम्बप्रवेशे-दिनकरेऽपि ।

२. ॐ रोहिणीय स्वां त्मां स्वाहा इत्यादि प्राकृतमां नामो प्रपामां मतमतान्तर तरीके गणावेल छे.

३ स्वां      ४ लां-ईं      ५ क्ष्मां      ६ हूं      ७ सां

॥ २३ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधियो।

॥ १७ ॥

७ ॐ काल्यै १साँ हे स्वाहा ८ ॐ महाकाल्यै ॐ २क्ष्मी स्वाहा ९ ॐ गौर्यै मुँजुः [हूँ] स्वाहा १० ॐ गान्धार्यै ३रं  
४क्ष्मी स्वाहा ११ ॐ सर्वास्त्रामहाज्वालायै लृं ५हां स्वाहा १२ ॐ मानव्यै ६वूं क्ष्मां स्वाहा १३ ॐ वैरुट्यायै  
सूं मां स्वाहा १४ ॐ अच्युप्तायै यूं नां स्वाहा १५ ॐ मानस्यै ७.लुं मां स्वाहा १६ ॐ महामानस्यै ८हं  
९सं स्वाहा.

पांचमा वलयमां २४ भवन वनावी लोकान्तिकादि देवोना मन्त्रो आलेखवा ते नीचे प्रमाणे:-

१ ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा २ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा ३ ॐ वह्निभ्यः स्वाहा ४ ॐ १०वरुणेभ्यः  
स्वाहा ५ ॐ गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ६ ॐ तुषितेभ्यः स्वाहा ७ ॐ अग्न्याधेभ्यः स्वाहा ८ ॐ अरिष्टेभ्यः स्वाहा  
९ ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा १० ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा ११ ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा १२ ॐ सत्याभेभ्यः स्वाहा  
१३ ॐ श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १४ ॐ क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा १५ ॐ वृषभेभ्यः स्वाहा १६ ॐ कामचारेभ्यः स्वाहा  
१७ ॐ निर्वाणेभ्यः स्वाहा १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यः  
स्वाहा २१ ॐ मारुतेभ्यः स्वाहा २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा २४ ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा।

ए रीते चोवीस धरोमां चोवीस मन्त्रो आलेखवा:-

छद्वा वलयमां:-आठेय दिशाओमां नीचेना मन्त्रो आलेखवा:-

|   |         |       |           |       |       |       |       |       |
|---|---------|-------|-----------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ सां                                       | २ क्षीं | ३ रां | ४ क्ष्मां | ५ मां | ६ यूं | ७ सूं | ८ हूं | ९ सुं |
| १० अग्ने नम इत्यधिकं सर्वत्र विम्वप्रवेशे । |         |       |           |       |       |       |       |       |

॥ १७ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ १८ ॥

१ १ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा २ ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ४ ॐ तदेवीभ्यः  
स्वाहा ५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ६ ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ८ ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा।  
सातमा वलयमां आठे दिशाओमां नीचेना मन्त्राक्षरो आलेखवाः—

१ ॐ इन्द्राय स्वाहा २ ॐ अग्नये स्वाहा ३ ॐ यमाय स्वाहा ४ ॐ नैऋतये स्वाहा ५ ॐ वरुणाय  
स्वाहा ६ ॐ वायवे स्वाहा ७ ॐ कुबेराय स्वाहा ८ ॐ ईशानाय स्वाहा।  
आठमां वलयमां नीचेना आठ मन्त्रो आलेखवाः—

१ ॐ रआदित्येभ्यः स्वाहा २ ॐ सोमेभ्यः स्वाहा ३ ॐ मंगलेभ्यः स्वाहा ४ ॐ बुधेभ्यः स्वाहा  
५ ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा ६ ॐ शुकेभ्यः स्वाहा ७ ॐ शनैश्चरेभ्यः स्वाहा ८ ॐ राहुकेतुभ्यः स्वाहा।  
उपर प्रमाणेनां आठे वलयोनी बहार चार द्वारवाळा तथा श्रीशान्ति, भूति, वल अने आरोग्य नामनां  
तोरणो सहित तेमज वर्धमान, गज, सिंह अने ध्वजो सहित त्रण प्राकार (किल्लाओ) आलेखवा तेमांना—  
पहेला प्राकारनां पूर्वादिक द्वारोमां—अनुक्रमे १ चर्म, २ दंड, ३ पाश अने ४ गदायुक्त हाथवाळा अनुक्रमे

१ सोम, २ यम, ३ वरुण अने ४ कुबेर नामना द्वारपाळोने आलेखवा ।

बीजा प्राकारना पूर्वादि द्वारोमां—१ जया, २ विजया, ३ अजिता अने ४ अपराजिता नामनी द्वार-  
पालिकाओने आलेखवी.

१ नम इत्यधिकम् अग्रे. २ सूर्याय, इत्याद्येकवचनं सर्वत्र निम्नप्रवेशे.

॥ १८ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૧૯ ॥

ત્રીજા પ્રાકારના પૂર્વાદિ દ્વારોમાં—હાથમાં લાકડીવાળા તુંવરને આલેખવા. પછી પહેલા ગોળ વપ્રમાં—  
આગ્નેયાદિ વિદિશાઓમાં ત્રણ ત્રણ એમ ચાર સમાઓમાં અનુક્રમે ૧ સાધુ, ૨ સાધ્વી, ૩ વૈમાનિકદેવી ।  
૪ ભવનપતિદેવી, ૫ વ્યંતરદેવી, ૬ જ્યોતિષ્કદેવી । ૭ ભવનપતિદેવ, ૮ વ્યંતરદેવ, ૯ જ્યોતિષ્કદેવ । ૧૦ વૈમા-  
નિકદેવ, ૧૧ મનુષ્ય અને ૧૨ મનુષ્યની સ્ત્રી આમ ચાર પર્યંદા આલેખવી.

ત્રીજા પ્રાકારમાં—તિર્યંચો આલેખવા. ત્રીજા પ્રાકારમાં—દેવ અને મનુષ્યોનાં વાહન વિગેરે આલેખવું.  
પ્રાકારોના ચારે દરવાજે ધંને વાજુપર કમલવનોથી શોભિત વાવો આલેખવી.

૧ પછી વચ્ચના ચિહ્નવાળું હન્દ્રપુર આલેખીને દિશાઓમાં “પરવિદ્યા ધઃ ફુટ્” અને વિદિશાઓમાં “પર-  
મન્વાઃ ધઃ ફુટ્” એમ આલેખવું.

ચારે રુદ્રાણામાં ચાર પૂર્ણકલશો આલેખી તેની વઢાર-ચાયુભવન આલેખવું.

ઇતિ નંદ્યાવર્તની આલેખન વિધિ ।

નંદ્યાવર્ત પૂજન વિધિઃ—પ્રથમ જિનનું પરમેષ્ઠી મુદ્રાએ આહવાન કરી ‘ૐ જિનાય નમઃ’ કહી પૂજન કરવું.

નંદ્યાવર્ત ઉપર કુમુમાંજલિ પ્રક્ષેપ કરવી, તે વચ્ચે વોલવાનો શ્લોકઃ—

કર્ત્યાણવલીકન્દાય, કૃતાનન્દાય સાધુષુ । સદા શુભવિવર્તાય, નન્દ્યાવર્તાય તે નમઃ ॥૧॥

૧ લ-ક્ષનું ચિહ્ન દરેક રુદ્રાણામાં કરવું—ઇતિ વિશ્વપ્રવેશે.

૨ પ્રપામાં પૂજનમાં પણ સ્વાહા વતાવેલ છે.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ २० ॥

पहेला वलयमां:-जिननी स्थापना करी तेमनी वास अने कपूर विगेरेथी पूजा करवी, पछी तेमनी दक्षिण भागमां रहेला इन्द्र शुक्र अने श्रुतदेवतानी पूजा करवी पछी तेमना उत्तर भागमां रहेला ईशानेन्द्र अने शान्ति-  
देवतानी पूजा करवी.

बीजा वलयनुं पूजन:-नीचे आपेला पाठपूर्वक अनुक्रमे आठ पदनुं पूजन करवुं:-  
१ ॐ १ नमोऽर्हद्भ्यः २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ३ ॐ नम आचार्येभ्यः ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः

५ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ६ ॐ नमो दर्शनेभ्यः ७ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः ८ ॐ नमश्चारित्र्येभ्यः ।  
त्रीजा वलयनुं पूजन:- २४ तीर्थंकरनी माताओनुं पूजन नीचेना मन्त्राक्षरोथी करवुं.

१ ॐ मरुदेवाए नमः २ ॐ विजयाए नमः ३ ॐ सेणाए नमः ४ ॐ सिद्धत्थाए नमः ५ ॐ मंगलाए नमः ६ ॐ सुसीमाए नमः ७ ॐ पुहवीए नमः ८ ॐ लक्ष्मणाए नमः ९ ॐ रामाए नमः १० ॐ नंदाए नमः ११ ॐ विष्णुए नमः १२ ॐ जयाए नमः १३ ॐ सामाए नमः १४ ॐ सुजसाए नमः १५ ॐ सुव्याए नमः १६ ॐ अचिराए नमः १७ ॐ सिरीए नमः १८ ॐ देवीए नमः १९ ॐ पभावईए नमः २० ॐ पउमावईए नमः २१ ॐ वप्पाए नमः २२ ॐ सिवाए नमः २३ ॐ वामाए नमः २४ ॐ तिसलाए नमः ।

चोथा वलयनुं पूजन:-नीचेना मन्त्रोच्चारपूर्वक सोल विद्यादेवीओनुं पूजन करवुं:-  
१ चारे खुणामां देवोनी चार निकायना नामो प्रणव नमः स्वाहा पूर्वक लखवा-इति त्रिवप्रवेशे.

+ अहिं सर्व जग्याए नमः' शब्द पूजाना अर्थमां हे मात्र प्रणामना अर्थमां नथी.

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ २१ ॥

१ ॐ रोहिणीए नमः २ ॐ पञ्चतीए नमः ३ ॐ वज्रसिंखलाए नमः ४ ॐ वज्रकुसीए नमः ५ ॐ  
अपडिचकाए नमः ६ ॐ पुरिसदत्ताए नमः ७ ॐ कालीए नमः ८ ॐ महाकालीए नमः ९ ॐ गोरीए नमः  
१० ॐ गंधारीए नमः ११ ॐ सव्यत्थमहाजालाए नमः १२ ॐ माणवीए नमः १३ ॐ वेरुटाए नमः १४ ॐ  
अच्छुत्ताए नमः १५ ॐ माणसीए नमः १६ ॐ महामाणसीए नमः ।

पांचमा वलयनुं पूजन नीचेना मन्त्राक्षरोथी करयुं:-

१ ॐ सारस्वतेभ्यो नमः २ ॐ आदित्येभ्यो नमः ३ ॐ वह्निभ्यो नमः ४ ॐ वरुणेभ्यो नमः  
५ ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः ६ ॐ तुषितेभ्यो नमः ७ ॐ अव्यायाधेभ्यो नमः ८ ॐ अग्न्याभेभ्यो नमः  
९ ॐ अरिण्डेभ्यो नमः १० ॐ सूर्याभेभ्यो नमः ११ ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः १२ ॐ सत्याभेभ्यो नमः  
१३ ॐ धेयस्करेभ्यो नमः १४ ॐ क्षेमंकरेभ्यो नमः १५ ॐ धृपभेभ्यो नमः १६ ॐ कामचारेभ्यो नमः  
१७ ॐ निर्वाणेभ्यो नमः १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यो  
नमः २१ ॐ मरुतेभ्यो नमः २२ ॐ वसुभ्यो नमः २३ ॐ अश्वेभ्यो नमः २४ ॐ विश्वेभ्यो नमः ।

छट्ठा वलयनुं पूजन नीचेना पाठपूर्वक करयुं:-

१ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः २ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः ४ ॐ तद्देवीभ्यो  
नमः ५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः ६ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः ८ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ।  
पञ्ची सातमा वलयनुं पूजन नीचेना पाठयी करयुं.

श्री सुरतरंगच्छाय  
नमो नन्दिर, जयपुर

॥ २१ ॥



પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।

॥ ૨૨ ॥

૧ ઐન્દ્રાય નમઃ ૨ ઐન્દ્રાય નમઃ ૩ ઐન્દ્રાય નમઃ ૪ ઐન્દ્રાય નમઃ ૫ ઐન્દ્રાય નમઃ ૬ ઐન્દ્રાય નમઃ ૭ ઐન્દ્રાય નમઃ ૮ ઐન્દ્રાય નમઃ ।

આઠમા વલયનું પૂજન નીચેના પાઠથી કરવું:-

૧ ઐન્દ્રાય નમઃ ૨ ઐન્દ્રાય નમઃ ૩ ઐન્દ્રાય નમઃ ૪ ઐન્દ્રાય નમઃ ૫ ઐન્દ્રાય નમઃ ૬ ઐન્દ્રાય નમઃ ૭ ઐન્દ્રાય નમઃ ૮ ઐન્દ્રાય નમઃ ।

પછી વહાર રહેલા ત્રણ પ્રાકારોમાંના પહેલા પ્રાકારમાં—અગ્નિચુનામાં ૧ સાધુ ૨ સાધ્વી ૩ વૈમાનિક દેવીનું—‘ઐન્દ્રાય નમઃ’ આ મંત્રથી, નૈરુત્યચુનામાં ૪ ભવનપતિદેવી ૫ વ્યંતરદેવી ૬ જ્યોતિષ્કદેવીનું ‘ઐન્દ્રાય નમઃ’ મંત્રથી, વાયવ્યચુનામાં ૭ ભવનપતિદેવ ૮ વ્યંતરદેવ ૯ જ્યોતિષ્કદેવનું ‘ઐન્દ્રાય નમઃ’ મંત્રથી અને ઈશાનચુનામાં ૧૦ વૈમાનિકદેવ ૧૧ મનુષ્ય ૧૨ મનુષ્યની સ્ત્રીનું ‘ઐન્દ્રાય નમઃ’ મંત્રથી પૂજન કરવું.

ત્રીજા પ્રાકારમાં—તિર્યંચોનું અને ત્રીજા પ્રાકારમાં વાહનોનું વાસકોષથી પૂજન કરવું (મંત્ર નથી) પછી—પહેલા વપ્રમાં—‘ઐન્દ્રાય નમઃ’ ઇત્યાદિ મંત્રોથી ૧ સોમ ૨ યમ ૩ વરુણ અને ૪ કુવેર નામના દ્વારપાલોનું પૂજન કરવું.

ત્રીજા વપ્રમાં— ઐન્દ્રાય નમઃ ઇત્યાદિ મંત્રોથી ૧ જયા ૨ વિજયા ૩ અજિતા અને ૪ અપરાજિતા નામની દ્વારપાલિકાઓનું પૂજન કરવું.

॥ ૨૨ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ २३ ॥

श्रीजा वप्रमां—चार तुम्बरुनी 'ॐ तुम्बरवे नमः' मंत्रथी अने चार तोरणोनी 'ॐ शान्ति ॐ भूति  
ॐ बल ॐ आरोग्य तोरणेभ्यो नमः' मंत्रथी पूजन करवुं.

पछी— १ धर्म २ मान ३ गज अने ४ सिंह आ चार ध्वजोनी 'ॐ धर्मध्वजाय नमः' इत्यादि मंत्रोथी  
दिशाओमां—'परविद्याः क्षः फुट्'नी तथा विदिशाओमां 'परमंत्राः क्षः फुट्'नी तेमज इन्द्रादि सर्वनी पूजा करवी.  
'ॐ पृथ्वीमण्डलाय नमः'थी इन्द्रपुरनी 'ॐ पूर्णकलशाय नमः' थी चार पूर्णकलशोनी 'ॐ वायुमण्डलाय नमः'थी  
वायुभवननी पूजा करवी.

इति नंदावर्तपूजनविधिः ।

पछी त्यां पांच प्रकारनां पकान्न मूकवां. दिशाओ अने विदिशाओमां बलिचाकुला उछाळवा. तयारवाद  
चैत्यवंदन करवुं. [मूलनायकनुं] पछी श्रुतदेवता आराधनार्थं काउ० करुं ?.....करेमि काउस्सग्गं वंदण० कहं।  
१ नव० काउ० पारी नमो० कही नीचेनी स्तुति बोलवी.

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥

पछी श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदण० कही नव० काउ० करी पारी नमो० कही-  
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिगृहे गृहे ॥२॥

ए थोय कहेवी. पछी क्षेत्रदेवता आराधनार्थं क० का० अन्नत्थ कही एक नवकारनो काउ० करी पारी नमो० कही-

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ २६ ॥

सदा वह्निदिशो नेता, पावको मेपवाहनः । संवस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः— ॐ ह्रीँ रँ राँ रुँ रैँ रौँ रः अग्नि संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते आग्नेयदिक्पालाधीश महाज्वाल ज्वालाकराधीश, ॐ अग्निमूर्त्तये, शक्तिहस्ताय  
मेपवाहनाय, सायुधाय, सपरिच्छदाय, <sup>अमुक</sup>इह अमुकनगरे, अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,  
पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजननो मन्त्रः— ॐ ह्रीँ अग्नये नमः ।

३ यम दिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

दक्षिणस्यां दिशि स्वामी, यमो महिपवाहनः । संवस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः— ॐ क्षुँ हुँ हौँ क्षः यम संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते, यमाय, महिपवाहनाय, दक्षिणदिग्दलासनाय, महाकालदण्डरूपधारिणे, कृष्णमूर्त्तये, सायुधाय  
सपरिच्छदाय <sup>अमुक</sup>इह अमुकनगरे, अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ  
स्वाहा ।

पूजन मन्त्र— ॐ ह्रीँ यमाय नमः ।

४ नैऋत दिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

॥ २६ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ २७ ॥

यमापरान्तरालोऽसौ, नैऋतः शववाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः—ॐ ग्लौं हों नैऋत संवोषद् ।

ॐ नमो भगवते नैऋताय तिशितिनिसृतिमदाराक्षसमूर्ताय खड्गहस्ताय शववाहनाय सवाह० सायु० सपरि०  
इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० अत्र आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः—ॐ ह्रीं नैऋतये नमः ।

५ वरुण दिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

यः प्रतीचीदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः— ॐ श्लौं हों वरुण संवोषद् ।

ॐ नमो भगवते वरुणाय, पश्चिमदिग्दलाधीश्वराय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय, परशुहस्ताय, सवाह०  
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः—ॐ ह्रीं वरुणाय नमः ।

६ वायुदिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत् । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ २८ ॥

आह्वान मन्त्रः— ॐ क्लौं हो वायु संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते वायव्याधिपतये, त्रिभुवनव्यापकमूर्त्तये, जगज्जीवनाय, ध्वजहस्ताय, मृगवाहनाय सायु०  
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः— ॐ ह्रीं वायवे नमः ।

७ कुबेर दिक्पालनो पूजनविधिः—

आह्वान श्लोकः—

निधाननवकारूढ, उत्तरस्यां दिशि प्रभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः— ॐ क्लौं हो कुबेर संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते धनदाय नरवाहनाय नवनिधिकराय, उत्तरदिग्दलासनाय गदायुधाय निधानमूर्त्तये, सायु०  
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः— ॐ ह्रीं कुबेराय नमः ।

८ ईशान दिक्पालनो पूजनविधिः—

आह्वान श्लोकः—

सिते वृषेऽधिरूढश्च, ऐशान्याश्च दिशो विभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः— ॐ हाँ हुँ हौं हः ईशान संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते, ईशानाधिपतये, वृषाधिरूढाय, त्रिशूलहस्ताय, सवाह० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक०

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ ।

॥ २९ ॥

जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजनमन्त्रः—ॐ ह्रीं ईशानाय नमः ।

९ नागलोक दिक्पालनो पूजनविधि:-

**आदान श्लोकः-**

पातालाधिपतिर्योऽस्ति, सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः—ॐ आँ ह्रीँ क्रौं ऐं लौं पद्मावतीसहिताय धरणेन्द्र संवोषट् ।

ॐ नमो भगवते पद्मावतीधरणेन्द्राय, पातालाधिपतये, पद्मवाहनाय, समस्तफणावलिभास्कर-रत्नावलिभूषिताय,  
नवकुलनागलोकध्वन्दपरिधृताय सपरि० ३६० अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण,  
पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

१० ब्रह्मलोक दिक्पालनो पूजनविधिः—

**आह्वान श्लोक:-**

ब्रह्मलोकविभुर्यस्तु, राजहंससमाश्रितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः—ॐ ह्रीं हुं ब्लूं (चन्द्रः ?) ब्रह्म संवीपद् ।

ॐ नमो भगवते ब्रह्मदेवलोके अप्रतिहतये, कृतस्थितये, परमानन्दिने, देवमूर्तये ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय, राजहंस-  
वाहनाय, सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।  
जिह्व

श्री सरस्वतजीय  
त.न. इन्दिर, वयपुर

॥ ३९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ३० ॥

पूजन मन्त्रः—ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः ।

उपर प्रमाणे दिक्पालनुं पूजन करी वलि बाकुल नाखवा.

नीचेनो मन्त्र बोली सफेद धजा चढाववी.

मन्त्रः—ॐ ह्रीं इन्द्रादयो दिक्पाला स्वस्वदिशि विघ्नशान्तिकरा भगवदाज्ञायां सावधाना भवन्तु स्वाहा ।

इति दिक्पालपूजनविधिः

पछी नीचेना मन्त्रथी भैरवनुं पूजन करवुं. मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्षां क्षः भैरवाय नमः ।

पछी सोळ विद्यादेवीओनुं नीचेनी विधिथी पूजन करवुं.

“रोहिणी प्रथमा ताम्र, प्रज्ञप्तिर्वज्रशृङ्खला । वज्राङ्कुशाऽप्रतिचक्रा, समं पुरुषदत्तया ॥१॥

काली तथा महाकाली, गौरी गान्धार्यथापरा । ज्वालामालिनी मानवी, वैरोद्या चाच्युता (चाच्छुप्ता) मता ॥२॥

मानसी महामान—स्येतास्ता देवता मताः । अभिषेकोत्सवे जैने, यथास्थानमनिन्दिताः ॥३॥

ए प्रमाणे श्लोको बोली आह्वान करवुं,

आह्वान मन्त्रः—

“ॐ ऐं क्लीं ह्रीं आं क्रौं षोडशमहादेव्यो, हंसगजकमलनरसिंहवाहनाय, छत्रचामरधराय, सायु०  
सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पछी नीचेना मन्त्रथी पूजा करवीः—

॥ ३० ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૩૧ ॥

“ૐ હ્રીં પોહશમહાદેવીભ્યો નમઃ ”

પછી શ્રાવકે વીજા સેવનના પાટલા ઉપર ગ્રહમણ્ડલ કરવું અને તેમાં ગ્રહોની સ્થાપના કરવી. તેની રચના અને ઉપકરણો માટે જુઓ પરિશિષ્ટ નં. ૪

इति विद्यादेवी पूजनविधिः ।

નવગ્રહપૂજન વિધિ:-

૧ સૂર્યપૂજન:-

આહ્વાનશ્લોક:-

સૂર્યો દ્વાદશરૂપેણ, માઠરાદિભિરાયુતઃ । અશુભોઽપિ શુભસ્તેષાં, સર્વદા ભાસ્કરો ગ્રહઃ ॥

મન્ત્ર:-“ૐ હ્રીં આદિત્ય, પદ્મપ્રભજિનશાસનવાસિન્ ! શ્રીસૂર્યાય, સહસ્રકિરણાય, ગજ-વૃષભ-સિંહ-તુરગવાહનાય, રક્તવર્ણાય, દિવ્યરૂપાય, ધૃતિરૂપાય, સાયુધાય, સવાહનાય, સપરિચ્છદાય, ~~મુક્ત~~ અમુકનગરે, અમુકગૃહે, જિનેન્દ્ર-પ્રતિષ્ઠામહોત્સવે, આગચ્છ આગચ્છ, પૂજાં ગૃહ ગૃહ, પૂજાયામવતિષ્ઠ મ્વાહા”

પૂજનમન્ત્ર:- ૐ સૂર્યાય નમઃ

૨ ચન્દ્રપૂજન:-

આહ્વાનશ્લોક :-

અત્રિનેત્રસમુદ્ભૂત-શીરસાગરસંભવઃ । જાતો યવનદેશે તુ, ચિત્રાયાં સમદૃષ્ટિકઃ ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ३२ ॥

आह्वान मन्त्रः—

ॐ ह्रीं चन्द्र चन्द्रप्रभजिनशासनवासिन् प्रतीचीदिग्दलोद्भूत ! अक्षमालाकमलाम्बुपाणये, अमृतात्मने, श्रीसोमाय,  
धवलद्युतिकराय, मृगवाहनाय, सायु० सपरि० <sup>इह</sup> अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां  
गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा” ।

पूजन मन्त्र :- ॐ सोमाय नमः ।

३ मङ्गल पूजन :-

आह्वानश्लोक :-

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिकरो भवेत् । रक्षां कुरु धरापूत्र !, अशुभोऽपि शुभोऽपि वा ॥

आह्वान मन्त्र :-

“ॐ ह्रीं भौम श्रीवासुपूज्यजिनशासनवासिन् वारुणदिग्दलासिने, रक्तप्रभाक्षसूत्रवलयकुण्डिकालंकृते, श्रीभौमाय,  
गजवाहनाय, सायु० सपरि० <sup>इह</sup> अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ  
स्वाहा ” ।

पूजन मन्त्र :- ॐ भौमाय नमः ।

४ बुधपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

कर्केटिरूपरुपाद्यैः, धूपपुष्पानुलेपनैः । दुग्धानैर्वरनारिगै-स्तर्पितः सोमनन्दनः ॥

आवाहन मन्त्र :-

ॐ ह्रीं बुध शान्तिजिनशासनवासिन् ! ह्रीं [?]पूर्वोत्तरदिग्दलासिने, हेमप्रभाक्षकमण्डलुव्यग्रप्राणये ॐ बुधाय  
केसरिवाहनाय, गदाधराय, सवाह० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां  
गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।  
अं

पूजन मन्त्र:- ॐ बुधाय नमः ।

५ गुरुपूजन :-

आवाहनश्लोक :-

उत्तराफालगुनीजातः, सिन्धुदेशसमुद्भवः । दध्यन्नमातुनिर्द्वर्गश्च, तृष्टः पुष्पैर्विलेपनैः ॥

आवाहन मन्त्र:-

ॐ ह्रीं बृहस्पते श्रीआदिनाथजिनशासनवासिन् ! उत्तरदिग्दलासिने, पीतधृत्यक्षत्रकुण्डिकायुतप्राणये ॐ  
त्रिदशाचार्यबृहस्पतये, पुस्तकहस्ताय हंसगरुडवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र०  
आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्र:- ॐ बृहस्पतये नमः ।

६ शुक्रपूजन :-

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ३४ ॥

आह्वानश्लोक :-

शुक्रश्चेतमहापन्नं, षोडशार्चिकटाक्षदृक् । सुगन्धचन्दनालेपैः, श्वेतपुष्पैश्च धूपनैः ॥

आह्वान मंत्र :-

ॐ ह्रीं शुक्र श्रीसुविधिजिनशासनवासिन् ! पूर्वदिग्दलासिने, धवलवर्णाक्षसूत्रकमण्डलुपाणये, असुरमन्त्रिणे,  
ॐ शुक्राय शूकरवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रग्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां,  
गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा । <sup>जन्तुद्विपै</sup>

पूजन मन्त्र :- ॐ शुक्राय नमः ।

७ शनैश्चरपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

नीलपत्रिकया प्रीति-स्तैलेन कृतलेपनम् । उत्पत्तिः काच-कांसार-पङ्कगुलो मेघवाहनः ॥

आह्वान मंत्र :- ॐ ह्रीं क्रौ शने श्रीमुनिसुव्रतजिनशासनवासिन् ! अपरदिग्दलासिने, श्याममूर्त्तये, श्रीशनैश्चराय,  
मेघवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रग्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण  
पूजायामवतिष्ठ स्वाहा । पूजन मन्त्र :- ॐ शनैश्चराय नमः । <sup>जन्तु</sup>

८ राहूपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ३५ ॥

संजातो वन्धरे कूले, मुधूपैः कृष्णलेपनैः । तिलपुष्पैर्नालिकेरै-स्तिळमापैस्तु तर्पितः ॥

आवाहन मंत्रः-ॐ ह्रीं राहो श्रीनेमिजिनशासनवासिन् ! दक्षिण(परा)दिग्दलासिने, अतिकृष्णवर्णपाण्यवहित्थ-  
मुद्रमहातमस्वभावात्मने श्रीराहवे स्वाहा० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह  
गृह, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।  
जंशुदीप

पूजन मंत्रः- ॐ राहवे नमः ।

९ केतुपूजन :-

आवाहनश्लोक :-

राहुः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे । दाडिमस्य विचित्रान्नै-स्तृप्यते चित्रपूजया ॥

आवाहन मंत्रः-ॐ ह्रीं केतो श्रीपार्थजिनशासनवासिन् ! अपरोत्तरदिग्दलासिने, धूमवर्णाक्षसूत्रकुण्डिकालङ्कृत-  
पाणिद्वयानेकस्वभावात्मने, श्रीकेतवे, स्वाहा० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ,  
पूजां गृह गृह, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मंत्रः-ॐ केतवे नमः ।

पछी “ जगद्गुरुं नमस्कृत्य ” इत्यादि नवेय ग्रहो माटे ग्रहशान्तिस्तोत्र चोल्बुं.

पछी नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली वली बाकुला उडाववा.

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुपन्तु पूजावलिपुष्पधूपान् ।

ग्रहा गता ये प्रतिकूलतां च, सदानुकूला वरदा भवन्तु ॥

॥ ३५ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ३६ ॥

अहीं पंचवर्णनी नवे ग्रहोनी नव नवकारवाळी गणवी पछी शान्तिजिनेश्वरनो कलश कहेवो ।

॥ इति तृतीयदिन विधिः ॥

॥ अथ चतुर्थदिन विधिः ॥

पहेळां नीचेना मन्त्रोथी अनुक्रमे क्षेत्रपाल, दिक्पाल, ग्रह अने शासनदेवीनुं पूजन करवुं.

क्षेत्रपाल पूजनमन्त्रः-ॐ क्षाँ क्षीँ ध्रुँ क्षैँ क्षौँ क्षः अर्हं जिनशासनवासिन् क्षेत्रपालाय नमः ।

दिक्पालपूजन मन्त्र :-ॐ ह्रीँ दिक्पालाय नमः ।

ग्रहपूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीँ ग्रहाय नमः ।

जिनशासनदेवीपूजन मन्त्रः-ॐ ऐँ क्लीँ ह्रीँ भगवते, श्रीजिनशासनेश्वरीचतुर्विंशतिशासनदेव्यः-चक्रेश्वरी-  
अम्बिका-यन्मावती-सिद्धायिकाद्या देव्यः सिंहपद्मवाहनाय, खड्गहस्ताय, सायु० सवाह० सपरि० <sup>जल</sup>इह अमुक० अमुक०  
जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठन्तु स्वाहा । पछी इन्द्रपूजा करवी.

इन्द्रपूजानो विधिः-

ॐ ह्राँ ह्रीँ हुँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं ह्रुँ ह्रुँ इन्द्राः श्रीसौधर्मादिचतुःपष्टिः, सायुधाय सवाहनाय सपरिच्छदाय  
<sup>जल</sup>इह अमुकनगरे, अमुकगृहे, जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ, आगच्छ, पूजायामवतिष्ठन्तु स्वाहा ।

ए मन्त्र बोली-जल-चंदन-पुष्प-धूप-दीप विगेरेथी पूजन करवुं.

पछी नीचेनो मन्त्र बोलवो :-

॥ ३६ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ ३७ ॥

“भो भो इन्द्रा ! विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा”

पछी नीचेना मन्त्रथी भूतोने आपवानो बलि मंत्री दशे दिशाओमां-धूप-दीप-चंदन-पुष्प-जल-वास-लापसी बाकुला-पुडला-बडां-विगेरे सहित बलिबाकुला जिनमृहनी बहार उडाडवा.

मन्त्र:-ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आपरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं । जे इमे किन्नर-किंपुरिस-महोरग-गरुल-सिद्ध-गंधर्व-जंक्रुख-रक्खस-पिसाय-भूय-साइणि-डाइणिपभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयटियापवि-चारिणो सन्निहििया असन्निहििया ते सव्वे इमे विलेवण-धूय-पुष्प-फल-पईव-सणाहं बलि पडिच्छंता संतिकरा भवन्तु तुट्टिकरा भवन्तु, पुट्टिकरा भवन्तु सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दूरियाणि नासंतु, सव्वासिवमुवसमंतु, संति-तुट्ठि-पुट्ठि-सुत्थयणकारिणो भवन्तु स्वाहा ।

पछी नीचे प्रमाणेना मन्त्रोपूर्वक अङ्गन्यास करवो:-

बोलवानो मन्त्र

- १ “ॐ नमः सिद्धम्”
- २ “ॐ ओं ह्रीं क्रौं वद चंद वाम्बादिनि अर्हं न्मुखकमल-निवासिनि नमः”
- ३ “ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रः अर्हं नमः”

न्यास करवा माटेनुं अङ्ग

मस्तकपर

मुखपर

हृदयपर

प्रतिष्ठादि  
विधियो।  
॥ ३८ ॥

- बोलवानो मन्त्र
- ४ “ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः”
  - ५ “ॐ ह्रीं असिआउसा नमः”
  - ६ ॐ ह्रीं धर्माय नमः
  - ७ ॐ नमो अरिहंताणं
  - ८ ॐ नमो सिद्धाणं
  - ९ ॐ नमो आयरियाणं
  - १० ॐ नमो उवज्झायाणं
  - ११ ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं
  - १२ ॐ नमो धम्माणं

न्यास करवा माटेनुं अङ्ग

नाभिपर  
पगे  
शरीरपर  
हृदयपर  
मस्तकपर  
शिखापर  
नाभिपर  
पगपर  
शरीरपर

उपर प्रमाणे अङ्गन्यास कर्या पछी करन्यास करवो ते आ प्रमाणे :—

—: करन्यास विधि :—

बोलवाना मन्त्रो :—

- १ ॐ नमो अरिहंताणं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
- २ ॐ नमो सिद्धाणं तर्जनीभ्यां नमः

—: न्यासस्थान :—

बंने अंगुठापर  
,, तर्जनी आंगलीओ पर

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ।  
॥ ૩૯ ॥

ચોલવાનો મન્ત્ર

૩ ઐં નમો આયરિયાણં મધ્યમાભ્યાં નમઃ

૪ ઐં નમો ઉવજ્જાયાણં અનામિકાભ્યાં નમઃ

૫ ઐં નમો લોણ સંવસાદુણં કનિષ્ઠિકાભ્યાં નમઃ

૬ ઐં નમો આગાસગામીણં કરતલકરપૃષ્ઠાભ્યાં નમઃ

ન્યાસસ્થાન

વંને મધ્યમા પર

,, અનામિકા ,,

,, કનિષ્ઠા ,,

,, હથેલી અને હાથના પાછલા ભાગ પર

ઉપર પ્રમાણે કરન્યાસ વિધિ કર્યા વાદ સિદ્ધચક્રપૂજન કરવું તેનો વિધિ:-

આઠ પાંચડીવાલા કમલનો આકાર કરવો (સિદ્ધચક્રમંડપ ભરવો) તેમાં નીચે આપેલ અનુક્રમે એક શ્લોક ચોલી સ્થાપના કરવી તેમજ વીજો શ્લોક અને મન્ત્ર ચોલી ધુપ્પ, અક્ષત, ફલ, દીપ અને ધૂપધી પૂજન કરવું. તે શ્લોકો અને મન્ત્ર આ પ્રમાણે:-

(૧) અરિઠંતપદ (મધ્યભાગમાં સ્થાપના કરવી)

સ્થાપના શ્લોક:-

અથાદલમધ્યાન્જ-કર્ણિકાયાં જિનેશ્વરાન્ । આવિર્ભૂતોલ્લસદ્વોધા-નાદૃતઃ સ્થાપયાપ્યહં ॥૧॥

પૂજન શ્લોક તથા મન્ત્ર:-

નિઃશેષદોષેન્ધનધૂમકેતૂ-નપારસંસારસમુદ્રકેતૂન્ ।

યજે સમસ્તાશિશયૈકહેતૂન્, શ્રીમજ્જિનાનમ્બુજકર્ણિકાયામ્ ॥ ૨ ॥



स्थापना श्लोक :-

जिनेन्द्रोक्तमतश्रद्धा-लक्षणं दर्शनं यजे । मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसदृशे ॥१॥  
पूजन मन्त्र :-[दर्शनादि चारेमां पूजननो श्लोक बोलवानो नथी मात्र मन्त्र बोलवो ]

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा ।

[७] ज्ञानपद [अग्निखुणामां स्थापना करवी]

स्थापना श्लोक :-

अशेषद्रव्यपर्याय-रूपमेवावभासकम् । ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥१॥  
पूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः स्वाहा ।

(८) चारित्रपद ( तैर्ऋत्यखुणाना पत्रमां स्थापन करवुं )

स्थापना श्लोक :-

सामायिकादिभिर्भेदै-श्चारित्रं चारु पञ्चधा । संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात् ॥१॥  
पूजन मन्त्र:- ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः स्वाहा ।

(९) तपपद (वायव्यखुणाना पत्रमां स्थापन करवुं)

स्थापना श्लोक :-

द्विधा द्वादशधा भिन्नं, पूते पत्रे तपः स्वयम् । निधापयामि भक्त्याऽत्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥१॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ४३ ॥

पूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीं सम्यक्त्वत्पसे नमः स्वाहा ।

पछी नवेय यदनी स्तुतिरूप नीचेनुं काव्य बोलवुं.

निःस्वेदत्वादिविद्यातिशयमयतनून् श्रीजिनेन्द्रान्<sup>१</sup> सुसिद्धान्,<sup>२</sup>

सम्यक्त्वादिप्रकृष्टा-ष्टगुणभूत इहा-चारसारांश्च खरीन्<sup>३</sup> ।

शास्त्राणि प्राणिरक्षा-प्रवचनरचना-मुन्दराण्यादिशन्त-

स्तत्सिद्ध्यै पाठकान्<sup>४</sup> श्री-यतिपतिसहिता<sup>५</sup>-नर्चयाम्यर्घदानैः ॥१॥

पछी " ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः सम्यक्दर्शनादिचतुरन्वितेभ्यो नमः स्वाहा "

ए मन्त्र बोली-चंदन, पुष्प, फल, धूप, दीप, नैवेद्य आदिथी पूजन करवुं, रत्नो मृकवां. पछी पहेलां प्रतिष्ठित करेल प्रतिमानी आगल स्नात्रकारक थावकोए-कुसुमांजलि, जन्माभिषेक तथा कलश कहेवा पूर्वक स्नात्र करवुं, पछी नमस्कार अने चैत्यवंदन तेमज आठ थोपनुं देववंदन करवुं.

॥ इति चतुर्थदिन विधिः ॥

॥ अथ पंचमदिनविधिः ॥

वीशस्थानक पूजन:-

शरुआतमां नीचेना मन्त्र बोली शान्तियोपणाना १० श्लोको बोलवा :-

हालमां स्नात्र पहेलां कराय ठे माटे आरती करी देवचन्दन करवुं.

॥ ४३ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधियो।  
॥ ४४ ॥

ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नमः ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः

ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः ॐ ह्रीँ जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः ।

रोगशोकादिभिर्दोषै-रजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानन्तशान्तये ॥१॥

श्री शान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसम्बद्धम् । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीय ते ॥२॥

अम्बा निहितडिम्भा मे, सिद्धबुद्धसमन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥३॥

धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥

चञ्चलचक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥

खड्गखेटककोदण्ड-वाणपाणिस्तडिद्द्युतिः । तुरङ्गगमनाच्छ्रुता, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥

मथुरापुरीसुपार्थ - (श्री)सुपार्थस्तूपरक्षिका । श्रीकुबेरा नारूढा, सुतांकाऽवतु वो भयात् ॥७॥

ब्रह्मशान्तिः स मां पाया-दपायाद्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्त्तिः कृता निजा ॥८॥

श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । देवदेव्यस्तदन्येऽपि, सङ्घं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥

श्रीमद्विमानमारूढा, यक्षमातङ्गसंगता । सा मां सिध्दायिका पातु, चक्रचापेषुधारिणी ॥१०॥

पछी “चत्तारि मङ्गलं” इत्यादि नमस्कार पाठ कहेवो. पछी “वज्रपंजर” स्तोत्र कहेवुं.

पछी श्रावके बीजा पट्ट उपर कुंकुम अने चंदनथी वीश स्थानक (खानां) करवां, पछी अनुक्रमे नीचे आपेला  
२० मंत्रोथी वीशे स्थानकोनुं चन्दन, पत्र, पुष्प, फल, सोपारीना टुकडा तथा अक्षतथी पूजन करवुं.

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૪૫ ॥

વીશ સ્થાનક મંત્રો:-

- |    |                              |    |                           |    |                           |
|----|------------------------------|----|---------------------------|----|---------------------------|
| ૧  | ૐ હ્રીં નમો અરિહંતાણં ।      | ૨  | ૐ હ્રીં નમો સિદ્ધાણં ।    | ૩  | ૐ હ્રીં નમો પવયણસ્સ ।     |
| ૪  | ૐ હ્રીં નમો આયરિયાણં ।       | ૫  | ૐ હ્રીં નમો ઉવજ્જાયાણં ।  | ૬  | ૐ હ્રીં નમો ઘેરાણં ।      |
| ૭  | ૐ હ્રીં નમો લોપ સવ્વસાહુણં । | ૮  | ૐ હ્રીં નમો નાણસ્સ ।      | ૯  | ૐ હ્રીં નમો દંસણસ્સ ।     |
| ૧૦ | ૐ હ્રીં નમો વિણયસ્સ ।        | ૧૧ | ૐ હ્રીં નમો ચરિત્તસ્સ ।   | ૧૨ | ૐ હ્રીં નમો વંભવયધારીણં । |
| ૧૩ | ૐ હ્રીં નમો કિરિયાણં ।       | ૧૪ | ૐ હ્રીં નમો તવસ્સ ।       | ૧૫ | ૐ હ્રીં નમો ગોયમસ્સ ।     |
| ૧૬ | ૐ હ્રીં નમો જિણાણં ।         | ૧૭ | ૐ હ્રીં નમો ચરિત્તધરસ્સ । | ૧૮ | ૐ હ્રીં નમો નાણધરસ્સ ।    |
| ૧૯ | ૐ હ્રીં નમો ગુયધરસ્સ ।       | ૨૦ | ૐ હ્રીં નમો તિત્થસ્સ ।    |    |                           |

(હાલમાં સ્નાત્ર પહેલાં કરાય છે પટલે આરતી કરી દેવવંદન કરવું)

પછી ઉત્તમ પુષ્પ, ગંધ, અક્ષત, પ્રદીપ, ફાલ, ધૂપ, જલ અને પત્રથી શ્રીજિનેશ્વરપ્રભુની અદ્યક્ષકારી પૂજા કરવી. પછી શ્રીઆદિનાથજીનો કલશ ચોળ્યાપૂર્વક સ્નાત્ર કરવું । પછી ચૈત્યવંદન કરી આઠ ધોયનું દેવવંદન કરવું અને વીશે સ્થાનકના નામોચ્ચારણપૂર્વક વીશ નમસ્કાર ગણવા અને નૈવેદ્ય મૂકવું. ॥ ઇતિ વીશસ્થાનકપૂજનવિધિઃ ॥

॥ ઇતિ પંચમદિનવિધિઃ ॥

॥ અથ પ્ષઠદિનવિધિઃ ॥ (ચ્યવનકલ્યાણકવિધિઃ)

ૐ ક્લોં લ્લોં સ્વાં લાં ક્ષાં ક્ષેત્રપાલાય નમઃ । ૐ દિવપાલેભ્યો નમઃ । ૐ ગ્રહેભ્યો નમઃ । ૐ હ્રીં પોઢશ-

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ४६ ॥

महादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीं जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः । ए मन्त्रोनो उच्चार करी प्रतिष्ठाकारकनी नीचेनी  
विधिए इन्द्र तरीकेनी कल्पना करवी।

सद्दृष्टेः प्रविकल्पिताऽतिविशदप्राग्भाभाभासुर - ज्ञानस्यापि विकल्पजालजयिनश्चारित्रतत्त्वस्य च ।

यत्पूर्वैः परिकल्पितं जिनमहे रत्नत्रयाराधकं, चिह्नं तन्निदधे महेशकलितं यज्ञोपवीतं परम् ॥१॥

ए काव्य बोली प्रतिष्ठा करावनारे “सोनानी सांकली” पहेरवी । पत्नी—

रत्नप्ररोहैरुचिरैर्यदुत्थै - राकाशमङ्गीकृतभं विभाति ।

तच्छेखरं शेषविधेयविज्ञो, मौलों मयूखाढ्यमहं दधामि ॥२॥

ए काव्य बोली “मुकुट अने तिलक” धारण करवुं ।

दिव्यं दिव्यैरत्नजालैरनेकै-र्नैद्रं धुन्वन्ध्वान्तमन्तः स्फुरद्भिः ।

हेमं हेम्ना निर्मितं विश्वपाणी, पुण्यं पुण्यैः कङ्कणं स्वीकरोमि ॥३॥

ए काव्य बोली “कङ्कण” पहेरवुं ।

प्रद्योतयन्ती निखिलं स्वकान्त्या, प्रकोष्ठमङ्गद्युतिराजिरम्या ।

मुद्रेव जैनी वरमुद्रिकाभा-मलंकरोत्वद्गुलीपर्वमूले ॥४॥

ए काव्य बोली “मुद्रिका” पहेरवी तेमज

केयूरहाराद्गदकुण्डलानि, प्रालम्बसूत्रं कटिकम्बिमुद्रिके ।

शस्त्री च पटं मुकुटं च मेखला, ग्रैवेयकं नूपुरकर्णपूरम् ॥५॥

आ काव्य बोली केयूर, हार, कड़ा, कुंडल विमेरे सोले प्रकारनां आभूषणो प्रतिष्ठा करावनारे पहेरवां, पछी  
“ॐ ह्रीं अर्हं हूं हुं इन्द्रं परिकल्पयामि स्वाहा” ए मन्त्र बोलवो अने वासक्षेप मन्त्री प्रतिष्ठा करावनारना  
मस्तकपर नाखवो.

॥ इति इन्द्रस्थापनविधिः ॥

॥ अथ इन्द्राणीस्थापनविधिः ॥

“ ॐ आँ ह्रीं क्रौं एं ह्रीं सौं इन्द्राणीं परिकल्पयामि स्वाहा ”

ए मन्त्रयी वासक्षेप मन्त्री प्रतिष्ठा करावनारनी भार्याना मस्तक उपर नाखवो ।

॥ इति इन्द्राणीस्थापनविधिः ॥

पछी “ ॐ ह्रीं नमो भगवती विश्वव्यापिनी ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं हः सिंहासने स्वस्तिकं पूरयामि  
स्वाहा ।

ए मन्त्र बोली इन्द्र इन्द्राणी पासे धवलगीत साये वेदिका उपर पांच स्वरितक कराववा ।

पछी नीचे आपेला मन्त्रोथी ते ते अंगो पर न्यास करवो—

मन्त्रो

न्यास करवानां अंगो

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रीं शीर्षं

रक्ष रक्ष स्वाहा

मस्तकपर

२ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ह्रीं वदनं

” ” ”

मुखपर

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ४८ ॥

मन्त्रो

न्यास करवानां अंगो

|   |  |       |            |
|---|--|-------|------------|
| ३ | ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं हूं हृदयं                                     | ॥ ॥ ॥ | हृदयपर     |
| ४ | ॐ ह्रीं नमो उवज्ज्ञायाणं हूं नाभिं                                 | ॥ ॥ ॥ | नाभिपर     |
| ५ | ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं हूं पादौ                                | ॥ ॥ ॥ | बंने पगपर  |
| ६ | ॐ ह्रीं नमो ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि हूं सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष स्वाहा |       | सर्व अंगपर |

॥ इति अंगन्यासविधिः ॥

॥ अथ करन्यासविधिः ॥

— मन्त्रो —

न्यास योग्य हाथना विभागो

|   |   |                               |
|---|---|-------------------------------|
| १ | ॐ ह्राँ अर्हन्तो अंगुष्ठाभ्यां नमः  | अंगुष्ठाओ पर                  |
| २ | ॥ ह्रीँ सिद्धाः तर्जनीभ्यां ॥   | तर्जनी आंगलीओ पर              |
| ३ | ॥ ह्रूं आचार्या मध्यमाभ्यां ॥   | वचली ॥ ॥                      |
| ४ | ॥ ह्रै ह्रौँ उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः   | अनामिका, ॥ ॥                  |
| ५ | ॥ ह्रः सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां ॥   | टचली ॥ ॥                      |
| ६ | ॥ ह्रः ह्रीँ ह्रूं ह्रैँ ह्रः दर्शनज्ञान-<br>चारित्रतपांसि धर्माः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | हाथना उपर तथा नीचेना<br>भागपर |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ४९ ॥

पछी “ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं नमो अर्हं नमो हंस नमो हंस नमो हंस गुरुपादुकाभ्यां नमः”  
ए मन्त्र बोली गुरुपूजन करवुं.

॥ इति गुरुपूजनविधिः ॥

पछी “ॐ ह्रां ह्रीं नमो अर्हं हंस धर्माचार्याय नमः” एम मन्त्र बोली धर्माचार्यनुं पूजन करवुं.

पछी—“ॐ ह्रां ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रः अर्हं परमब्रह्मणे असिआउसा नमो हंस स्वाहा” ए मन्त्र बोली  
अरिहंतप्रभुना सिंहासनादिकनी पूजा करवी ।

पछी “ॐ ह्रां ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रः अर्हद्भ्यो नमः ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रीं अर्हते नमः” ए  
मन्त्रथी वासक्षेप मंत्रीने नवां विंशो पर नाखवो ।

पछी “ॐ परमहंसाय, परमेष्ठिने हंसः हंस हंस हूं हूं ह्रां ह्रां हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रः अर्हते नमः” श्रीजिन-  
विम्बं स्थापयामि संवोपट्” ए मन्त्रथी पाणी साथे वासक्षेप मन्त्रीने नवीन जिनविम्बपर नाखवो तथा तेनुं सर्व अंगे  
विलेपन करवुं. पछी तेनी आगल दूधथी भरेलो मुचर्णकलश स्थापवो. पछी—

मुकृतकरणदक्षः पञ्चमुख्यः समस्तः, सकलदुरितनाशः छिन्नदुष्कर्मपाशः ।

विमलकुलप्रवृद्धं देवलोकाच्च्युतः श्री-नियतपदसमृद्धयै मानुषेऽर्हन् सदा त्वम् ॥१॥

रत्नत्रयालंकरणाय नित्य-मच्छायाकायाय निरामयाय ।

निःस्वेदतानिर्मलतायुताय, नमोनमः श्रीपरमेश्वराय ॥२॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ५० ॥

ए वे श्लोक बोली “ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं हूं अहं नमः हंस श्रीमदहं देवलोकाच्च्युत्वा मानुषत्वेऽवा  
तरत्, हंस हंस हंस श्रीपरमेश्वराय नमः स्वाहा” ए मन्त्रोच्चारपूर्वक पूर्वे अप्रतिष्ठित जिनविंवने दूधथी भरेला  
सुवर्णकलशमां स्थापवा.  
॥ इति च्यवनमन्त्रः ॥

पछी—“ॐ ह्रां ह्रीं क्रौं य र ल व श ष स ह क्षौं हूं सः [हंस] अमुष्य प्राणान् इह प्राणे, अमुष्य जीव इह स्थितः  
सर्वेन्द्रियाणां वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रमुखजिह्वाः स्थापय संवौषद् स्वाहा स्वधा” ए मन्त्र बोलीने वासक्षेप नाखवो ।

॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

पछी नीचे प्रमाणेना मन्त्रोथी जिनविंवना ते ते अङ्गोपर मातृन्यास करवो.

| मन्त्रो                 |                             |  |  |
|-------------------------|-----------------------------|--|--|
| “ॐ ह्रीं अहं ॐ ह्रीं”   | मोक्षद्वारे                 |  |  |
| “ॐ ह्रीं अहं श्रीं अ आ” | ललाटे दक्षिणतः              |  |  |
| “ॐ ह्रीं अहं, श्रीं ईई” | दक्षिणेतरनेत्रयोः           |  |  |
| “ ” ” ” उऊ              | कर्णयोः                     |  |  |
| “ ” ” ” कृकृ            | नासापुटयोः                  |  |  |
| “ ” ” ” लृलृ            | गल्लयोः                     |  |  |
| “ ” ” ” एऐ              | ऊर्ध्वाधोदंतपङ्क्त्योष्ठयोः |  |  |

| अंगन्यास                 |
|--------------------------|
| मस्तकपर                  |
| ललाटपर जमणी बाजुए        |
| वन्ने आंखोपर             |
| कानोपर                   |
| नासिकापर                 |
| गालोपर                   |
| उपर नीचे दांत तथा होठोपर |

प्रतिष्ठादि  
विधौ।  
॥ ५१ ॥

| मन्त्रो                |            |                               |  |
|------------------------|------------|-------------------------------|--|
| "ॐ ह्रीं अहं श्रीं ओं" | स्कन्धयोः  |                               |  |
| " " " "                | अंअः"      | मस्तके जिह्वे                 |  |
| " " " "                | क ख"       | मुखमण्डले                     |  |
| " " " "                | ग घ"       | कण्ठे                         |  |
| " " " "                | ङ"         | हनुस्थाने                     |  |
| " " " "                | च छ ज झ"   | दक्षिणभुजे                    |  |
| " " " "                | ञ"         | वामभुजे                       |  |
| " " " "                | ट ठ ड ढ ण" | दक्षिणकुक्षौ                  |  |
| " " " "                | त थ द ध न" | वामकुक्षौ                     |  |
| " " " "                | प"         | दक्षिणोरो                     |  |
| " " " "                | फ"         | वामोरो                        |  |
| " " " "                | ब"         | गुह्ये                        |  |
| " " " "                | भ"         | नाभिमण्डले                    |  |
| " " " "                | म"         | स्फिजोः इन्द्रियोभयपार्श्वयोः |  |
| " " " "                | य"         | शरीरस्थाने उदरे               |  |

| अग्न्यास                              |                      |
|---------------------------------------|----------------------|
| खभापर                                 |                      |
| माथापर                                | तथा जीभना अग्रभाग पर |
| मुखपर                                 |                      |
| कंठपर                                 |                      |
| दाढीपर                                |                      |
| जमणा हाथपर                            |                      |
| डावा हाथपर                            |                      |
| जमणी कुरुपर                           |                      |
| डावी कुखपर                            |                      |
| जमणा साथळमां                          |                      |
| डावा साथळमां                          |                      |
| गुह्यस्थानमां                         |                      |
| नाभिपर                                |                      |
| वे कुला उपर तथा इन्द्रियना वन्ने पडखे |                      |
| शरीर स्थान ने उदर पर                  |                      |

॥ ५१ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ५२ ॥

मन्त्रो  
“ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं र” ऊर्ध्वरोमाञ्चे  
“ ” ” ” ल” पृष्ठे  
“ ” ” ” व” ग्रीवाकक्षादिसन्धिषु  
“ ” ” ” श” जानुयुग्मयोः  
“ ” ” ” प” गुल्फमूलयोः  
“ ” ” ” स” पादयोः  
“ ” ” ” ह” हृदये

ए रीते विंशति सर्वा अंगे मातृन्यास करवा.

पछी “ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं वा, अर्हं नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः अर्हं नमः स्वाहा” ए मन्त्रथी मन्त्रीने प्रभुना मस्तक उपर वासक्षेप नाखवो.

पछी नीचेना मन्त्रथी कानमां उपदेश करीने वासक्षेप मस्तक उपर नाखवो—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः असिआउसा ह्रीं नमः स्वाहा “इति कर्णौ”, उपदेशमन्त्रः—ॐ ह्रीं परमहंसाय, परमेष्ठिने, परमहंसः ह्रौं ह्रां ह्रीं ह्रः परमेश्वराय परमेष्ठिने नमः स्वाहा”

पछी नीचेनो आशिष मन्त्र बोलवो—

अंगन्यास  
ऊर्ध्वस्थानना रोमांच एटले मस्तकादना वालोपर  
पीठपर  
कंठ तथा कक्षा (काख) विगेरे सांधाओमां  
वन्ने जानु (घुंटा) उपर  
घुंटाणा मूल [ठांकाणी] पर  
वन्ने पग उपर  
हृदयपर

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ ५३ ॥

“ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी भगवती ह्रीं नमः, ॐ नमो अरुहंताणं भावभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः  
स्वाहा ॥”

पत्नी स्वप्नदर्शनने लगता नीचेना बे श्लोको अने मन्त्र बोलवो—

गजो वृषो हरिः साभि-पेकथीः सख शशिरवी । महाध्वजपूर्णकुम्भो, पद्मसरः सरित्पतिः ॥१॥

विमानं रत्नपुञ्जथ, निर्धूमाग्निरिति क्रमात् । ददर्श स्वामिनी स्वप्नान्, मुखे प्रविशतस्तदा ॥२॥

“ॐ ह्रीं स्वामिनीस्वप्नदर्शनमिति स्वाहा.”

\* पत्नी स्नात्रक्षारके चैत्यवंदन करवुं. श्रावकोए कुमुमांजलिपूर्वक श्री दार्शजिननो कलश कहेवो.  
अष्टप्रकारी पूजा करी आरती करीने पत्नी आठ थोपनुं देववंदन करवुं.

॥ इति च्यवनकल्याणकविधिः ॥

॥ इति गण्ठदिवसविधिः ॥

॥ अथ सप्तमदिनविधिः ॥

“ॐ नमो अरिहंताणं हृदये” “ॐ नमो सिद्धाणं मस्तके” “ॐ नमो आयरियाणं शिखायां”  
“ॐ नमो उवग्गसायाणं सन्नाहे” “ॐ नमो लोए सच्चसाहुणं दिव्यास्त्रे”

ए आत्मरक्षाने लगतां पद्मो बोलवापूर्वक ते ते प्रमाणे हस्तन्यास करवो.

• हालमां स्नात्रपूजा प्रथम भणावाय छे.

॥ ५३ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ५४ ॥

पछी नीचेना मन्त्रोथी शुचिकरण करवुं. (सब अंगे त्रणवार स्पर्श करी पवित्र करवां):—

“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवञ्ज्जायाणं, ॐ नमो लोए सन्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो इः क्षः अशुचिः शुचीभवामि स्वाहा” ए रीते गुरुए पण स्नात्रीआओने अभिमंत्रित करवा.

पछी “क्षि प ॐ स्वाहा, हा स्वा ॐ प क्षि” ए रीते आरोह [चढवुं] अवरोह [उतरवुं]ना क्रमे पग, नाभि, हृदय, मुख अने भालपर पोतानुं सकलीकरण करवुं.

पछी—“ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” ए मन्त्रथी बलिवाकुला मन्त्री प्रतिष्ठास्थानथी जल सहित उडाडवा तेमज धूप, चंदन, पुष्प, अक्षत वि. उछालवां. श्रावकोए दरेक नवीन बिचोपर कुसुमांजलि प्रक्षेप करवो अने नीचेनो श्लोक बोलवो.

अभिनवसुगन्धविकसित—१पुष्पौघवृता २सुगन्धधूपाढ्या ।

विम्बोपरि निपतन्ती, मुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥

पछी गुरुए बंने बचली आंगलीओ ऊंची करीने नवीन बिचोने रौद्रद्रष्टिथी तर्जनीमुद्रा देखाडवी पछी श्रावकोए डावा हाथमां जल लइने “ज्महॉं म्लो” ए मन्त्र बोली प्रतिमाने आच्छोटन करवुं.

पछी गुरुए “ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” ए मन्त्र भणी विम्बोनो द्रष्टिदोष

पाठा० १ भृता २ सुधूपगन्धाढ्या इति प्रपायाम् ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ५६ ॥

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी । सुवत्सा वत्समित्रा च, पुष्पमाला त्वनिन्दिता ॥१॥  
नत्वा प्रभुं तदम्बां चे-शाने स्रुतिगृहं व्यधुः । संवर्तेनाशोधयन् क्ष्मा-मायोजनमितां गृहात् ॥२॥

“ॐ ह्रीं अष्टावधोलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डलं स्रुतिकागृहं शोधयन्ति स्वाहा”

२ ऊर्ध्वलोकवासिनी आठ दिक्कुमारीका-(तेओए सुंधी जल तथा पुष्प वरसाववां)

मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिनी । तोयधारा विचित्रा च, वारिषेणा बलाहका ॥१॥  
अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैता, नत्वाऽर्हन्तं समातृकम् । तत्र गन्धाम्बुपुष्पौघ-वर्षां हर्षाद्वितेनिरे ॥२॥

“ॐ ह्रीं अष्ट ऊर्ध्वलोकवासिन्यः देव्यः योजनमण्डलं गन्धाम्बुपुष्पौघं वर्षयन्ति स्वाहा”

३ पूर्वरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका - (तेओए दर्पण धरवा)

अथ नन्दोत्तरा नन्दा, आनन्दानन्दिवर्धने । विजया वैजयन्ती च, जयन्ती चापरार्जिता ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ पूर्वरुचकवासिन्यः देव्यः विलोकनार्थं दर्पणानि अग्रे धरन्ति स्वाहा”

४ दक्षिणरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका-(तेओए पूर्णकलश लङ् अभिषेक करवा अने गीतगान करवां).

समाहारा सुप्रदत्ता, शुद्धबुद्धा यशोधरा । लक्ष्मीवती शेषवती, चित्रगुप्ता वसुन्धरा ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ दक्षिणरुचकवासिन्यः देव्यः स्नानार्थं करे पूर्णकलशान् धृत्वा अभिषेकं कुर्वन्त, गीतगाने विदधति स्वाहा”

५ पश्चिमरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका-(तेओए पंखा वींझवा).

१ इलादेवी २ सुरादेवी, ३ पृथिवी ४ पद्मवत्यपि । ५ एकनासा ६ नवमिका, ७ भद्राशीतेति नामतः ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ पश्चिमरुचकवासिन्यः देव्यः वीजनार्थं व्यजनानि वीजयन्ति स्वाहा”

६ उत्तररुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका-(तेओए चामर वींझवा).

१ अलम्बुषा २ मिश्रकेशी, ३ पुण्डरीका च ४ वारुणी । ५ हासा ६ सर्वप्रभा ७ श्री ह्री-रष्टोदग्रुचकाद्रितः ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ उत्तररुचकवासिन्यः देव्यः वालव्यजनानि चामराणि वीजयन्ति स्वाहा”

७ चार विदिशाओमां रहेली रुचकवासिनी चार दिक्कुमारिका (दीपकनो प्रकाश आपे).

१ चित्रा च २ चित्रकनका, ३ सुतारा ४ वसुदामिनी । ५ दीपहस्ता विदिक्षेताः, ६ स्युर्विदिग्रुचकाद्रितः ॥

“ॐ ह्रीं चतस्रो विदिग्रुचकवासिन्यः देव्यः प्रदीपहस्ता उद्योतं कुर्वन्ति स्वाहा”

८ चार रुचकद्वीपवासिनी दिक्कुमारिका (चार आंगलनी नाल छेदी भूमि खोदीने नाखे)

१ रूपा २ रूपासिका चापि, ३ मुरूपा ४ रूपकावती । ५ चतुरङ्गुलतो नालं छित्त्वा खातोदरेऽक्षिपन् ॥

“ॐ ह्रीं चतस्रो रुचकद्वीपवासिन्यः चतुरङ्गुलतो नालं छित्त्वा भूखातोदरेऽक्षिपन् स्वाहा”



ए प्रमाणे करी नीचेना मन्त्रो बोलवा—

“ॐ ह्रीं पूर्वोत्तरदक्षिणेषु रम्भागृहत्रयं व्यधुः स्वाहा”

“ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः उत्तरे अरणिकाष्ठाभ्यां अग्निमुत्पाद्य चन्दनाद्यैर्जुहुयात् वषट्”

ए मंत्र बोली अरणिनां लाकडांथी अग्नि उत्पन्न करीने तेमां चंदन विगेरेनो होम करी रक्षा पोटली बांधवी.  
पछी अनुक्रमे नीचे प्रमाणेना मंत्रोथी पवित्र १ जलकलश २ चंदन ३ पुष्प अने ४ स्नात्रपुटिका

(धूप)नुं अभिमंत्रण करवुं ते मन्त्रो :—

१ जलमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते अपः जलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

२ चंदनमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

३ पुष्पमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

४ धूपमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधिपते धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

पछी दृष्टिदोष निवारण माटे नीचेना मंत्रथी मंत्रित पंचरत्ननी रक्षापोटली नवीन विंवना जमणा हाथनी  
आंगलीओमां बांधवी तेमज कंठमां अरीठामाला अने जवमाला नाखवी.

मन्त्रः—“ॐ क्षां क्षीं झीं स्वाहा”

पछी जलयात्राथी लावेला जलने पवित्र जलकुंडीमां भरी तेमां वास, चंदन, पुष्प आदि नाखी “ ॐ  
ह्रीं नमः” ए मंत्रथी जलदर्शन करवुं तथा धूप, दीप, गीत, गान, नाटक विगेरे करवुं.

॥ इति दिक्कुमार्युत्सवः ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ५९ ॥

। अथ इन्द्राणीमहोत्सवः ।

नीचेना श्लोको बोलवा—

श्रीरिन्द्राण्याद्यग्रमहिषी, सामानिकैश्च संसुता । अंगरक्षकदेवीभिः, समागता जिनगृहे ॥१॥

तारा तिलोत्तमा तारु-<sup>१</sup>र्मनोवेगा च मोहिनी । सुन्दरी त्रिपुरा चैव, माना मानवती मुदा ॥२॥

पछी “ॐ नमो जिणाणं, सरणाणं, संगलाणं, लोगुत्तमाणं ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असियाउसा त्रैलो-  
क्यललामभूताय अर्हते नमः स्वाहा”

ए मन्त्रथी इन्द्राणीए कुंकुमथी नवीन चिंवना भाल उपर तिलक करवुं, पछी इन्द्राणीए गीत, गायन,  
नाटक आदि करवुं.

॥ इति इन्द्राणीमहोत्सवः ॥

। अथ इन्द्रमहोत्सवः ।

पहेलां नीचेना श्लोको बोलवा—

ततः सिंहासनं शाक्रं, चचालाचलनिश्चलम् । प्रयुज्याथावधि ज्ञात्वा, अर्हज्जन्माभिषेचनम् ॥१॥

वज्रचक्रयोजनां घण्टां, सुघोषां नैगमेपिणा । अवाद्यत्ततो घण्टा, रेणुः सर्वविमानगाः ॥२॥

प्रचेलुः सुरागुरेन्द्रा, विविधैर्वाहनैर्धनैः । समागत्य जिनाम्बां च, नत्वा रूपं च पञ्चधा ॥३॥

॥ ५९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६० ॥

एको गृहीततीर्थेशः, पार्श्वौ द्वावात्तचामरौ । एको गृहीतातपत्र, एको वज्रधरः पुरः ॥४॥  
शक्रः सुमेरुशृङ्गस्थः, गत्वाऽथो पाण्डुकं वनम् । मेरुचूलादक्षिणेना-तिपाण्डुकम्बलासने ॥५॥  
अभिषेकोत्सर्वे जैने, चतुःपष्टिः पुरन्दराः । सुमेर्वधिष्ठिते स्थाने, समेयुस्ते यथाक्रमम् ॥६॥

<sup>१</sup>चमरेन्द्रो <sup>२</sup>बलीन्द्रश्च, <sup>३</sup>धरणेन्द्रस्तृतीयकः । <sup>४</sup>भूतानेन्द्रश्च <sup>५</sup>वेण्विन्द्रो, <sup>६</sup>वेणुदालिस्तथैव च ॥७॥

<sup>७</sup>हरिकान्तो <sup>८</sup>हरिसखः, <sup>९</sup>अग्निसिंहोऽग्निमानवः । <sup>१०</sup>पूर्णेन्द्रोऽथ <sup>११</sup>विशिष्टश्च, <sup>१२</sup>जलकान्तो <sup>१३</sup>जलप्रभः ॥८॥

<sup>१४</sup>अमृतगतिर्भवनेन्द्रो, - <sup>१५</sup>ऽमृतवाहननामतः । <sup>१६</sup>वेलम्बकः <sup>१७</sup>प्रभञ्जनः, <sup>१८</sup>घोषमहाघोषकावपि ॥९॥

<sup>२१</sup>कालेन्द्रोऽथ <sup>२२</sup>महाकालः, <sup>२३</sup>सुरूपः, <sup>२४</sup>प्रतिरूपकः । <sup>२५</sup>पूर्णभद्रो <sup>२६</sup>माणिभद्रो, <sup>२७</sup>भीमो <sup>२८</sup>महाभीमनामकः ॥१०॥

<sup>२९</sup>किन्नरः <sup>३०</sup>किंपुरुषेन्द्रः, <sup>३१</sup>सत्पुरुषस्तथैव हि । <sup>३२</sup>महापुरुषव्यन्तरेन्द्रो, <sup>३३</sup>अतिकायश्च तथा परः ॥११॥

<sup>३४</sup>महाकायो <sup>३५</sup>गीतरति-<sup>३६</sup>गीतयशाश्च <sup>३७</sup>षोडश । <sup>३८</sup>सन्निहितः <sup>३९</sup>समानितः, <sup>४०</sup>धाता विधाताथाऽपरः ॥१२॥

<sup>४१</sup>ऋषीन्द्रश्च <sup>४२</sup>ऋषिपाल, <sup>४३</sup>ईश्वरमहेश्वरावपि । <sup>४४</sup>सं(सु)वत्सो <sup>४५</sup>विशालेन्द्रश्च, <sup>४६</sup>हासो <sup>४७</sup>हासरतिः पुनः ॥१३॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ६१ ॥

<sup>४८</sup> श्वेतेन्द्रो <sup>५०</sup> महाश्वेतः, <sup>५१</sup> पयगपयगपतीश्वरौ । <sup>५२</sup> चन्द्रादित्यौ <sup>५३</sup> ज्योतिषीन्द्रौ, <sup>५४</sup> कल्पेन्द्रा दशधा पुनः ॥१४॥

<sup>५५</sup> सौधर्मेन्द्र <sup>५६</sup> ईशानेन्द्रः, <sup>५७</sup> सनत्कुमारपुरन्दरः, । <sup>५८</sup> माहेन्द्रो <sup>५९</sup> ब्रह्मेन्द्रश्च, <sup>६०</sup> लान्तकेन्द्रस्तु वज्रिणः ॥१५॥

<sup>६१</sup> शुक्रेन्द्रश्च <sup>६२</sup> सहस्रारः, <sup>६३</sup> आनतप्राणताभिधः । <sup>६४</sup> आरणाच्युतशक्रश्च, इतीन्द्राः चतुःपष्टिका ॥१६॥

एवी रीतना श्लोको भणीने

“ॐ ह्रीं हूं हुं सौधर्मेन्द्रादिचतुःपष्टिरिन्द्रा अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे, सर्वविघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा”

एवी रीतनो मन्त्र भणवो. पछी,

श्रीमन्मन्दरमस्तके श्रुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते । पीठे मुक्तिवरं निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पस्रजा ।

इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, मुद्राकंकणशेखराप्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिसिरःशेखरस्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।

जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वन्द्वपूजान्विताः श्री-रईन्तं स्नात्रकाळे कलशजलभृतैरेभिराण्ठावयेत्तम् ॥२॥

एवी रीतनां काव्यो भणीने

॥ ६१ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६२ ॥

“ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतोपधिसहितेन पट्टिलक्षैककोटिप्रमाणकलशैः  
स्नापयामीति स्वाहा”

एवी रीतनो मंत्र भणवो. पछी,  
चतुर्वर्षभरूपाणि, शक्रः कृत्वा ततः स्वयम् । शृङ्गाष्टकक्षरत्क्षीरै - रकरोदभिषेचनम् ॥१॥

ए श्लोक बोली—

“ॐ ह्राँ ह्रीँ अर्हते क्षीरेण स्नापयामीति स्वाहा” ए मन्त्र बोली प्रभुने स्नान करावबुं.  
पछी प्रतिष्ठा करावनारे रूपाना चोखार्थी प्रभु पासे अष्टमंगल पूरी नीचे प्रमाणे स्तुति करवी—  
सन्मङ्गलप्रदीपं ते, विधायारात्रिकं पुनः । संगीतनृत्यवाद्यादिं, व्यधुर्विविधमुत्सवम् ॥१॥  
तत्र पूर्वमच्युतेन्द्रो, विदधात्यभिषेचनम् । ततोऽनुपरिपाटीतो, यावच्चन्द्रार्यमादयः ॥२॥

ए प्रमाणे स्तुति करी आठ थोयनुं देववन्दन करबुं.

पछी इन्द्र जिनेश्वरने लावी माता पासे मूकी ३२ क्रोड रत्न मुवर्ण अने रूपानी वृष्टि करे. तेने लगतो श्लोक—  
शक्रस्तु जिनमानीय, विमुच्याम्बानिकेतने । द्वात्रिंशद्रत्नरैरुष्य-कोटिवृष्टिं विरच्य सः ॥

॥ इति इन्द्रमहोत्सवः ॥

॥ इति जन्मकल्याणक । सप्तमदिनपूजाविधिः ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६३ ॥

### आठमा दिवसनो पूजाविधि ( अठार अभिषेकविधि )

जन्मकल्याणकना विधान वाद प्रियवंदा दासी राजा पासे जाय, त्यां पुत्रजन्मनो वृत्तान्त जणावे, त्यारे राजा (अर्हि श्रावको) पण महोत्सवपूर्वक चार दिवस सुधी पुत्रजन्मसंबंधी क्रिया करे, तेमां पहेला अठार प्रकारनां स्नात्रथी शुद्धि करे एटले के एक नवी कुंडीमां पवित्र जल नाखवुं तेमां वास, चंदन, पुष्प विगेरे थोडां नाखी जे जे प्रकारनुं स्नात्र करवानुं होय ते स्नात्रचूर्ण नाखी तेना चार कलशो भरवा. पछी जिनमुद्राथी+ देव-सन्मुख उभा रहीने दरेक स्नात्र माटे नीचे आपेलां काव्यो तेमज गीत, गान पंचशब्द वाजिन्त्रो साथे मंत्रथी अभिमंत्रित करायेला स्नात्रजलथी अठार स्नात्रो करवां ते आ प्रमाणे—

पहेलुं [हिरण्योदक] स्नात्र

सुवर्णना चूर्णथी [सोनाना वरख मिथित न्हवणथी] चार कलशो भरी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेनो श्लोक बोलवो—  
पवित्रतीर्थनीरेण, गन्धपुष्पादिसंयुतैः । पतज्जलं विम्वोपरि, हिरण्यं मन्त्रपूतनम् [०पावनम्] ॥१॥  
सुवर्णद्रव्यसम्पूर्णं, चूर्णं कुर्यात्मुनिर्मलम् । ततः प्रक्षालनं चाद्भिः, पुष्पचन्दनसंयुतैः ॥२॥\*

+ मुद्राओनी शालुतिओ परिशिष्ट नं. १ मां जुओ ।

\* केटलीक जग्याप नीचेनो मात्र एकज श्लोक पण बोलाय छे—

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६४ ॥

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसंमिश्रम् । पततु जलं बिम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते गन्धपुष्पाक्षतधूपसम्पूर्णैः स्वर्णेन स्नापयामीति स्वाहा”

ए मन्त्रोच्चारपूर्वक स्नात्र करी बिंबने तिलक, पुष्प, वास, धूप विगेरेथी पूजन करवुं. इति प्रथमं हिरण्योदक-  
स्नात्रम् ॥

ए रीते दरेक स्नात्र वखते करता रहेवुं.

बीजुं (पंचरत्न चूर्ण) स्नात्र

मोती, सोनुं, रूपुं, प्रवाल अने तांबु. ए पंचरत्ननुं चूर्ण करी उपरनी जेमज कुंडीमां वास चंदन पुष्पवाला  
पाणीमां नाखी चार कलशो भरी 'नमोऽर्हते' नो पाठ कही नीचेना श्लोको अने मंत्र बोली न्हवण करवुं.

यन्नामस्मरणादपि श्रुतवशादप्यक्षरोच्चारतो, यत्पूर्णं प्रतिमाग्रणामकरणात्संदर्शनात्स्पर्शनात् ।

भक्त्यानां भवपङ्कहानिरसकृत्स्यात्तस्य किं सत्पयः-स्नात्रेणापि तथा स्वभक्तिवशतो रत्नोत्सवे तत्पुनः ॥१॥

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धपुष्पाभिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रचूर्णं, मन्त्राढ्यं स्थापनाविम्बे ॥२॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते मुक्तास्वर्णरौप्यप्रवालज्यम्बकपञ्चरत्नैः स्नापयामीति स्वाहा”

आम दरेक स्नात्र कान्यो अने मंत्र बोलवापूर्वक ते ते स्नात्र करी तिलक, पुष्प, वास, धूप विगेरेथी पूजन  
करवुं. इति द्वितीयस्नात्रम् ।

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६५ ॥

त्रीजुं (कपाय) स्नात्र

कपायचूर्णयुक्त पाणीना कलशो भरी 'नमोऽर्हत्' कही  
प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर-शिरीषच्छल्यादिकल्कसंमिश्रम् । विम्बे कपायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥१॥  
पिप्पली पिप्पलश्चैव, शिरीषोम्बरकः पुनः । वटादिकं महाछल्ली, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥  
“ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते पिप्पल्यादिमहाछल्लैः स्नापयामीति स्वाहा” इति तृतीयस्नात्रम् ॥

चोथुं [मंगलमृत्तिका] स्नात्र

आठ जातिनी माटीनुं चूर्ण करी पाणीमां नाखी चार कलश भरवा-‘नमोऽर्हत्’ कही  
परोपकारकारी च, प्रवरः परमोज्ज्वलः । भावनाभव्यसंयुक्तै-मृच्चूर्णेन च स्नापयेत् ॥१॥  
पर्वतसरोनदीसंगमादि-मृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः । उद्धर्त्य जैनविम्बं, स्नापयाम्यधिवासनासमये ॥२॥  
“ ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते नदीनगतीर्थादिमृच्चूर्णैः स्नापयामीति स्वाहा ” इति चतुर्थस्नात्रम् ॥

पांचमुं (सदोषधि) स्नात्र

ओषधिओनुं चूर्ण करी जलमां नाखबुं अने कलश भरी 'नमोऽर्हत्' कही  
सहदेवी शतमूली, शतावरी शंखपुष्पिका । कुमारी लक्ष्मणा चैव, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥१॥  
सहदेव्यादिसदोषधि-वर्गेणोद्धर्तितस्य विम्बस्य । संमिश्रं विम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥२॥  
“ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते सहदेव्यादिसदोषधिना सह स्नापयामीति स्वाहा” इति पंचमस्नात्रम् ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ६६ ॥

छद्दुं [प्रथमाष्टकवर्ग] स्नात्र

उपलोट वि० आठ वस्तुओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरिने 'नमोऽर्हत्' कही  
नानाकुष्ठाद्योषधि-सन्मिश्रे तद्युतं पतञ्जीरम् । विम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मोषं हन्तु भव्यानाम् ॥१॥  
उपलोटत्रचालोद्-हीरवणीदेवदारवः । ज्येष्ठीमधुक्कुट्टिवृद्धिः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥

“ॐ ह्रीं परम-अर्हते उपलोटायष्टकवर्गेण स्नापयामीति स्वाहा” इति षष्ठस्नात्रम् ॥

सातमुं (द्वितीयाष्टकवर्ग) स्नात्र

पतञ्जारी वि० आठ वस्तुओनुं चूर्ण करी कलश भरवाना पाणीमां नाखवुं.

‘नमोऽर्हत्’ कही—

मेदाद्योषधिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । निपतन् विम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥१॥  
पतञ्जारी विदारी च, कर्चूरः कच्चुरी नखः । कङ्कोडी क्षीरकन्दश्च, मुसलैः स्नापयाम्यहम् ॥२॥

“ॐ हा ह्रीं परम-अर्हते पतञ्जार्यष्टकवर्गेण स्नापयामीति स्वाहा” इति सप्तमस्नात्रम् ॥

आठमुं (सर्वोपधि) स्नात्र

प्रियंगु वि० ३३ औषधिओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरवा  
सुपवित्रमूलिकावर्ग - मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा ।

विम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥१॥

॥ ६६ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिः।  
॥ ६७ ॥

प्रियङ्गुवच्छकंकली, रसालादितरुद्भवैः । पल्लवैः पत्रमल्लघात, एलचीतजसत्फलैः ॥२॥

विष्णुकान्ता हिमवाल-लवङ्गादिभिरष्टभिः । मूलाष्टकरतथाद्रव्यैः, सदौषधिविमिश्रितैः ॥३॥

सुगन्धद्रव्यसन्दोहा-मोदमत्तालिसंकुलैः । विदधेऽर्हन्महारनात्रं, शुभसन्ततिस्त्वंकम् ॥४॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते प्रियङ्गवादिभिः सर्वौषधैः स्नापयामीति स्वाहा” इति अष्टमस्नात्रम् ।

त्यारं पछी गुरु उभा थइ-परमेष्ठिमुद्रा गरुडमुद्रा, अने मुक्ताशुक्तिमुद्रा एत्रण मुद्रायी जिनेश्वरनुं आह्वान करे.  
आह्वान करवानो मन्त्र-“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवेन्द्रमहिताय,  
दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यपरिपूजिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा”

नवमं (पंचगव्यं अथवा पंचामृत) स्नात्रम् ।

पंचामृतेना कलशं भरी ‘नमोऽर्हत्’ कही.

जिनविम्बोपरि निपतंतु, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् । दर्भोदकसन्मिश्रं, पंचगव्यं हरतु दुरितानि ॥१॥

वरपुष्पचन्दनैश्च, मधुरैः कृतनिःस्वनैः । दधिदुग्धघृतमिश्रैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥-

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते पञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा” इति नवमस्नात्रम् ॥

१. २. ३. परिशिष्ट नं. २. ३. ४. जुओ.

प्रतिष्ठादि  
विधियो।  
॥ ६८ ॥

### दशमुं (सुगंधौषधि) स्नात्र

अंवर वि० सुगंधि वस्तुओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरवा 'नमोऽर्हत्' कही-  
सर्वविघ्नप्रशमनं, जिनस्नात्रसमुद्भवम् । वन्दे सम्पूर्णपुण्यानां, सुगन्धैः स्नापयेज्जिनम् ॥१॥  
सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्ध्या घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनविम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥२॥  
“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते अम्बरउशीरादिसुगन्धद्रव्यैः स्नापयामीति स्वाहा” इति दशमस्नात्रम् ॥

### अगीयारमुं (पुष्प) स्नात्र

१ सेवंत्रा २ चमेली ३ मोगरा ४ गुलाब ५ जुई ए पांच जातनां फुलो पाणीमां नाखवां अने कलश  
भरवा 'नमोऽर्हत्' कही  
अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिञ्जल्कराजितं तोयम्,  
तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु विम्बे ॥१॥  
सुगन्धपरिपुष्पौघै-स्तीर्थोदकेन संयुतैः । भावनाभव्यसन्दोहैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥  
“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते पुष्पौघैः स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति एकादशस्नात्रम् ॥

### वारमुं (गन्ध) स्नात्र

१ केसर २ कपूर ३ कस्तूरी ४ अगर ५ चंदन ए घसी जलमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही

प्रतिष्ठादि  
विधिः।

॥ ६९ ॥

गन्धाद्गन्धानिकया, सम्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनविम्बं, कमौघोच्छिद्ये शिवदम् ॥१॥  
कुङ्कुमादिकर्पूरैश्च, मृगमदेन संयुतैः । अगरैश्चन्दनोन्मिथैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते गन्धेन स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति द्वादशं स्नात्रम् ॥

तेरमुं (वास) स्नात्र

१ चंदन २ केशर अने ३ कपूरनुं चूर्ण करी जलमां नाखनुं. कलश भरवा ‘नमोऽर्हत्’ कही—  
हृद्यैराहादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जेनम् । स्नपयामि मुगतिहेतो-र्वासैरधिवासितं विम्बम् ॥१॥  
शिशिरकरकराभैश्चन्दनैश्चन्द्रमिथै-र्बहुलपरिमलौघैः प्रीणितं प्राणगन्धैः ।

विनमदमरमौलिप्रोचतरत्नांशुजालैः, जिनपतिवरशृङ्गे स्नापयेद् भावभक्त्या ॥२॥

“ ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते मुगन्धवासचूर्णैः स्नापयामीति स्वाहा ” ॥ इति त्रयोदशं स्नात्रम् ॥

चौदमुं (चन्दनदुग्ध) स्नात्र

चंदनने दूधना कलशमां नाखी ‘नमोऽर्हत्’ कही  
शीतलंसरसमुगन्धि-मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः ।

चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनविम्बे ॥ १ ॥

क्षीरेणासतमन्मथस्य च महत् श्रीसिद्धिकान्तापतेः, सर्वज्ञस्य शरच्छशाङ्कविशदज्योत्स्नारसस्पर्द्धिना ।  
कुर्मः सर्वसमृद्धयस्त्रिजगदानन्दप्रदं भूयसा, स्नानं सद्विक्रमत्कुशेशयपदन्यासस्य शस्याकृतेः ॥२॥

॥ ६९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ७० ॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते क्षीरचन्दनाभ्यां स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति चतुर्दशस्नात्रम् ॥

पंदरमुं (केशर साकरं) स्नात्र

केशर अने साकरने जलमां नाखी कलश भरी ‘नमोऽर्हत्’ कही

काश्मीरजसुविलिप्तं, विम्बं तन्नीरधारयाभिनवम् ।

सन्मत्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१॥

वाचः स्फारविचारसारमपरैः स्याद्वादशुद्धामृत-स्यन्दिन्या परमार्हतः कथमपि प्राप्यं न सिद्धात्मनः ।

मुक्तिश्रीरसिकस्य यस्य सुरसस्नात्रेण किं तस्य च, श्रीपादद्वयभक्तिभावितधिया कुर्मः प्रभोस्तत्पुनः ॥२॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते काश्मीरजशर्कराभ्यां स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति पञ्चदशस्नात्रम् ॥

[उपर ग्रमाणेनी वावत पहेला दिवसनी कुलमर्यादारूप छे, पछी त्रीजे दिवसे चन्द्र-सूर्यनुं दर्शन करावाय एटले चिंवोने आरीसो देखाडवो, पछी छट्ठे दिवसे धर्मजागरण एटले धर्मस्तुति करवी, पछी दसुठण करवुं.]

सोलमुं (तीर्थोदक) स्नात्र

गंगा आदि एकसो आठ तीर्थोनां पाणी कलशोमां नाखी ‘नमोऽर्हत्’ कही

जलधिनदीद्रहकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, विम्बं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१॥

नाकनदीनदविहितैः, पयोभिरम्भोजरेणुभिः सुभगैः । श्रीमज्जिनेन्द्रपादो, समर्चयेत्सर्वशान्त्यर्थम् ॥२॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूं ह्रौं ह्रः परम-अर्हते तीर्थोदकेन स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति षोडशस्नात्रम् ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ७१ ॥

सत्तरमुं (कपूर) स्नात्र

कपूर कलशमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही  
नक्षिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा मुतीर्थजलमिथा । कपूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१॥  
कनककरकनालीमुक्तधाराभिरदिभः, मिलितनिखिलगन्धैः केलिकपूरभाभिः ।  
अखिलभुवनशान्तिं शान्तिधारा जिनेन्द्र-क्रमसरसिजपीठे स्नापयेद्वीतरागान् ॥२॥

"ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः परम-अर्हते कपूरेण स्नापयामीति स्वाहा" ॥ इति सप्तदशस्नात्रम् ॥

अठारमुं (केशर-चंदन-पुष्प) स्नात्र

केशर, चंदन अने फूल पाणीमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही  
सौरभ्यं घनसारपङ्कजरजोनिःप्रीणितैः पुष्करैः, शीतैः शीतकरावदारुचिभिः काश्मीरसन्मिश्रितैः ।  
श्रीखण्डप्रसवाचलैश्च मधुरैः नित्यं लभेष्टैर्वरैः, सौरभ्योदकसंख्यसार्वचरणद्वन्द्वं यजे भावतः ॥१॥  
"ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः परम-अर्हते केशरचन्दनाभ्यां स्नापयामीति स्वाहा" ए मन्त्र बोली स्नात्र  
करी, तिलक आदिकथी पूजन करी पुष्पांजलि लइ नीचेनो श्लोक बोलयो—  
नानासुगन्धपुष्पांघ-रञ्जिता चञ्चरीकृतनादा । धूपामोदविमिथा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्विम्बे ॥१॥  
पछी "ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः पुष्पाञ्जलिभिरर्चयामीति स्वाहा" ए मन्त्र बोली पुष्पांजलिथी पूजन  
करयुं ।  
॥ इति अष्टादशस्नात्रम् ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ७२ ॥

पछी श्रीसंघसहित अधिकृत जिननी स्तुति आदिकथी देववंदन करवुं ते आ प्रमाणे स्वमा० इरियावहिया  
कही सकलकुशल० अधिकृत जिननुं अगर 'ॐ नमः पार्थनाथाय' चैत्य० कही जंकिंचि, नमुत्थुणं, अरिहंतचेइआणं,  
अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

अईंस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्येन्द्री सकलात्रैहि, रंहसा सहसोच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए अरि० अन्नत्थ० १ नवकारनो काउ० स्तुति करी  
ॐमिति मन्ता य-च्छासनस्य नन्ता सदा यदंहीथि ।

आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी 'पुक्खर० मुअस्स भगव० वंदण० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी स्तुति  
नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रितां रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्त्तिविद्या-नन्दा स्याज्जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी श्री'शान्तिनाथ आराधनार्थं क० का० वंदण० अन्नत्थ १ लोगस्स सागरवर गंभीरां काउ० 'नमोऽर्हत्' कही  
श्रीशान्तिः श्रुतशान्ति-प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सन्तु सन्ति जने ॥४॥

पछी 'सुयदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्' कही स्तुति  
वद ! वदति न वाग्वादिनि !, भगवति ! कः श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।

रत्नचरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

॥ ७२ ॥

पछी 'शासनदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही नीचेनी स्तुति कहेवी.  
उपसर्गवलयविलयन-निरता, जिनशासनावनैकरताः ।

द्रुतमिह समीहितकृते स्युः, शासनदेवता भवताम् ॥६॥

पछी 'श्रीअम्बिकायै करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति  
अम्बा वा-अङ्किताङ्कासौ, सौख्यख्याति ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥७॥

पछी 'अच्छुत्ताए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—  
चतुर्थुना तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु सहस्रया-च्छुसा तुरगवाहना ॥८॥

पछी 'खित्तदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—  
यस्याः क्षत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥९॥

पछी 'समस्त वेया० क० का०' अन्नत्थ १ नव० का० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—  
सहस्रेऽत्र ये गुरुगुणोपनिधौ सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्ट्यो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥

पछी 'नवकार० नमुत्पुणं० जावंति चे० जावंत के० नमोऽर्हत्' कही नीचे आपेल स्तवन बोलवुं—  
ॐमिति नमो भगवओ-अरिहंतसिद्धायरिय उवज्झाय । वरसच्चसाहुमुणिसंघ-धम्मतिस्थप्पवयणस्स ॥१॥  
सप्पणव नमो तह, भगवइ मुअदेवयाए मुढयाए । सिवसंतिदेवयाए, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ७४ ॥

इन्दागणिजमनेरइय-वरुणचाउकुवेरईसाणा । वंभो नागुत्तिदसण्ह-मवि य मुदिमाण पाळाणं ॥३॥  
सोमजमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, सुराडगहाण य नवण्हं ॥४॥  
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुद्वाणं । सिद्धिमविण्वं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणियं ॥५॥

पछी 'जयवीयराय' कही नामस्थापन, पत्रदान अने केशरनां छांटणां करवां.

पछी नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली वस्त्राभरणथी पूजन करवुं—

चञ्चचारुशुचिप्ररोहविसरत्प्रद्योतिताशामुखे, दिव्यश्रीकदिवाकरद्युतिभरादान्तुसदृगोचरे ।

निर्मल्ये विशुचि शुचौ जिनमहे, दिव्यैकदेवाङ्गना-ऽऽनीतैराभरणैरलंकृतमहा देहे दधे वाससी ॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते वस्त्राभरणेन चर्चयामीति स्वाहा ”

पछी नीचेनुं काव्य तथा मन्त्र बोली नैवेद्यपूजन करवुं—

सज्जैः प्राज्याज्ययुक्तैः परिमलवहुलैर्मोदकैर्मिश्रिखण्डैः, स्वाद्याद्यैर्लपनश्रीवृत्तवरपृथुलापूपसारैरुदारैः ।

स्निग्धौघोभिर्नितान्तं चरुभिरभिनरैः कर्मवल्लीकुठारान्,

चापे निर्माय धूर्यान् सुरनरमहितान् चर्चयेदर्हवर्गान् ॥१॥

“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते नैवेद्येन चर्चयामीति स्वाहा” पछी वल्लिवाकुल उडाववा. ॥इति अष्टमदिनपूजाविधिः॥

— अठार स्नात्रमांनी खास खास ओंपधिओनी यादी —

(३) कपाय चूर्णः—१ पीपरा २ पीपली ३ शिरीष ४ उंवरा ५ बड ६ चंपक ७ अशोक ८ आप्र

॥ ७४ ॥

१ जय १० वकुल ११ अर्जुन १२ पाटल १३ वीली १४ दाडम १५ केसूडां १६ नारिंग.

(४) मंगलमृत्तिकाः—१ हाथीना दांतनी २ बळदना शिंगडानी ३ पर्वतनी ४ उदेहीनी ५ नदीना फांठानी ६ नदीओना संगमनी ७ सरोवरनी ८ तीर्थनी.

(५) सर्वोपधिः—१ सद्देवी २ सतावरी ३ कुंवार ४ चालो ५ मोटी नानी रिंगणी ६ मोरशिखा ७ अंकोल ८ शखावली ९ लक्ष्मणा १० आजोफाजो ११ थोर १२ तुलसी १३ मरवो १४ कुंभी १५ गली १६ सरांखो १७ राजहंसी १८ पीठयणी १९ शालयणी २० गंधनोली २१ महानीली.

(६) अष्टवर्ग १ लोः—१ उपलोट २ वज्र ३ लोद्र ४ हीरवणीनां मूल ५ देवदार ६ जेठीमध ७ दुर्वा ८ व्रजिवृद्धि.

(७) अष्टवर्ग २ जोः—१ पतंजारी २ विदारिकंद ३ कचूरो ४ कपूरकाचली ५ नखला ६ फंकोडी ७ खीरफंद ८ मुसली-काळी (घोळी).

(८) सर्वोपधि :— १ प्रियंगु २ हलदर ३ वज्र ४ सूचा ५ चालो ६ मोथ ७ अतिकली ८ मुरमांसी ९ जटामांसी १० उपलोट ११ पलची १२ लवंग १३ तज १४ तमालपत्र १५ नागकेसर १६ जायफल १७ जावंधी १८ फंकोल १९ सेलारस २० चंदन २१ अगर २२ पत्रज २३ छड २४ निखला २५ घडला २६ कचुरो २७ विरहाली २८ छडोली २९ मरचफंकोल ३० वरधारो ३१ आसंधि ३२ वडीओपधि ३३ सहस्रमूली.

(१०) सुगंधोपधि :—१ अम्बर २ चालो ३ उपलोट ४ फष्ट ५ देवदार ६ मुरमांसी ७ वास ८ चन्दन ९ अगर १० कस्तूरी ११ कपूर १२ पलवी १३ लवङ्ग १४ जायफल १५ जावंधी १६ गोरोचन १७ केसर.

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૭૬ ॥

નવમા દિવસનો પૂજાવિધિ

‘ૐમિતિ નમો વંધીષ લિવીષ ૐ હ્રા હ્રીં પરમ-અર્હતે લેશકશાલાકરણમિતિ સ્વાહા”

૧ મન્ત્ર વોલી ગોલ ધાણા, લેખિની અને મયીભાજનનું પ્રદાન કરવું. પછી વિવાહમહોત્સવ કરવો.

પછી પ્રતિષ્ઠા કરનાર શ્રાવકોષ પોતાના હાથથી જિનના જમણા હાથમાં ‘સાહી’ પ્રદાન કરવું. પછી જમણે હાથે સર્વે ચિંતોના સર્વ અંગે પ્રથમથી જ અભિમંત્રિત ઘટ્ટ મુચ્છડ અને કેસરથી અર્ચ, કરવું અને દરેક ચિંતો પાસે ફૂલ, ધૂપ, વાસ વિ. મૂકવાં.

+ + +

પછી ગુરુષ જિનવિમ્વ પ્રત્યે મુરભિમુદ્રા, પદ્મમુદ્રા અને અંજલિમુદ્રા દેખાડવી.

અધિવાસના મન્ત્ર:—

પછી-૧ “ૐ નમઃ શાન્તયે હું શું હું સઃ” અથવા

૨ ૐ નમો સ્ત્રીરાસવલદ્વીણં, ૐ નમો સંમિન્નસોઆણં, ૐ નમો પયાણુસારીણં, ૐ નમો કુદ્ધવુદ્ધીણં  
જમિયં વિજ્ઞં પંડ્યામિ સા મે વિજ્ઞા પસિદ્ધુઽ, ૐ અવતર અવતર. સોમે સોમે, કુરુ કુરુ, વગ્ગુ વગ્ગુ, મુમણે  
સોમણસે, મહુમહુરે ૐ કવિલે કઃ ક્ષઃ સ્વાહા”

૧ વેમાંથી ગમે તે ૧૬ મન્ત્રથી ત્રણવાર મંત્રી, કદ્ધિવુદ્ધિસહિત સવળા દેવોને હાથે મીંદલનું કંકણ વાંધવું. તથા

+ મુદ્રાઓ માટે જુઓ પરિશિષ્ટ નં. ૧.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ७७ ॥

+ +  
बीजा अधिवासमंत्रयी-‘मुक्ताशुक्ति’ अने ‘चक्रमुद्रा’ करीने श्रावकोए बिम्बोनां-मस्तक, वंने स्कंध अने वन्ने  
घुंण एम पांचे अंगोपर स्पर्श करवो तथा धूप उखेववो. पछी गुरुए ‘परमेष्ठिमुद्रा’थी फरीथी नीचे प्रमाणे जिनाहान करवुं.  
“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुखपरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवाधिदेवाय,  
दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा”

+  
ए मंत्रयी त्रणवार आहान करी ‘आसनमुद्रा’ देखाडी वास, कपूर आदिथी पूजन करवुं. श्रावकोए पण  
चंदन, फल, फूल, धूप, वास वि०थी पूजन करीने दशीवालां वस्त्र दोकवां. ते उपर नव श्रीफल मूकवां. तेमज  
श्रावकोए जुदी जुदी जातनां फल, फूल, बलि, जंबीर, रायण, दाडम, करणां, केलां, द्राख, खारेक, सिंघोडां,  
अखरोट, बदाम, कमलकाकडी, पस्तांनां बीज वि० दोकवां. पछी फुलेकुं चडाववुं. स्त्रीओए प्रभुने पाँखवा, ते  
निमित्ते यथाशक्ति सुवर्णजुं दान देवुं. आरती भंगलदीयो करवो. पछी श्रावकोए नवकार भणीने प्रियंगु, बरास,  
कपूर तथा गोरोचनयी वंने हाथे विंचने हस्तमां लेप करवो.

पछी “ॐ आदित्य” इत्यादिक कहीने नवे ग्रहोने बलिदान देवुं, बांट, खीर, करंवो, सेव, कूर,  
लापसी, पुडला, वडां तथा भजीआंना थाल भरीने आगल मूकवां. पछी ग्रीवासूत्र तथा केसरयी रंगेला सूत्रथी

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ ७७ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ७८ ॥

वेष्टित चोरी बांधवी. तोरण सहित मण्डप करवो. तेनी नीचे सिंहासन स्थापन करीने, ते पर प्रतिमा स्थापन करवी. सोनानो कलश प्रतिमा पासे मूकवो. घी गोल सहित चार मंगलदीवा स्थापवा, पछी वांट, खीर, कंसार वेवर, करंवो, कूर, घी, मेवा, पुरी, सुखडी एटलां वानां थालमां भरीने सधवा स्त्री त्यां लावीने मूके. ओवारणां लये तेमज त्यां धान्य अने जल मूके, चार नाना घडा त्यां स्थापे. सुंवालीनां कांकणां करवां. ते घडा उपर जवारानां शरावलां मूकवां, तेमज ते घडाओने ग्रीवासूत्र बांधुं.

पछी गुरुए शक्रस्तवपूर्वक चैत्यवंदन करवुं. तथा चंदन, वास, धूप अने फूल सहित कसुंवी वस्त्रथी तेओनुं मुख ठांकवुं. पछी गुरुए सूरिमन्त्रथी मन्त्रित वासक्षेप विंवना मस्तकपर अधिवासित करवो. अने ते वखते उपर कहा प्रमाणेना १ “ॐ नमः शान्तये हुँ क्षुं हूँ सः” अथवा २ “ॐ खीरासवलद्धीण” इत्यादि अधिवासना मंत्रो भणवा. वस्त्र दूर करवुं.

पछी लग्न समये—

संसारे भोगयोग्या श्रीः, गृहिधर्मश्च कारणम् । भोगफलसाधनार्थं, तस्मान्च करपीडनम् ॥१॥

ए श्लोक भणीने हथेवालां ऋद्धिबुद्धि, सोपारी, केसर, सुखड आदिक मूकवां. तेमज ते वखते “ॐ ह्राँ ह्रीँ ऐँ क्लीँ ह्रौँ अव्यक्ताव्यक्तसम्पन्नाय, संसारभोगकारणाय, मंगलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा” ए मन्त्र पण बोलवो. वाजिंत्र वंगडाववां, धवलमंगल गवडाववां, पोडशांश होम करवो. टीको कराववो. विंवने वस्त्राभूषण पहाराववां. पछी पांच जातना २५ लाडवा मूकवा. मेवो वहेचवो पछी राज्याभिषेक करवो. पछी

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ७९ ॥

जयति जगति यस्य प्राग्भवं सम्यगात्मो-दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।

सुरसरिदमलाम्भोधारया धारणीयं, बहुगुणजिननाथं स्थापयेन्पट्टभोगे ॥१॥

ए काव्य भणी "ॐ ह्राँ ह्रीँ सिंहासनच्छत्रचामराद्यलंकृतैः राज्याभिषेकोऽयं पट्टस्थापनमिति स्वाहा"

ए मन्त्र भणी प्रभुनुं पट्टस्थापन करयुं. इति पट्टस्थापनविधिः ॥

अथ दीक्षामहोत्सवः ।

संवत्सरं दानवरं वराणा-माधारसारैकवचश्चरित्रम् ।

परं पवित्रं पुरुषं पुराणं, पदप्रकृष्टं मुगरिष्ठज्येष्ठम् ॥१॥

ए काव्य भणी "ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते जिननाथाय स्नापयामीति स्वाहा" ए मन्त्र भणी प्रभुने दीक्षास्नान कर्तव्यं.

पछी महोत्सवपूर्वक इन्द्र इन्द्राणीथी परिवर्तित दान देता देता अशोकवृक्षनी नीचे जई सर्व अलंकारोथी रदित पंचमुष्टि लोच करवो. पछी "ॐ नमो सिद्धाणं" ए पाठ भण्या वाद

चारित्र्यचक्रदधतं भुवनैकपूज्यं, स्याद्वादतोयनिधिवर्धनबाल[पूर्ण]चन्द्रम् ।

तत्त्वार्थभावपरिदर्शनयोधदीप-मैश्वर्यवर्धयुमनं विगताभिमानम् ॥१॥

निर्ग्रन्थनाथममलं कृतदर्पनाशं, सर्वाङ्गभासुरमनन्तचतुष्टयाध्यक्ष्यम् ।

मिथ्यात्वपङ्कपरिशोषणवासरेशं, क्रोधादिदोषरहितं वरपुण्यकायम् ॥२॥

॥ ७९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ८० ॥

ए काव्यो भणीने “ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते पञ्चमहाव्रत-पञ्चसमितित्रिगुप्तिधराय, मनःपर्यवज्ञान-विपुल-  
मत्यात्मकाय जिननाथाय नमः स्वाहा” ए मन्त्र भणवो. इति दीक्षाकल्याणकम् ॥

पछी गुरुए चैत्यवन्दनथी प्रारंभी त्रण थोय सुधी कही सिद्धाणं० कही अधिवासनादेवीए करेमि काउ०  
अघ्नत्थ कही १ लोगस्सनो काउ० करी नमो० कही— थोय—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥४॥

पछी ‘सुअदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नवकार० नमो० कही थोय—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गतरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी ‘सन्तिदेवयाए क० का०’ अघ्नत्थ १ नव० नमो० कही थोय—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूया-च्छीमती शान्तिदेवता ॥६॥

पछी ‘अंवयाए देवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नव० नमो० कही. थोय—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥७॥

पछी ‘खित्तदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ १ नव० नमो० कही. थोय—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥८॥

पछी ‘शासनदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नव० नमो० कही. थोय—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥९॥

॥ ८० ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ८१ ॥

पछी 'समस्तवेयावच्च० संति० सम्म० क० का०' अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही.' थोय—  
संवेऽत्र ये गुरुगुणोघनिधौ सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥

पछी प्रगट नवकार, नमुत्थुणं, जावंतिचे०, जावंत० उवसग्गहरं लघुशांति तथा जयवीरराय कहेवा.

॥ इति देवचंदनम् ॥

पछी गुरु वेसी नीचे प्रमाणे धारणा करे अने ते अधिवासना रात्रे थाय "स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसादं मुधियां  
कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्" ॥ इति दीक्षाकल्याणकनवमदिनपूजाविधिः ॥

दशमा दिवसनो पूजाविधि

प्रथम स्नात्रीयाओने कंकण, मीढल, मरडासींग, बहुफली वांधवां.

नीचेना श्लोकपूर्वक दश दिक्पालानुं पूजन करवुं—

शक्राग्न्यन्तकनैर्ऋतेशवरुणश्रीवायुवस्वेश्वरा, ईशानोऽब्जभवः प्रभूतफणिभृदेवा अमी सर्वतः ।

निघ्नन्तो दुरितानि शीघ्रमभितस्तिष्ठन्तु पूजाक्षणे, स्वस्वस्थानमनेकधा द्युतिभृतः प्रोद्यद्विकृष्टासयः ॥१॥

॥ इति दिक्पालपूजा ॥

पछी नीचेना श्लोकथी ग्रंथोनुं पूजन करवुं—

॥ ८१ ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ८२ ॥

+ भानुश्चन्द्रनिशाकरद्युतिकरौ, भौमं बुधं निर्मलं; शान्तिं निर्विघ्नं करोति च गुरुः शुक्रं करोति स्वयम् ।  
पीडादूरीकृतं शनैश्चरमतं तत्कारमाराधकं, राहुं केतुसमाश्रितं च भवता पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥१॥

॥ इति नवग्रहपूजा ॥

नीचेना शान्तिबलिमंत्रथी बलिवाकुला त्रणवार मन्त्री प्रतिष्ठास्थाननी दशे दिशाओमां नाम लङ् लङ्ने  
धूप, दीप, वास, बलिवाकला, फूल, अक्षत, पाणी सहित नाखवा.

शान्तिबलिमन्त्र—“ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने—

सकलातिशेषकमहा—सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥

सर्वामरसुसमूह—स्वामिकसंपूजिताय न जिताय । भुवनजनपालनोद्यत—तमाय सततं नमस्तस्मै ॥

ॐ नमो भगवते सर्वदुरितौघनाशनकराय, सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच—शाकिनीनां प्रमथनाय ॥

ॐ नमो भगवति विजये अपराजिते जयतीति जयावहे ।

सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे, साधूनां शान्तितुष्टिपुष्टिप्रदे, स्वस्तिदे, भव्यानां ऋद्धिवृद्धिनिर्वृतिनिर्वाणजननि,  
सत्त्वानामभयप्रदाननिरते, भक्तानां शुभावहे, सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते ।

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जन्तूनां । श्रीसम्पत्कीर्तियशो—वर्धनी जयदेवि ! विजयस्व ॥

+ भानुं चन्द्रं निर्मलं भूमिपुत्रं, सौम्यं, शान्तं देवपूज्यं सशुक्रम् ।

शौरिं राहुं केतुयुक्तं सुपुण्यैः, संशान्त्यर्थं पूजयेद् भावभक्त्या ॥१॥

॥ ८२ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ ८३ ॥

रोगजलज्वलनविषधरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमारीचौरेतिश्चापदोषसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष, शिवं कुरु कुरु, तुष्टिं  
कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो नमः ह्रीं ह्रीं हूं हूं हः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा” ।

पञ्ची १ देवचन्दन करवुं तेमां चैत्यचन्दनपीत्रणः स्तुतिः सुधी कक्षा बाद सिद्धाणं । अधिवारानादेवयाए  
(प्रतिष्ठादेवयाए) क० का० अन्नत्थ १ लोगस्सनो काउ० नमो० कही- थोय-

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनचिम्बं सा विशतु, देवता मुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

शासनदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय-

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥५॥

खिचदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमोऽ० कही थोय-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥६॥

सन्तिदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय-

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूया-च्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥७॥

समस्तवेया० सन्ति० सम्म० समा० क० का० अन्नत्थ १ नव० नमो० कही थोय-

संवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधौ मुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ देवचन्दन ७२ मा पाना उपरधी करवुं.

॥ ८३ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८४ ॥

पछी प्रगट नवकार नमु० जावंति चे० जावंत० नमो० उवसग्ग० जय० कहेवा ॥ इति देववन्दनम् ॥  
पछी कसुंबी वस्त्र ढांकवुं, गुरुए वज्रपंजर—‘ॐ परमेष्ठि० आत्मरक्षा, ‘ॐ नमो अरिहंताणं हृदये’ शुची-  
करण तथा सकलीकरण, करी मुक्ताशुक्ति अथवा चक्रमुद्रा सहित अधिवासना मन्त्र खूव उच्च स्वरे बोलवो.  
स्वागता जिनाः, ॐ नमो खीरासवलद्धीणं तथा सूरिमन्त्र एम दरेक मंत्र त्रणवार बोली प्रभुजी उपर वासक्षेप  
कर्या वाद श्रावकोए सर्व विंघप्रत्ये धूप उखेववो तेमज विंव उपर ढांकैलुं वस्त्र दूर करवुं पछी गुरुए लग्न नजीक आवतां  
जंचा सादे तथा जंचा श्वासथी विंवना ललाटपर “ह्रा”, वंने लोचनपर “श्री”, हृदयपर “ह्री”, संधिनां  
स्थानोपर “ऐ” अने प्राकारपर “श्लौ” एवा अक्षरो स्थापवा. पछी त्यां घीनुं पात्र मूकवुं पछी नीचेनां  
काव्य अने मंत्रथी त्रणवार जिननुं आह्वान परमेष्ठि मुद्राथी करवुं— काव्य—

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योतिताशं, विषयविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।

शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनैर्वै—जिनपतिवरगन्धैश्चर्चयेद्भक्तिभावात् ॥१॥

धातिक्षयोद्भूतविशुद्धबोधाः, प्रबोधिताशेषविशेषत्रात्म(विज्ञान) ।

सुरेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवन्द्याः, समर्चयेत् श्रीजिननायकान् ज्ञः ॥२॥

मन्त्रः—“ॐ ह्राँ ह्रीँ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुत्तरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीमहिताय, इन्द्रपरि-  
पूजिताय, देवाधिदेवाय, दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय, अष्टमहाप्रातिहार्यधराय आगच्छ आगच्छ स्वाहा” ।

॥ इति जिनाह्वानम् ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८५ ॥

पछी नीचेना मन्त्रथी अधिष्ठायकदेवनुं आह्वान करवुं—

मन्त्र—“ॐ ह्रीं क्लृप्तादिवर्धमानान्ताः तीर्थंकरपरमदेवाः, तेषां प्रतिहारदेवाः शासनदेवा देव्यश्च प्रत्येक-  
मेकादश देवाः छत्रधरचामरधरौ, कुण्डलधारकौ, सिंहासनोभयपार्श्वस्थौ दीपधूपधरौ (२) शासनयक्षौ इमे सर्वे  
देवाः अत्र आगच्छन्तु आगच्छन्तु अवतरन्तु अवतरन्तु ॐ आं ह्रीं क्लीं नमः स्वाहा”

। इति अधिष्ठायकदेवाह्वानम् ।

स्थापनमन्त्रः—“ॐ ह्रीं क्लृप्तादिवर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषामधिष्ठायका देवाः ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठन्तु  
तिष्ठन्तु स्वाहा” । इति स्थापनम् ।

पछी नीचेना मन्त्रथी सन्निहित (नजीक) करवा—

सन्निहितमन्त्रः— “ॐ ह्रीं क्लृप्तादिवर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषामधिष्ठायका देवाः ॐ ह्रीं मम  
सन्निहिता भवन्तु वषट्” पछी १ देववन्दन तथा क्षमापना करवी, । इति सन्निहितकरणम् ।

पछी श्रीखण्ड, तंडुल, कुम्भारना चाकनी माटी, समूलो डाम, सोनुं, रूपुं, तांबुं, मोती, लोडुं ए सर्वे  
प्रतिमा नीचे स्थापवां. तेमज “ॐ जये ह्रीं सुभद्रे नमः ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा” ए मन्त्र भणी स्थिरी-  
करण करवुं.

पछी सुवर्णना पात्रमां लालमुरमो, वरास, कस्तूरी, साकर अने घी मिश्रित करी नीचेना मन्त्रथी मन्त्रित करवां.

१ देववन्दन ८० मा पाना उपरथी करवुं.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८६ ॥

“ॐ हँ हाँ हीँ हीँ हूँ हैँ हौँ हः हूं हाँ ह्रीँ ह्रूं ह्रौँ ह्रूः विम्बप्रदेशे सिद्धाञ्जनाय नमः ॐ ह्रीँ  
अर्हद्ज्ञानाधिपतिर्दिव्यज्योतिः प्रकटय प्रकटय स्वाहा”

पछी स्थिरलग्न अने शुभनवमांश आवे त्यारे अंजनने सुवर्णनी सळी परलइनीचेनो मन्त्र बोलवापूर्वक  
अञ्जन करवुं.

अञ्जमन्त्र-ॐ हाँ ह्रीँ ह्रूं ह्रैँ ह्रौँ ह्रूः अर्हन् अञ्जने अवतर अवतर क्षयूँ ह्रूं केवलज्ञानज्योतिः  
प्रकटय प्रकटय स्वाहा”

पछी नीचेनो मन्त्र भणी विंवने आरीसो देखाडवो—

“ॐ हाँ ह्रीँ परमार्हन् केवलज्ञानकेवलदर्शनसिद्धाञ्जने स्थिरीभव हुं फूट् ॐ ह्रीँ सर्वज्ञाय लोकालोकप्रकाशकाय  
नमः स्वाहा”

पछी प्रतिमाना मस्तक पर वासक्षेप करवो.

पछी “ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये अपराजिते ॐ ह्रीँ स्वाहा”

ए मन्त्रथी जमणे काजे श्रीखण्ड, कपूर, केसर देइ पोतानो जमणो हाथ एज मन्त्रपूर्वक विंवना हाथपर  
राखवो तेमज एज मन्त्र भणी ‘+चक्रमुद्रा’थी प्रतिमाना सर्व अंगे स्पर्श करवो. पछी दहीनुं पात्र देखाडवुं.

पछी धूप उखेववो पछी दृष्टिरक्षा, सौभाग्य अने स्थिरतां माटे सौभाग्यमुद्रा, सुरभिमुद्रा, प्रवचनमुद्रा, अंजलिमुद्रा,

+ जुओ परिशिष्ट १. चक्रमुद्रा नं. ८ १/१०, २/५, ३/१३, ४/७,

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८७ ॥

अने गरुडमुद्राओ करी नीचेना मन्त्रनो ऋणवार न्यास करवो.

न्यासमन्त्रः—“ॐ अवतर अवतर, सोमे सोमे, कुरु कुरु, वग्गु वग्गु, निवग्गु निवग्गु, सुमणे सोमणसे  
महु महुरे ॐ कविले ॐ ह्रीं कः क्षः स्वाहा” पछी वास धूप करवो.

पछी पद्ममुद्राए नीचेना मन्त्रथी विवने समयसरणमां वेसाडवा—“ॐ इदं रत्नमयमासनमलङ्कुरुर्वन्तु इहोप-  
विष्टान् भव्यालोकयन्तु हृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा”. तेमज मंत्राक्षरसहित ऋण नवकार गणी वासक्षेप करवो.  
तथा \*३६० करियाणानो पडो हाथपर मूकवो. त्यां चार स्त्रीओए पोंखणुं करवुं. तेज स्त्रीओना हाथे यथाशक्ति  
सुवर्णदान देवडावयुं.  
। इति केवलज्ञानकल्याणकमहोत्सवः ।

पछी फुलवासनी वृष्टि कस्वी, धूप करवो, देववंदन करवुं. तेना चैत्य०नां काव्यो—  
\*आकाशगामित्वचतुर्मुखत्वं, विश्वेश्वरत्वामितवीर्यताघम् । प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं, नमोनमस्तीर्थकराय तस्मै ॥१॥  
देवेन्द्रवन्द्यमुनिसेवितपादपद्मं, सत्प्रातिहार्यविभवाङ्कितमक्षयं च ।  
नाभेयमात्मगुणपूरितसर्वलोकं, चिद्रूपविजितं प्रणमामि भवत्या ॥२॥

५/३, ६/६.

\* ३६० करियाणानुं लिस्ट जुओ परिशिष्ट २

\* कल्याणकलिकामां आ श्लोको पाना नं. ८८ उपर लीधेल फूटनोट प्रमाणे छे.

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ८८ ॥

सिंहासने रत्नमयूखचित्रे, ह्यशोकवृक्षाश्रितदिव्यकायम् ।

छत्रत्रयं भाति जिनस्य मूर्ध्नि, सच्चामरैर्नित्यविराजमानम् ॥३॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शिवदं प्रकामम् ।

नष्टाष्टकर्मनिचयं च हिरण्यगर्भं, चिद्रूपरूपविजितं प्रणमामि भक्त्या ॥४॥

गजेन्द्रसिंहादिभयास्समुद्र-सङ्ग्रामसर्पादिमहोदराद्याः ।

यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्य-स्तस्मात्तमर्चे प्रवरं जिनेन्द्रम् ॥५॥

जंकिंचि० नमु० अरि० अन्नत्थ० जे तीर्थं करनी प्रतिष्ठा होय ते स्तुतिथी मांडी चार थोय सुधी कही  
नमु० जावंति० जावंत० ते जिननुं स्तवन० जय० कहेवा।  
। इति देववन्दनम् ।

कल्याणकलिकामां आ प्रमाणे श्लोको छे.

आकाशगामित्वचतुर्मुखत्वं, विश्वेश्वरत्वाऽमितवीर्यताद्याः ।

प्रिया हिता चागपि यत्र नित्यं नमो नमस्तीर्थकराय तस्मै ॥ १ ॥

देवेन्द्रवन्द्यमनिमेषनिसेविताद्भिन्नं, सत्प्रातिहार्यविभवाश्रितमाप्तमुख्यम् ।

लोकातिशायिचरितं वरितं गुणौघै-श्चिद्रूपमस्तवृजिनं हि जिनं नमामि ॥ २ ॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च । भामण्डलं दुन्दुभिरातपन्न-मेतैर्युतं नमि जिनेशरूपम् ॥३॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शरणं गुणानाम् ।

नष्टाष्टकर्मकलिलं विजितान्तरारिम्, रूपं व्रजामि शरणं जितशीतभानोः ॥ ४ ॥

गजेन्द्रसिंहादिभयाः समुद्र-संग्रामसर्पाग्निमहोदराद्याः ।

यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्यः, सदा तमर्चे शिवदं जिनेन्द्रम् ॥ ५ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.

॥ ૮૯ ॥

પછી નીચેનાં કાવ્યો તથા મન્ત્ર મળી સ્નાત્ર (નિવળ) કરાવવું. કાવ્યો—  
સર્વાપાયવ્યપાયાદધિગતવિમલજ્ઞાનમાનન્દસારં, યોગીન્દ્રં ધ્યેયમગ્યં ત્રિભુવનમહિતં યત્તથાવ્યક્તરૂપમ્ ।  
નીરન્ત્રં દર્શનાદ્યં શિવમશિવદરં દિશ્વસંસારપાશં,

ચિત્તે સંચિન્તયામિ પ્રકરમવિકટં મુક્તિકાન્તામુક્તાન્તમ્ ॥૧॥  
સ્થં સિદ્ધ પ્રસિદ્ધં સુરનરમહિતં દ્રવ્યભાવદ્વિકર્મ-પર્યાયધ્વંસલઘ્નાભયપુરવિલસદ્રાગ્યમાનન્દરૂપમ્ ।  
ધ્યાયેદ્ધિધ્યાતકર્મા-સકલમવિકલં સૌખ્યમપ્યૈદિકં સદ્,

બ્રહ્મોપેતં પ્રમોદાદસમસુખમયં શાશ્વતં હેલયૈવ ॥૨॥  
મન્ત્ર-“ૐ હ્રાં હ્રીં પરમાર્હતે અષ્ટકર્મરહિતાય સિદ્ધિપદં પ્રાપ્તાય પારંગતાય સ્નાપયામીતિ સ્વાહા” પછી  
“ૐ હ્રીં અર્હં સિદ્ધાય નમઃ” એ મન્ત્ર મળી નવ અંગે પૂજન કરવું. પછી ઉદાર અને ઉદાત્ત સ્વરથી નીચેનું  
કાવ્ય ૧૦૮ વાર બોલતાં ૧૦૮ સ્નાત્ર કરવાં. કાવ્ય—

ચક્રે દેવેન્દ્રસાજૈઃ સુરગિરિશિખરે યોડભિષેકઃ પપોભિ-નૃત્યન્તીભિઃ સુરીભિર્લલિતપદગમં તૂર્યનાદૈઃ સુદીપ્તૈઃ ।  
કર્તા તસ્યાનુકારં શિવગુણજનકં મન્ત્રપૂતૈઃ સુકુમ્ભૈ-વિંશ્વં જૈનં પ્રતિષ્ઠાવિધિવચનપરઃ સ્નાપયામ્યત્ર કાલે ॥૧॥

પછી ચૈત્ય૦ કરવું. પછી નીચેના ભૂતવલિમન્ત્રથી વલિદાન મન્ત્રવું.

ભૂતવલિમન્ત્રઃ-“ૐ નમો અરિહંતાણં, ૐ નમો સિદ્ધાણં, ૐ નમો આયરિયાણં, ૐ નમો ઉવજ્ઞાયાણં,  
ૐ નમો લોષ સબ્ધસાહૂણં, ૐ નમો આગાસગામીણં, ૐ નમો ચારણાશ્લક્ષ્મીણં, જે ઇમે કિન્નરકિંપુરુસમહોરગગરુલ-

॥ ૮૯.



પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.  
॥ ૯૦ ॥

સિદ્ધગંધવ્વજ્રક્ષરક્ષસપિસાયપેયડાયિણિપ્પભિઙ્ગો જિણઘરનિવાસિણો નિયનિયનિલયઠિયા પવિયારિણો સન્નિહિયા અસન્નિહિયા ય તે સવ્વે વિલેવણ-ધૂવ-પુપ્ફ-ફલ-પર્ફવ-સણાહં વલિં પડિચ્છંતા, તુટ્ટિકરા ભવંતુ, શિવંકરા ભવંતુ, સંતિકરા ભવંતુ, સત્થયણં કુવ્વંતુ, સવ્વજિણાણં સન્નિહાણપભાવઓ પસન્નભાવત્તણેણ સવ્વત્થ રક્ખં કુણંતુ, સવ્વત્થ દુરિયાણિ નાસંતુ, સવ્વાસિવમુવસમંતુ સંતિ-તુટ્ટિ-પુટ્ટિ-સિવ-સુત્થયણકારિણો ભવંતુ સ્વાહા.”

પછી તે વલિ ધૂપ, વાસ અને ફલ સહિત કરી દશ દિક્પાલ અને નવગ્રહનાં નામ લઈ લઈ નાખવો. પછી શ્રાવકોષ વંને હાથમાં ફૂલ લઈ નીચેના મન્ત્રો ઋણી વલિદાન કરવું.

“ૐ હમ્યાં ગંધાહ્નઃ પ્રતીચ્છન્તુ સ્વાહા, ૐ હમ્યો ધૂપં ભજન્તુ સ્વાહા, ૐ હમ્યે ભૂતવલિં જુષન્તુ સ્વાહા.” પછી કુસુમાંંજલિ લઈ નીચેના મન્ત્રથી ત્રણવાર વિમ્બ સામે નાખવી.

“ૐ હમ્યે સકલસત્ત્વલોકમવલોકય ભગવન્નવલોકય અવલોકય સ્વાહા.”

પછી શ્રાવકોષ પહેલાં કરેલી સર્વ પૂજા દૂર કરવી; તેમજ ચંદન, કેશર, ફૂલ, આંગી, વસ્ત્ર, આભરણ આદિકથી સઘલી નવી પૂજા કરવી. તેમજ આગલ કરેલું સર્વ વલિદાન પણ દૂર કરવું. દાન દેવું. તથા વીજેરાં આદિ ફલ, લાડુ, સુખડી, મેવો મુખવાસ વિ. નૈવેદ્ય મૂકવું. પછી લૂણ ઉતારણ વિધિપૂર્વક કપૂર, ઘી અને સાકરથી આરતિ અને મઙ્ગલદીવો કરવો. । ઇતિ નિર્વાણકલ્યાણકમ્ ।

પછી ગુરુષ સંઘ સાથે ચૈત્યંથી ત્રણ થોય સુધી કહ્યા વાદ ‘પ્રતિષ્ઠાદેવતાવિસર્જનાર્થં કા. કરું’ ઇચ્છં પ્ર. દે. વિ. ક. કા. વંદણ. અન્નત્થ. ૧ લોગસ્સનો ચન્દેસુ નિમ્મલયરા સુધી કાઉ. નમો કહી. થોય-

प्रतिष्ठादि  
विधिः।  
॥ ९१ ॥

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीनजिविम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

पछी सुअदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव नमो० कही. थोय—

वद वदति न चाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी संतिदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो कही. थोय—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमिच्छादि । सम्पादितहितसम्प-न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥६॥

पछी खित्तदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही. थोय—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

पछी शासनदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो कही. थोय—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः ।

द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भदताम् ॥८॥

पछी समस्तवेया० संति० सम्म० क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय—

संवेऽत्र ये गुरुगुणीपनिधौ गृवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥९॥

पछी नवकार, नमुत्थुणं०, जावंतिवे०, जावंत० नमो० स्तवन अजितशान्ति अथवा मोटीशान्ति जय०

पछी श्रावकोए अखंड चोखा जेर सवापांच प्रमाणनो थाल गुरु पासे मूकवो. श्रावकोए पुष्पांजलि लड तथा

गुरुए अखण्ड चोखानी वे हाथे अंजलि लइ श्री संघ सहित उभा रही नीचे प्रमाणेनो मङ्गल पाठ बोली  
श्रावकोए पुष्पांजलि तथा गुरुए चोखा उछालवा. मङ्गलपाठ—

जह सिद्धाण पइढा, \*समग्गलोगस्स मज्झयारंमि । आचंदसूरियं तह, होउ इमा सुप्पइद्वत्ति ॥१॥

जह सग्गस्स पइढा, समग्गलोगस्स मज्झयारंमि । " " " " " ॥२॥

जह मेरुस्स पइढा, दीवसमुदाण मज्झयारंमि । " " " " " ॥३॥

जह जम्बूस्स पइढा, समत्थदीवाण मज्झयारंमि । " " " " " ॥४॥

जह लवणस्स पइढा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि । " " " " " ॥५॥

धम्माऽधम्मागासा—त्थिकायमयस्स सव्वलोगस्स । जह सासया पइढा, एसा वि य होउ सुपइढा ॥६॥

पंचणह वि सुपइढा, परमिद्वीणं जहा सुए भणिया । नियया अणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपइढा ॥७॥

पछी गुरुए 'प्रवचनमुद्राथी' नीचे प्रमाणे प्रतिष्ठाना गुणोनुं वर्णन करवा पूर्वक धर्मदेशना आपवी.

राया बलेण वइढइ, जसेण धवलेइ सयलदिसि नाए । सो पुण वइढइ विउलं, सुपइढा जस्स देसंमि ॥१॥

उवहणइ रोगमारिं, दुब्बिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे । भावेण कीरमाणा, सुपइढा सयललोयस्स ॥२॥

जिणविम्बपइद्वं जे, करिंति तह कारविंति भत्तीए । अणुमन्नंति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो हुंति ॥३॥

दव्वं तमेव मन्ने जिणविम्बपइद्वणाइकज्जेसु । जं लग्गइ तं सहलं, दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥४॥

\* तिलोअंचूडामणिम्मि सिद्धिपप । पाठा० ।

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ.

॥ ૯૩ ॥

एवं नाऊण सया, जिणवरविम्बस्स कुणह सुपइहं । पावेह जेण जरमरण-वज्जियं सासयं ठाणं ॥५॥

પછી વિમ્બ આગલ પડદો કરી શ્રીસંવના મુખમાં તંબોલ આપવાં. પછી શ્રીસંવે વિમ્બનાં મુસ ઉઘાડવા નિમિત્તે ફલ વિ. ઢોકવા. પછી ચૈત્ય. કરવું. પછી પ્રતિષ્ઠા કરાવનાર શ્રાવકે મોટો મીઠો લાડવો મૂકવો.

ए रीते दश दिवस सुधी महोत्सवविधि करवो.

૧૦ પ્રકારનાં નૈવેદ્ય:-કૂરલાંડધી, લીરલાંડધી, ઘેવર, દહીંકૂરલાંડ, લાપસી, ગોલપુધરી, મીઠો વાટ (મીઠી થૂલી), પચાન્ન, ગુંજા સિંધોડાં અને નારંગી નાલીપર વિ. ફલ ધરાવવાં.

પછી "ૐ વિસર વિસર સ્વસ્થાનં ગચ્છ ગચ્છ" એ મન્ત્રથી નંદ્યાવર્તનું વિસર્જન કરવું.

પછી નીચેનો શ્લોક તથા મન્ત્ર ભળી અબ્જલિમુદ્રાથી પ્રતિષ્ઠાદેવનું વિસર્જન કરવું.

देवदेवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहूताश्चतुर्विधाः । ते विधायाहतां पूजां, यान्तु सर्वे यथागताः ॥१॥

મન્ત્ર-"ૐ વિસર વિસર પ્રતિષ્ઠાદેવતે સ્વસ્થાનં ગચ્છ ગચ્છ યઃ યઃ યઃ સ્વાહા"

પછી નીચેનો શ્લોક તથા મન્ત્ર ભળી સર્વ દેવતાઓનું વિસર્જન કરવું.

ये देवदेवीगणनागयक्षाः, समागतास्ते कृतशान्तिकृत्याः ।

जिनेश्वरं विम्बविधानपूर्णं, मनोरथाः स्वं सदनं प्रयान्तु ॥१॥

મન્ત્ર-"હ્રીં વિસર વિસર સર્વે સુરાઃ સ્વસ્થાનં ગચ્છત ગચ્છત યઃ યઃ યઃ સ્વાહા".

પછી 'મોટીશાન્તિ' વોલવી શાન્તિધારા દેવી, ચન્દન, પુષ્પ અને ધૂપ વિ. વિધિ કરવો પછી કઢૂણ

॥ ૯૩ ॥

પ્રતિષ્ઠાદિ  
વિધિઓ ।  
॥ ૯૪ ॥

છોડવું અને નીચેની ગાથા બોલવી.

<sup>૧</sup>થુડદાણમન્તનાસો, <sup>૨</sup>આહવળં <sup>૩</sup>તહ <sup>૪</sup>જિનાણ <sup>૫</sup>દિસિવંધો । <sup>૬</sup>નેતુમ્મીલણદેસણ-ગુરુઅહિગારા છ <sup>૭</sup>ઇહ કપ્પે ॥

॥ ઇતિ દશમદિન-પૂજાવિધિઃ ॥

એ રીતે પ્રતિષ્ઠિત કરેલાં નવીન જિનવિમ્બોને દેવાલયમાં સ્થાપન કરવાં, પણ તે પહેલાં ચાકની માટી અને દર્ભનો સ્વસ્તિક કરવો. વધી જગાએ વલિક્ષેપ કરવો તેમજ આઠ થોયનું દેવવંદન કરી ક્ષેત્રદેવતાની સ્તુતિ કહેવી.

વિમ્બની સ્થાપના અને દૃષ્ટિ-વારશાખના આઠ ભાગ કરી તેમાં ઉપરનો આઠમો ભાગ છોડી સાતમા ભાગ પર મૂલનાયક વિમ્બની સ્થાપના કરવી અને એ સાતમા ભાગના આઠ ભાગ કરી આઠમો ભાગ છોડી સાતમા ભાગ પર દૃષ્ટિ સ્થાપવી.

“ૐ કૂર્મ ! નિજપૃષ્ઠે જિનવિમ્બં ધારય ધારય સ્વાહા” એ મન્ત્રથી સાત વાર પૃથ્વી મન્ત્રી વિમ્બને સ્થાપન કરવાં અને “ૐસ્થાવરે તિષ્ઠ તિષ્ઠ સ્વાહા” એ મન્ત્ર સાત વાર મળવો. પછી સુગંધધૂપ વિ.થી અષ્ટપ્રકારી પૂજન કરવું પછી ચૈત્યં કરવું અને સ્તવનની જગ્યાએ શાન્તિ કહેવી.

પછી પક્વાન્ન વિ. નૈવેદ્ય અને ફલાદિથી ચિત્રવિચિત્ર પૂજા કરવી અને પ્રતિમાસ્થાપન પછી ‘લઘુશાન્તિ, મ્હોટીશાન્તિ, અજિતશાન્તિ, મયહરવસગ્ગહરં, થુણિમો કેવલિં અને તિજયપહુત્ત સ્તોત્ર મળવાં અને અદ્વાઇમહોત્સવ કરવો.

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।  
॥ ९५ ॥

चौदपूर्वी-पंचमश्रुतकेवली श्रीभद्रवाहुस्वामीए विद्याप्रवादपूर्वमांथी उद्धृत प्रतिष्ठाकल्पमांथी श्री जगच्चन्द्र-  
सूरीश्वरे जे प्रतिष्ठाकल्प उद्धर्यो हतो तेना आधारे आ प्रतिष्ठाकल्प वाचक श्रीसकलचन्द्रगणिए रच्यो अने ते  
पहेलांना-भट्टारक श्रीहरिभद्रसुरिकृत-हेमाचार्यकृत-इयामाचार्यकृत-भट्टारकगुणरत्नाकरसुरिकृत प्रतिष्ठाकल्पोनी साथे  
श्रीविजयदानसूरीश्वर समक्ष मेलवी शोधन कर्तुं.

। समाप्तः श्रीसकलचन्द्रजीकृतप्रतिष्ठाकल्पः ।

+ सकलीकरणविधिः-“ॐ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष रक्ष, ॐ नमो  
आयरियाणं शिखां रक्ष रक्ष, ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं सर्वशरीरं रक्ष रक्ष, ॐ नमो लोए सव्वसाहुणं असम् रक्ष रक्ष”  
आ प्रमाणे सर्व ठेकाणे आचार्ये त्रण वार मन्त्रन्यास करवो. इति सकलीकरणविधिः ।

शुचिविद्याः-“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं,  
ॐ नमो लोए सव्वसाहुणं, सात वार गणवी.

\*ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणलद्धीणं, ॐ इहः क्षः नमः, ॐ अशुचिः शुचिर्भगमि स्वाहा”

+ सकलीकरणविधि, शुचिविद्या अने वलिमन्त्रण जो के प्रतिष्ठाकल्पमां आयी जाय छे पण, चारंवार आवतां  
होवाथी स्याल माटे अलग पाढी आपवामां आवेल छे.

\* ॐ नमो सव्वोसद्धिपत्ताणं ॐ नमो विज्जाहराणं इत्यादि कलिकायाम् ।

१ इहः क्षः इति आगाचार्याम् । कं क्षं नमः इति कलिकायाम् ।

॥ ९५ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ९६ ॥

आ मन्त्रथी आचार्ये सर्व अङ्ग पवित्र करवां. केटलाकना मते स्नात्रीयाओ पण आनाथी ज अङ्गरक्षा करे.

गुरुए बलि मन्त्रवानो मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्ष्मीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” आ मन्त्र २१ वार बोलवो.

— +प्रतिष्ठा—विधिः —

अथातः संप्रवक्ष्यामि, प्रतिष्ठालक्षणं स्फुटम् । जिनशास्त्रानुसारेण, नत्वा वीरं जिनोत्तमम् ॥१॥

इह तावदादौ निष्पन्नविम्बस्य महोत्सवेन शुभवारातिथिनक्षत्रयोगेषु आयतने प्रतिष्ठास्थाने कृतविचित्र-  
वस्त्रोल्लोचे पूर्वोत्तरदिग्भिमुखस्य स्थापना, जघन्यतोऽपि हस्तशतप्रमाणक्षेत्रशुद्धिः, तत्र च गन्धोदकपुष्पप्रकरादिभिः  
सत्कारः, अमारिघोषणं, राजपृच्छनं, विज्ञानिकसन्माननं, सङ्घाह्वानं, महोत्सवेन पवित्रस्थानाज्जलानयनं, वेदिका-  
रचना, दिक्पालस्थापनं, स्नपनकाराश्च समुद्राः, सकङ्कणाः, अक्षताङ्गाः, दक्षाः, अक्षतेन्द्रियाः, कृतविम्बस्थापनानन्तरं  
श्रीखण्डरसेन ललाटे ‘ॐ ह्रीं’, हृदये ‘ॐ ह्रीं’, जान्वोः ‘ह्रीं’, पादयोः ‘क्ष्मीं’, इति बीजाक्षरा न्यसनीयाः  
“ॐ नमोऽर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा” इति कवचरक्षा, अखण्डितोज्जलवेपा, उपोषिता, धर्म-  
बहुमानिनः, कुलजाश्चत्वारः करणीयाः, तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणा-  
भिर्विशुद्धशीलाभिः सकङ्कणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्नकपायमाङ्गल्यमृत्तिकामूलिकाऽष्टवर्गसर्वोपध्यादीनां वर्त्तनं कारणीयं

+ निर्वाणकलिका, आचारदिनकर, विधिमार्गप्रपा, सुबोधा[चान्द्रीय]सामाचारी, तिलकाचार्यकृत प्रतिष्ठाकल्प,  
गुणरत्नसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प तथा नामोल्लेख सिवायना अन्य घणा प्रतिष्ठाकल्पोमां वास्तविक आ प्रमाणेनी  
अञ्जनशलाका—प्रतिष्ठाविधि हती ते आपवामां आवेल छे.

॥ ९६ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।

॥ ९७ ॥

क्रमेण, ततो भूतबलिपूर्वकं विधिना पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नानं, ततः स्नानं प्रत्यग्रवस्त्रपरिधानः स्नात्रकारपुक्तः शुचिरूपोपितो भूत्वा पूर्वं प्रतिमाग्रतश्चतुर्विधश्रमणसङ्घसहितोऽधिकृतस्तुत्या देववन्दनं करोति, ततः शान्तिनाथ-श्रुतदेवी-शासनदेवी-अम्बिका-ऽच्छुम्भा-समस्तवैयाघ्रच्यकराणां कायोत्सर्गं, ततः स्नानं कङ्कणमुद्रिकाहस्तः सदश-वस्त्रपरिधानः आत्मनः सकलीकरणं शुचिविद्यां चारोपयति, तच्चेदम्-“ॐ नमो अरिहंताणं हृदये ॐ नमो सिद्धाणं शिरसि ॐ नमो आयरियाणं शिखायां ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं ॐ नमो लोए सच्चसाहूणं अस्त्रं” त्रिस्त्रिर्मन्त्रन्यासः।

। इति सकलीकरणम् ।

ततः-“ॐ नमो अरिहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो लोए सच्चसाहूणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ हः क्षः नमः” इति शुचिविद्या, अनया त्रिपञ्चसप्तवारानात्मानं परिजपेत्, ततः स्नपनकारानभिमन्त्र्याभिमन्त्रितदिशा बलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते, “ॐ ह्रीं क्ष्मीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” इत्यनेन एकविंशतिवारान् पठित्वा बल्यभिमन्त्रणं, कुसुमाञ्जलिक्षेपः अभिनवमुगन्धविकसित-पुष्पोद्भूता सुधूपगन्धादद्या । विम्बोपरि निपतन्ती, मुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥१॥

तदनन्तरमाचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन शतर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया, तदनन्तरं वामकरे जलं गृहीत्वा प्रतिमा छण्टनीया, ततस्तिलकं पूजनं च प्रतिमायाः मुद्गरमुद्रादर्शनम् अक्षतभूतस्थालदानं वज्रगरुडादिमुद्राभिर्विम्बस्य वज्ररक्षामन्त्रेण (बलिमन्त्रेण) “ॐ ह्रीं क्ष्मीं” इत्यादिना कवचं करणीयं दिग्बन्धाश्चानेनैव त्रिस्त्रिः पठनेन,

१ मुद्राभो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

॥ ९७ ॥



श्रावकाः सन्तधान्यं (मुष्टिप्रायेण) सण १ लाज २ कुलत्थ ३ यव ४ कङ्क ५ उडद ६ सर्पप ७ रूपं प्रतिमोपरि  
क्षिपन्ति, जिनमुद्रया कलशाभिमन्त्रणं जलाद्यभिमन्त्रणम् । जलाद्यभिमन्त्रणमन्त्रार्थे—

“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आ ३ आप ४ ज ४ जलं गृह्ण स्वाहा” इति जलाभिमन्त्रणमन्त्रः ।

“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु २ गन्धान् गृह्ण ३ स्वाहा ” इति गन्धाधिवासनमन्त्रः ।  
सर्वोषधिचन्दनममालम्बनमन्त्रश्च ।

“ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण २ स्वाहा” इति पुष्पाधिवासनामन्त्रः ।

“ॐ नमो यः सर्वतो वलिं दह २ महाभूते तेजोऽधिपते धुधुधूपं गृह्ण २ स्वाहा” धूपभिमन्त्रणमन्त्रः ।

ततः पञ्चरत्नकग्रन्थिरङ्गुल्यां (दक्षिणस्यां) बध्यते ततः पञ्चमङ्गलसूचकं मुद्रामन्त्राधिवासितैर्जलादि-  
द्रव्यैर्गीततूर्यपूर्वकं सुकुशलस्नात्रकारैः स्नात्रकरणं, तद्यथा हिरण्यकलशचतुष्टयस्नानम्—

मुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसम्मिश्रम् । पततु जलं विम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥१॥

सर्वस्नात्रेष्वन्तरा शिरसि चन्दनटिक्कं पुष्पारोपणं धूपश्च १ । पञ्चरत्नजलस्नानम्—

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रवर्णं मन्त्रादयं म्यापनाविम्बे ॥२॥

कपायस्नानम्—

१. मे इति कलिकायां नास्ति.

पञ्चाशत्थोदुम्बर-१ शिरीषल्ल्यादिकल्कसन्मृष्टे । बिम्बे कपायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥३॥

मृत्तिकास्नानम्—

पर्वतसरोनदीसङ्गमादि-मृद्धिश्च मन्त्रपूतामिः । उद्धर्त्य जैनबिम्बं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

पठ्चगव्यस्नानम्—

जिनबिम्बोपरि निपतद्-घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् । दध्मोदकसंमिश्रं, २पठ्चगव्यं हरतु दुरितानि ॥५॥

सदीपधिस्नानम्—

सहदेव्यादिसदीपधि-वर्गेणोद्धतितस्य बिम्बस्य । सन्मिश्रं बिम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥६॥

मूलिकास्नानम्—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा । बिम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥७॥

प्रथमाष्टकवर्गस्नानम्—

नानाकुण्डाद्यौपधि-सन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् । बिम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मोद्यं हन्तु भव्यानाम् ॥८॥

द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम्—

मेदाद्यौपधिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । ३निपतन् बिम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥९॥

१ घटकादिवल्कसंछेदम् ।

२ गवम् इति प्रप्रायां पाठः सामाचार्यामपि ।

३ जिनबिम्बोपरि निपतत् [प्रप्रायां सामाचार्यां दिनकरेऽपि] ।

प्रतिष्ठादि  
विधौ ।

॥ १०० ॥

ततः स्वरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया परमेष्ठिमुद्रया वा प्रतिष्ठाप्य देवताऽऽहानं तदग्रतो भूत्वा  
ऊर्ध्वः सन् करोति—“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मु उपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगतायाष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधि-  
देवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ २ स्वाहा” इत्यनेन । दिक्पालाश्चाहूयन्ते—“ॐ इन्द्राय सायुधाय  
सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थाषने आगच्छ २ स्वाहा १, ॐ अग्नये सायुधाय आगच्छ २ स्वाहा” इत्यादिना,  
शेषाणामप्याहानं कुर्यात्, पुष्पाणामञ्जलिक्षेपश्च ।

सर्वोपधिस्नानम् —

सकलोपधिसंयुक्त्या, सुगन्धया वर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनविम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥१०॥

ततः—“सिद्धजिनादि” मन्त्रः स्वरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्पेण तत्काले विम्बे न्यसनीयः, स चायम्—

‘आगच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमये महानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा’ ‘हुं क्षाँ ह्रीं क्ष्वीं १ क्ष्वीं  
हूँ भः स्वाहा’ इत्ययं वा । ततो लोहेनास्पृष्टश्चेत्सिद्धार्थरक्षापोटलिका करे बन्धनीया, तदभिमन्त्रणमन्त्रः—  
२ ‘ॐ क्षाँ क्ष्वीं ह्रीं स्वाहा’, चन्दनटिक्कं च, ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्ध्वा विज्ञप्तिकावचनं कार्यं, तच्चेदं—

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

१ क्ष्वीं ओँ इत्यादि प्रपायाम्, क्षुं दिनकरे, क्षीं स्वीं ।

२ क्षाँ क्षीं क्ष्वीं स्वाहा इति प्रपायां मन्त्रः ।

॥ १०० ॥

‘स्वागता जिनसिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादधिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्’ ततो-  
+ ५५ जलिमुद्रया गुवर्णभाजनस्थाध्यं मन्त्रपूर्वकं निवेदयेत्, स च-‘ॐ भः अर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः  
स्वाहा’ सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चाध्यं मुच्यते । ततः-

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा । वायुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च ॥१॥

‘ॐ इन्द्राय आगच्छ अर्घ्यं प्रतीच्छ २ पूजां गृह्ण २ स्वाहा’ एवमेव शेषाणामपि नवानामाहानपूर्वक-  
मर्घ्यनिवेदनं च कार्यम् । ततः कुशुमस्नानम्-

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिमुपृतं, कलशोन्मुक्तं पततु विम्बे ॥११॥

ततो गन्धस्नानिकास्नानम्-

गन्धाद्रस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनविम्बं, कर्मोघोच्छिद्ये शिवदम् ॥१२॥

गन्धा एव शुकुवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति । ततो वासस्नानम्-

हृद्यैराहादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि मुगतिहेतोर्विम्बमधिवासितं वासैः ॥१३॥

ततः चन्दनस्नानम्-

शीतलसरसमुगन्धि-मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनविम्बे ॥१४॥

ततः कुङ्कुमस्नानम्-

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ १०२ ॥

कश्मीरजसुविलिप्तं, विम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धचर्थम् ॥१५॥

तत आदर्शकदर्शनं ततस्तीर्थोदकस्नानम्—

जलधिनदीहृदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, विम्बं स्नपयामि सिद्धचर्थम् ॥१६॥

ततः कर्पूरस्नानं—

शशिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु विम्बे ॥१७॥

ततः कस्तूरिकास्नानम्—

मन्त्रपवित्रितपयसा, प्रकृष्टकस्तूरिकासुगन्धयुजा । विहितप्रणताभ्युदयं, विम्बं स्नपयामि जैनेन्द्रम् ॥

अतिसुरभिवहुलपरिमल—वासितपानेन मृगमदस्नानैः ।

मन्त्रैः कृतैः पयोभिः, स्नपयामि शिवाढ्यजिनविम्बम् ॥१८॥

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः —

नानासुगन्धपुष्पौघ—रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्विम्बे ॥१८॥

ततः शुद्धजलकलशैः अष्टोत्तरशत—१०८ स्नानविधिः—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभिः—नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।

कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै—विम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

ततोऽभिमन्त्रितचन्दनेन सूरिर्वामकरधृतप्रतिमां दक्षिणकरेण सर्वाङ्गमालेपयति, कुसुमारोपणं, धूपोत्पाटनं,

॥ १०२ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिर्भा।  
॥ १०३ ॥

+ + +  
वासनिक्षेपः, गुरभिमुद्रादर्शनं, पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दृश्यते, अञ्जलिमुद्रादर्शनं च ततः प्रियङ्गुकूर्पूराङ्गोरोचनाहस्तलेपः  
अधिवासनामन्त्रेण करे ऋद्धिवृद्धिसमेतमदनफलाख्यकङ्कणवन्धनं, स चायम्—“ॐ नमो खीरासवलदीणं ॐ नमो  
महुयासवलदीणं ॐ नमो संभिन्नसोर्दणं ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्टबुदीणं जमिधं विज्जं पउंजामि सामे  
विज्जा पसिज्जउ ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ ॐ वग्गु निवग्गु मुमणे सोमणसे महुमहुरए कविले ॐ कः क्षः  
म्याग” अधिवासनामन्त्रः यद्वा “ॐ नमः शान्तये हुं धुं हुं सः” कङ्कणमन्त्रः ५ । अधिवासनामन्त्रेणैव  
+ +  
मुक्ताथुक्ता विम्वे पश्चाद्गर्गः—मस्तक १ खांध २ जानु २ वार ७, चक्रमुद्रया वा । धूपथ निरन्तरं दातव्यः,  
+  
परमेष्ठिमुद्रां सूरिः करोति, पुनरपि जिनाह्वानं, ततो निपद्यायामुपविश्य नन्द्यावर्त्तं १ मध्याह्नभृति पूजयेत्, सदशा-  
व्यङ्गवद्देण तमाच्छादयेत्, तदुपरि नालिकेरप्रदानं कार्यं तदुपरि प्रतिष्ठाप्यविम्वस्थापनं, चलप्रतिष्ठाख्यापनाय  
विचित्रयन्त्रिविधानं, यथा—जम्बीर—बीजपूरक—नालिकेर—पनसा—ऽऽम्र—दाडिमादिप्रशस्तफलकन्दमूलद्वौकनं, ततश्चतुः-  
कोणेषु वेदिकायाः पूर्वव्यस्तायाश्चतुस्तनुवेष्टनं चतुर्दिशं श्वेतवारकोपरि गोधूमग्रीवियवानां यववारकाः स्थाप्याः,  
चातुस्त्रीरिकरम्बककीसररूससिद्धविडिपूयली इति सप्त वलिशरावाणि दीयन्ते, पुनस्तन्तुसहितसहिरण्यचन्दनचर्चित-

+ मुद्राधो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

१ श्वद्विम्बस्याधो बलकवियुक्तोऽपि नन्द्यावर्त्तः स्थाप्यते इति कस्यचिदाशयः (ता. टी.)

॥ १०३ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिः।

॥ १०४ ॥

कलशाश्चत्वारः प्रतिमानिकटे स्थाप्यन्ते, घृतगुडसमेतमङ्गलप्रदीपाः ४ स्वस्तिकपट्टस्य चतसृष्वपि दिक्षु सकपर्द-  
कसहिरण्यसजलसधान्यचतुर्वारकस्थापनं, तेषु च मुकुमालिकाकङ्कणानि करणीयानि यववाराश्च स्थाप्याः, पूर्णचतुः-  
सूत्रेण वेष्टनं वारकाणाम्, ततः शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं कृत्वाऽधिवासनालग्नसमये पुष्पसमेतऋद्धिवृद्धियुतमदनफला-  
रोपणपूर्वकं चन्दनयुक्तेन पुष्पवासधूपप्रत्यग्राभिवासितेन वस्त्रेण वदनाच्छादनं माइसाडी चारोप्यते, तदुपरि चन्दनच्छटा  
सूरिणा सूरिमन्त्रेणाधिवासनं च वारत्रयं कार्यं, ततो गन्धपुष्पयुक्तसप्तधान्यस्नपनमञ्जलिभिः, तच्चेदम्—सालि—यव—  
गोधूम—मुद्ग—वल्ल—चनक—चवलका इति, पुष्पारोपणं धूपोत्पादनं, ततः स्त्रीभिरविधवाभिश्चतसृभिरधिकाभिर्वा  
प्रोक्षणकं यथाशक्त्या हिरण्यदानं च, ताभिरेव पुनः प्रचुरलङ्घुकादिवलिकरणं, पुटिकाः ३६० दीयन्ते, ततः श्राद्धा  
आरात्रिकाऽवतारणं मङ्गलदीपं च कुर्वन्ति, चैत्यवन्दनं कायोत्सर्गोऽधिवासनादेव्याः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम्, तस्या  
एव स्तुतिः—

विधाशेषसुवस्तुषु मन्त्रै—र्याऽजसमधिवसति वसतौ । सेमामवतरतु श्री—जिनतनुमधिवासनादेवी ॥१॥

यद्वा—पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता भवने । साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥२॥

ततः श्रुतदेवी २ शान्ति ३ अम्बा ४ क्षेत्रदेवी ५ शासनदेवी ६ समस्तवैया० ७ कायोत्सर्गाः ।

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥

पुनरपि धारणोपविश्य कार्या सूरिणा, 'स्वागता जिनाः सिद्धाः' इत्यादिनेति ॥

अधिवासनाविधिरयम्—अधिवासना रात्रौ, दिवा प्रतिष्ठा प्रायसः कार्या, इतरथाऽपि कञ्चित्कालं स्थित्वा

॥ १०४ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।

॥ १०५ ॥

विभिन्ने प्रतिष्ठालङ्घने प्रतिष्ठा विधेया, तत्र प्रथमं शान्तिबलिः चैत्यवन्दनं प्रतिष्ठादेवतायाः कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं, ततः स्तुतिदानम्—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनविम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

शासनदेवी १ क्षेत्रदेवी २ समस्तवैया० ३, धूपमुत्क्षिप्याच्छादनमपनयेत् लग्नसमये, ततो घृतभाजनमग्रे कृत्वा सौवीरकघृतमधुशर्कराभूतरूप्यवर्तिकायां सुवर्णशलाकया प्रतिमानेत्रोन्मीलनं वर्णन्यासपूर्वकं, यथा—ह्रीं ललाटे, श्रीं नयनयोः, ह्रीं हृदये, रं सर्वसन्धिषु, श्रीं सिंहासने विलिख्य प्राकारेण वेष्टयेत्त्रिगुणं व्योम्नि अन्ते क्रीं समालिखेत्, प्राकारः कुम्भकेन न्यासः शिरसि अभिमन्त्रितवासदानं दक्षिणकर्णे श्रीखण्डादिचर्चित आचार्यमन्त्रन्यासः, प्रतिष्ठामन्त्रेण त्रिपञ्चसप्तवारान् सर्वाङ्गं प्रतिमां स्पृशेत् +चक्रमुद्रया, सामान्ययतिं प्रति मन्त्रो यथा—“वीरे २ जयावीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते स्वाहा” अयं प्रतिष्ठामन्त्रः, ततो दधिभाण्डकादर्शकदर्शनं दृष्टेध्वक्षूरक्षणाय सौभाग्याय स्थैर्याय च समुद्रा मन्त्रा न्यसनीयाः, “ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २” इत्यादिकं, ततः +सौभाग्यमुद्रादर्शनं १, +मुरभिमुद्रा, २, +प्रवचनमुद्रा ३, +कृताञ्जलिः ४ गरुडा पर्यन्ते पुनरप्यवमननं(प्रोक्षणं)स्त्रीभिः, इह च स्थिरप्रतिमाधः घृतवर्तिकाश्रीखण्डतन्दुलयुतपञ्चधातुकं कुम्भकारचक्रमृत्तिकासहितं पूर्वमेव निम्ननिवेशसमये न्यसेत्, ततः “ॐ स्थावरे तिष्ठ २ स्वाहा” इति स्थिरीकरणमन्त्रो न्यसनीयः चलप्रतिष्ठायां तु नैषः, नवरं चलप्रतिमाधः सशिरस्कदर्भो चालुका च प्रथमत एव वामाङ्गे न्यसनीया, तत्र च—“ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे नमः” इति मन्त्रश्च न्यस्यः, ततः +पद्ममुद्रया रत्नासनस्थापनं कार्यमिति वदता यथा—“इदं

+ मुद्राभो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ १०५



प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ १०६ ॥

‘रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्ट्या जिनाः स्वाहा,’ ततः ‘ॐ ह्ये गन्धान्  
प्रतीच्छन्तु स्वाहा ॐ ह्ये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा ॐ ह्ये धूपं भजन्तु स्वाहा ॐ ह्ये भूतवर्णि जुपन्तु स्वाहा’  
ॐ ह्ये सकलसत्त्वालोककर! अवलोकय भगवन् ! अवलोकय स्वाहा’ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत्,  
ततो वस्त्रालङ्कारादिभिः समस्तपूजा माइसाडी कङ्कणिकारोपश्च पुष्पारोपणं वल्यादिश्च मौरिंडासुंहालियप्रभृतिको  
दीयते, ततो लवणावतारणं आरात्रिकस्यावतारणं मङ्गलग्रदीपस्य च कारणं, ततः सङ्खेन सहितः चैत्यचन्दनं  
कायोत्सर्गाः श्रुतदेव्यादीनां ‘सुयसंतिखेत्तपवयणाईण’ तिवचनात् शक्रस्तवपाठः शान्तिस्तवभणनं, ततोऽखण्डाक्षताञ्ज-  
लिभृतलोकसमेतेन मङ्गलग्नाथापाठः कार्यः नमोऽर्हत्सिद्धाचार्येत्यादिपूर्वकं यथा-

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोयचूडामणिमि सिद्धिपण । आचंदसरियं तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥१॥

जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोयस्स मज्झयारंमि । ” ” ” ” ” ॥२॥

जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुदाण मज्झयारंमि । ” ” ” ” ” ॥३॥

जह जंबुस्स पइट्ठा, जंबुदीवाण मज्झयारंमि । ” ” ” ” ” ॥४॥

जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि । ” ” ” ” ” ॥५॥

इति पठित्वाऽक्षतान् त्रिः क्षिपेत्, पुष्पाञ्जलींश्च क्षिपेत्, ततः प्रवचनमुद्रया स्वरिणा धर्मदेशना कार्या,  
ततः सङ्खदानं मुखोद्घाटनं दिनत्रयं पूजा अष्टाह्निकापूजा वा, तत्रापि प्रशस्तदिवसे ३।५। स्नात्रं कृत्वा जिनवर्णि

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ १०६ ॥

विधाय भूतवर्लिं प्रक्षिप्य चेत्यवन्दनं विधाय कङ्कणमोचनाद्यर्थं प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्यैव पठनं, श्रुतदेवी १, शान्ति०—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसम्प-न्नामग्रहणं जयतु शान्तेः ॥१॥

क्षेत्र०, चैया० कायोत्सर्गः, ततः सौभाग्यमन्त्रन्यासपूर्वकं मदनफलोत्तारणं, स च-‘ॐ अवतर २’ इत्यादि, ततो नन्द्यावर्त्तपूजनं विसर्जनं च, ‘ॐ विसर २ स्वस्थानं गच्छ २ स्वाहा,’ नन्द्यावर्त्तविसर्जनमन्त्रः । ‘ॐ विसर २ प्रतिष्ठादेवते ! स्वाहा’ इति प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमन्त्रः । प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादशमासिकरूपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरे अष्टाद्विकाविशेषः, पूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थि निबन्धयेत्, उत्तरोत्तरपूजा च यथा स्यात्तथा विधेयम्, एवम्—

लेप्पाइमए वि विही, विंचे एसेव किंतु सविसेसं । कायव्वं ण्हाणार्इ, दप्पणसंकंतपडिविम्बे ॥१॥

‘ॐ क्षीं नमः’ अम्बिकादीनामधिवासनामन्त्रः । ‘ॐ ह्रीं क्षूं नमो वीराय स्वाहा,’ तेषामेव प्रतिष्ठामन्त्रः, यद्वा ‘ॐ ह्रीं क्ष्मीं स्वाहेति’ देवीप्रतिष्ठामन्त्रः । \*पश्चान्नन्द्यावर्त्तलेखनं पूजनं च कार्यम् ।

॥ समाप्तः संक्षिप्तप्रतिष्ठाविधिः ॥



प्रतिष्ठादि  
विधिः।

॥ १०८ ॥

— अथ जिनविम्ब-परिकर-प्रतिष्ठाविधिः —

यदि जिनविम्बेन सह परिकरो भवति तदा जिनविम्बप्रतिष्ठायामेव वासक्षेपमात्रेण परिकरप्रतिष्ठा पूर्यते ।  
१ प्रथमभूते परिकरे पृथक्प्रतिष्ठा विधीयते ।

परिकराकारो यथा-विम्बाधो गजसिंहकीचरूपाङ्कितं सिंहासनं पार्श्वयोश्चमरधरौ तयोर्बहिश्चाञ्जलिकरौ मस्तकोपरि क्रमोपरिस्थं छत्रत्रयं तत्पार्श्वयोरुभयोः काञ्चनकलशाङ्कितशृण्डाग्रं श्वेतगजद्वयं गजोपरि झञ्झरवाद्य-  
कराः पुरुषाः तदूर्ध्वयोः मालाकारौ शिखरे शाङ्खवीयाः तदुपरि कलशः मतान्तरे-सिंहासनमध्यभागे हरिणद्वय-  
तोरणाङ्कितं धर्मचक्रं तत्पार्श्वयोरुभयोः ग्रहमूर्तयः एवं निष्पन्ने परिकरे विम्बप्रतिष्ठोचिते लग्ने-भूमिशुद्धिकरणं,  
अमारिघोषणं, सङ्गाहानम्, बृहत्स्नात्रविधिना जिनस्नात्रं, लघुपञ्चवलयनन्द्यार्चनस्थापनम्, तत्पूजनम्, कलश-  
प्रतिष्ठावत् । ततः परिकरे सप्तधान्यपूर्वकं वर्द्धापनं अङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन रौद्रदृष्ट्या वामहस्तचुलुकेन जला-  
च्छोटनम्, अक्षतघृतपात्रदानम्, ततः 'ॐ ह्रीं श्रीं जयन्तु जिनोपासकाः सकला भवन्तु स्वाहा' इति मन्त्रेण  
परिकरस्य गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यैः पूजनं सदशवस्त्रेणाच्छादनं ततश्च तिसृभिः स्तुतिभिश्चैत्यवन्दनं ततः शान्ति-  
श्रुत-क्षेत्र-भवन-शासन-वैयाघृत्यकर-प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गस्तुतयः पूर्ववत् ततः सम्प्राप्तायां लग्नवेलायां द्वादश-  
भिर्मुद्राभिः सूरिमन्त्रेण वासमभिमन्त्र्य सर्वजनं दूरतः कृत्वा एभिर्मन्त्रैर्वासक्षेपं विदध्यात् मन्त्रो यथा—

१ पृथग्भूते ।

॥ १०८ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो।

॥ १०९ ॥

“ॐ ह्रीं श्रीं अग्रतिचक्रे धर्मचक्राय नमः” इति धर्मचक्रे वासक्षेपस्त्रिः ।

“ ॐ वृणि च द्रां ऐं ऌं ठः ठः क्षां क्षीं सर्वग्रहेभ्यो नमः” इति ग्रहेषु वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं श्रीं आधारशक्तिकमन्त्रासनाय नमः” इति सिंहासने वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भक्तेभ्यो नमः” इति चामरकरद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं विमलवाहनाय नमः” इति राजद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ पुष्करेभ्यो नमः” “इति मालाद्वये वासक्षेपस्त्रिः ” “ ॐ श्रीशाङ्गधराय नमः ” इति शाङ्गधरे

वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ पूर्णकलशाय नमः” इति कलशे वासक्षेपस्त्रिः ।

ततोऽनेकफलनैवेद्यदौकनम्, पुनर्जिनस्नात्रं बृहत्स्नात्रविधिना, ततश्चैत्यवन्दनम् । प्रतिष्ठादेवताविसर्जन-  
कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं भजनं च नन्द्यावर्चविसर्जनं पूर्ववत् । अष्टाद्विकामहोत्सवः । सङ्घपूजनं ।  
दीनमार्गणपोषणं । जलपट्टप्रतिष्ठायां तु जलपट्टोपरि बृहन्नन्द्यावर्चस्थापनम् । तत्पूर्ववत् जलपट्टे क्षीरस्नात्रं  
पञ्चरत्ननिक्षेपः वासमन्त्रेण वासनिक्षेपः । नन्द्यावर्चविसर्जनम् । इति जलप्रतिष्ठा । तोरणप्रतिष्ठायां तु बृहत्स्नात्र-  
विधिना जिनस्नात्रं मुकुटमन्त्रेण तोरणे द्वादशमुद्राभिर्मन्त्रितवासक्षेपः । मन्त्रो यथा—“ॐ अ आ इ ई उ ऊ  
ऋ ॠ इत्यादि हकारपर्यन्त नमो जिनमुत्पत्तिमुकुटकोटिसंयद्रितपदाय इति तोरणे समालोकय समालोकय स्वाहा ”

। इति तोरणप्रतिष्ठा । इति प्रतिष्ठाधिकारे परिकरप्रतिष्ठाविधिः सम्पूर्णः ॥

॥ १०९ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिः।

॥ ११० ॥

॥ अथ कलशारोपणविधिः ॥

तत्र भूमिशुद्धिः गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः, आदितः एव कलशाधः पञ्चरत्नकं-<sup>१</sup>सुवर्णं-<sup>२</sup>रूप्यं-<sup>३</sup>मुक्ता-<sup>४</sup>प्रवाल-<sup>५</sup>लोह-  
कुम्भकारमृत्तिकासहितं न्यसनीयम् । पवित्रस्थानाज्जलानयनं प्रतिमास्नात्रं नन्धावर्त्तपूजनं शान्तिवलिः सोदक-  
सर्वोपधिर्वर्त्तनं स्त्रीभिः (४) स्नात्रकाराभिमन्त्रणं सकलीकरणं शुचिविद्यारोपणं चैत्यवदनं शान्तिनाथादिकायोत्सर्गः ।  
श्रुतं १ शान्ति २ शासन ३ क्षेत्र ४ समस्तवैया० ५ नमुत्थुणं स्तवनं लघुशान्तिं जयवीयरायः कलशे कुसुमाञ्ज-  
लिक्षेपः । तदनन्तरमाचार्येण मध्याह्नगुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनु वामकरे जलं गृहीत्वा  
कलशः आच्छोद्यनीयः । तिलकं पूजनं च । मुद्गरमुद्रादर्शनम् । “ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा” ।

चक्षुरक्षा कलशस्य सप्तधान्यकप्रक्षेपः<sup>१</sup> द्विरण्यकलशचतुष्टयस्नानं<sup>२</sup> सर्वोपधिस्नानं<sup>३</sup> मूलिकासनानं<sup>४</sup> गन्धोदक-<sup>५</sup>वासोदक-  
चन्दनोदक-<sup>६</sup>कुङ्कुमोदक-<sup>७</sup>कर्पूरकुसुमजलकलशस्नानं<sup>८</sup> पञ्चरत्नसिद्धार्थकसमेतग्रन्थिवन्धः । वामकरधृतकलशस्य दक्षिण-  
करेण चन्दनेन सर्वाङ्गमालिप्य पुष्पसमेतमदनफलकृद्धिवृद्धियुतारोपणम् । कलशपञ्चाङ्गस्पर्शः, धूपदानं, कङ्कणवन्धः,

स्त्रीभिः प्रोक्षणं,<sup>१</sup> सुरभी-<sup>२</sup>परमेष्ठि-<sup>३</sup>गरुड-<sup>४</sup>अञ्जलि-<sup>५</sup>गणधर-मुद्रादर्शनम्, सूरिमन्त्रेण वारत्रयाधिवासनम् । “ॐ  
स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा” वस्त्रेणाच्छादनं, जम्बीरादिफलोहलिवलेर्निक्षेपः । तदुपरि सप्तधान्यकस्य च आरात्रि-

॥ ११० ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिभो ।  
॥ १११ ॥

कावतारणं चैत्यवन्दनम् । स्तुतित्रिकानन्तरम् सिद्धा० अधिवासनादेव्याः कायोत्सर्गः । चतुर्विंशतिरतवचिन्ता । तस्याः स्तुतिः—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्राऽवतरतु जने, कलशेऽधिवासनादेवी ॥  
शां० १ अं० २ समस्तधै० ३ । तदनन्तरं नमु० तः जयवीथिरायान्तं तदनु शान्तिवर्लिं क्षिप्त्वा शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं शान्तिभणनं प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गः । चतुर्विंश० । यदधिष्ठिता० प्रतिष्ठास्तुतिदानम् । अक्षता-  
अलिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथापाठः कार्यः । नमोऽर्हत् सिद्धा०

जह सिद्धाण पइद्दा० ॥ जह सग्गस्स पइद्दा० ॥ जह मेरुस्स पइद्दा० ॥ जह लवणस्स पइद्दा, समत्थ-  
उदहीण मज्झयारंमि० ॥ जह जम्बुस्स पइद्दा, जम्बुदीवस्स मज्झयारंमि ॥ आचंद० ॥ पुष्पाञ्जलिप्रक्षेपः ।  
धर्मदेशना ॥

॥ इति कलशप्रतिष्ठाविधिः ॥

— अथ ध्वजारोपणविधिः —

भूमिभुद्धिः, गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः । अमारिघोषणम् । संघाटनम् । दिक्पालस्थापनम् । +वेदिका-  
विरचनम् । नन्धावर्त्तलेखनम् । ततः ध्वजः कंकणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः सकलीकरणं शुचिविधां चारो-  
पयति । ग्नपनकारानभिमन्त्रयेत् । अभिमन्त्रितदिशाञ्जलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते । “ॐ ह्रीं क्ष्मीं  
सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा” इति बल्यभिमन्त्रणम् । दिक्पालाह्वानम्—ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय

॥ १११ ॥

+ आरतिश्लोकः— दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषजं चिन्म । तद् गच्छत्यनिदूरं, भविककृताराग्रिकविधाने ।

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।

॥ ११२ ॥

ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा । एवं-ॐ<sup>२</sup> अग्नये-ॐ<sup>३</sup> यमाय-ॐ<sup>४</sup> नैऋतये-ॐ<sup>५</sup> वरुणाय-ॐ<sup>६</sup> वायवे-ॐ<sup>७</sup>  
कुवेराय-ॐ<sup>८</sup> ईशानाय-ॐ<sup>९</sup> ब्रह्मणे-ॐ<sup>१०</sup> नागाय-आगच्छ आगच्छ स्वाहा । शान्तिवलिपूर्वकं विधिना मूलप्रतिमा-  
स्नानम् । तदनु चैत्यवन्दनं संवसहितेन (नंदिना देववन्दन करवा स्तवन लघुशांति) गुरुणा कार्यम् । 'वंशे-अभिनव-  
सुगंधि विकसित' कुमुदाञ्जलिक्षेपः, तिलकं पूजनं च । हिरण्यकलशादिस्नानानि पूर्ववत् । कनक-पञ्चरत्न-कपाय  
-मृत्तिका-मूलिका-अष्टवर्ग-सर्वोपधि-गन्ध-वास-चन्दन-कुङ्कुम-तीर्थोदक-कण्पूर ( तत इक्षुरस-घृतदधिदुग्ध )-  
स्नानम् । वंशस्य चर्चनम् । पुष्पारोपणम् । लग्नसमये सदशवस्त्रेणाच्छादनम् । + मुद्रान्यासः । चतुःस्त्रीप्रोक्षणकम् ।  
ध्वजाधिवासनं कासधूपादिप्रदानतः । '× ॐ श्रीं ठः'-ध्वजावंशस्याभिमन्त्रणम् इत्यधिवासना । जवारक-फलोहलि-  
वलिहौकनम् । \* आरात्रिकावतारणम् । अधिकृतजिनस्तुत्या चैत्यवन्दनम् । स्तुतित्रिकानन्तरं शान्तिनाथकायोत्सर्गः  
पश्चात् श्रुदे० १ शान्तिदे० २ शासनदे० ३ अम्बिकादे० ४ क्षेत्रदे० ५ अधिवासनादे० ६ कायोत्सर्गः । चतु-

+ चार खुणे चार नव नव इंचनी वेदिकाओ घनावची.

+ चक्रमुद्राथी दंडने सर्व जग्याण स्पर्श करवो. अने सुरभि-परमेष्ठि-गरुड-अंजलि अने गणधरमुद्रा देखाडवी ।

× ७-२१ के १०८ वार मन्त्र भणवो ।

\* श्लोक कलशप्रतिष्ठामां जुओ ।

॥ ११२ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ११३ ॥

विंशतिस्तवचिन्तनं तस्या एव स्तुतिः—‘पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा० । समस्तवैयावृत्यकरकायोत्सर्गः । स्तुति-  
दानम् । उपविश्य शक्रस्तवपाठः । शान्तिस्तवादिभजनम् । बलिसप्तधान्यफलोहलिवासपुष्पधूपादिवासनम् । ध्वजस्य  
चैत्यपार्श्वेण प्रदक्षिणाकरणम् । शिखरे पुष्पाञ्जलिः । कलशस्नानम् । ध्वजागृहे मर्कटिकारूपे पञ्चरत्ननिक्षेपः ।  
इष्टांशे ध्वजानिक्षेपः । ‘ॐ श्रीं ठः’ अनेन सूरिमन्त्रेण वासक्षेपः । इति \*प्रतिष्ठा । फलोहलि-सप्तधान्यबलि-  
मोरिण्डकमोदकादिवस्तूनां प्रक्षेपणम् । महाध्वजस्य ऋजुगत्या प्रतिमाया दक्षिणकरे बन्धनम् । प्रवचनमुद्रया सूरिणा  
धर्मदेशना कार्या । संघदानम् । अष्टाद्विकापूजा विषमदिने ३, ५, ७, जिनवर्लि प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय  
शान्तिनाथादिकायोत्सर्गान् कृत्वा महाध्वजस्य छोटनम् । संघादिपूजाकरणं यथाशक्त्या ॥

॥ इति ध्वजारोपणविधिः समाप्तः ॥

ध्वजादंड शिखर अने ध्वजानो मंत्र ।

• ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्यू ह्म्ल्यू ह्म्ल्यू क्लीं ३ ओं क्रौं अरिहंत-शिखर-दंड-ध्वजेपुवासिदेवदेवीनां  
संघस्य च शान्तिं पुष्टिं तुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ध्वजा तथा दंडानुं माप विगेरे ।

- (१) रेखाए देरासर जेटलुं लांबुं होय, तेटलो ध्वजादंड लांबो करवो. घुमटना प्रमाणनो दंड लांबो चाली शके.
- (२) गभारा करतां शिखर वे इंच रेखाए मोटुं होय तेथी ध्वजादंड गभाराना पद करतां वे इंच मोटो करवो.
- (३) मंदिरनी उंचाईना त्रीजा भागे ध्वजादंड लांबो करवो.

★ प्रतिष्ठामन्त्रः—‘ॐ वीरे वीरे जयवीरे’ सात घार ।



- (૪) ધ્વજાદંડ જેટલો લાંબો હોય તેના પહેલા ગજે ૦।। અંગુલ અને વાકીના ગજે ૦।। અંગુલ વ્યાસ લેવો.
- (૫) ધ્વજાદંડની લંબાઈના છઠ્ઠા ભાગે પાટલીની લંબાઈ કરવી.
- (૬) લંબાઈની અડધી પહોળાઈ કરવી, અને પહોળાઈથી અડધી જાડાઈ કરવી.
- (૭) ગાઝા ફકી કરવા, અને બંગડી વેકી રાખવી. આ સર્વ માન મધ્યમ સમજવું. જો શ્રેષ્ઠ માન કરવું હોય તો તે માનનો દશમો ભાગ વધારવાથી થાય, અને દશમો ભાગ ઘટાડવાથી કનિષ્ઠ માન થાય. આ સર્વ માનથી સાલ અલગ જાણવું.
- (૮) કપડાની ધ્વજા દંડ પ્રમાણે લાંબી કરવી, અને પહોળાઈ લંબાઈના આઠમા ભાગે કરવી.
- (૯) પતાકા તથા પતાકડી વિગેરે દેશાચાર પ્રમાણે કરવી. શાસ્ત્રીય રીત નથી.
- (૧૦) ઘુમટના આમલશાઝાની પહોળાઈથી ત્રણ ગણો ઘુમટનો ધ્વજાદંડ લાંબો કરવો.
- (૧૧) વરસગાંઠ વચ્ચે નવી ધ્વજા ઉપર અગર શરૂઆતમાં ધ્વજા ઉપર ચોત્રીસો ચંત્ર જમણી વાજુ લેવો.

ચોત્રીસો ચંત્ર

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ૫  | ૧૬ | ૩  | ૧૦ |
| ૪  | ૯  | ૬  | ૧૫ |
| ૧૪ | ૭  | ૧૨ | ૧  |
| ૧૧ | ૨  | ૧૩ | ૮  |

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ११५ ॥

ध्वजा दंड तथा कलश प्रतिष्ठाना सामाननी यदि ।

औषधिओ, पाघडी, सोनानो कलश, कलश नं. ४, तीर्थजल, गुलाबीखेस, दश दिक्पालनो पाटलो, पोंखणां, कंकु, कपूर, मींदळ, मरडासींग, फुल, पान, सोपारी, चोखा, वासक्षेप, फळ, नैवेद्य, वाकळा शेर १।, जवारा, वसुंधी वस्त्र, आंसळी रुपानी, रु. ३१), पैसा ५१).

रोगने दूर करनार अप्रसिद्ध पण जे कोइ औषध पृथ्वीतलमां मले तेने करियाणा तरीके गणी शकाय छे.

एटला ज माटे परिशिष्ट नं. २ मां करियाणां अनेक प्रकारनां बताववामां आव्यां छे. छतां तेमांथी लाभालाभनी दृष्टि योग्य लागे ते लेवां, बीजां छोडी पण देवां, नवां बीजां पण रोगहर लेवां, एम दरेक जातनी छुट छे.

— अष्टमद्गल श्लोक —

मंगलं श्रीमदर्हन्तो, मंगलं जिनशासनम् । मंगलं सकलः संघो, मंगलं पूजका अमी ॥१॥

स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-पूदितं जिनवरोदयेक्षणात् ।

स्वस्तिकं तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥१॥

अन्तः परमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥२॥

विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानः ।

अतोऽत्र पूर्णं कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥३॥

॥ ११५ ॥

प्रतिष्ठादि  
विधिओ।  
॥ ११६ ॥

जिनेन्द्रपादैः परिपूज्यप्रष्टै-रतिप्रभावैरभि[ति]सन्निकृष्टम् ।

भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र-पुरो लिखेन्मङ्गलसत्प्रयोगम् ॥४॥

त्वत्सेवकानां जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वे निधयः स्फुरन्ति ।

अतश्चतुर्था नवकोणनन्द्या-वर्त्तः सतां वर्तयतां सुखानि ॥५॥

पुण्यं यशः समुदयः प्रभुता महत्त्वं, सौभाग्यधीविनयशर्मनोरथाश्च ।

वर्धन्त एव जिननायक ! ते प्रसादा-त्तद्वर्धमानयुगसंपुटमादधामः ॥६॥

आत्मा लोकविधौ जनोऽपि सकलस्तीव्रं तपो दुश्चरं, दानं ब्रह्म परोपकारकरणं कुर्वन् परिस्फूर्जति ।

सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै तीर्थाधिपस्याग्रतो, निर्मेयः परमार्थवृत्तिविदुरैः संज्ञानिभिर्दर्पणः ॥७॥

त्वद्वध्यपंचशरकेतनभावकलृप्तं, कर्तुं मुधा भुवननाथ ! निजापराधम् ।

सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः-पुरो विलिखितोरुनिजांगयुक्त्या ॥८॥

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाओ ।

दब्बजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥९॥

समाप्तः प्रतिष्ठाकल्पादिः ।



॥ ११६ ॥

